अनुक्रम

"कौवे, जब तुम मुझे मृत और अमृत पानी ला दोगे तभी मैं तुम्हारे बच्चे की जान बख्शूंगा।"

कौवा उड़ गया – वह इसके सिवा और कर भी क्या सकता था? भेड़िया उसके बच्चे को दबोचे रहा। कुछ देर बाद कौवा मृत और अमृत पानी लेकर लौट आया। भूरे भेड़िये ने मृत पानी को इवान के घावों पर छिड़का और वे भर गये। तब उसने उस पर अमृत पानी छिड़का और वह फिर से ज़िन्दा हो गया।

"ओह, मैं तो गहरी नींद सोया रहा हूं!.." शाहज़ादे इवान ने कहा।

"अरे हां, गहरी नींद," भेड़िये ने कहा, "और अगर मैं न आता तो शायद कभी जागने की नौबत ही न आती। तुम्हारे अपने भाई तुम्हें मारकर और तुम्हारी सारी पूंजी लूटकर चले गये हैं। जल्दी से मेरी पीठ पर चढ़ जाओ!"

उन्होंने बहुत तेज़ी से उनका पीछा किया और उन्हें रास्ते में जा पकड़ा। भूरे



भेड़िये ने उनकी बोटी-बोटी नोचकर खेत में फेंक दी।

शाहज़ादे इवान ने भूरे भेड़िये को झुककर प्रणाम किया और सदा के लिए उससे विदा ली।

तब शाहज़ादा इवान सुनहरे अयालवाले घोड़े पर चढ़कर घर की ओर चला। वह अपने पिता के लिए स्वर्ग-पक्षी और अपने लिए प्यारी-सी दुलहन – मोहिनी येलेना साथ लेकर घर पहुंचा।

ज़ार बेरेन्देई बेहद खुश हुआ। उसने अपने बेटे से बहुत-से प्रश्न पूछे। शाहज़ादे इवान ने बताया कि कैसे भूरे भेड़िये ने उसकी सहायता की और किस तरह उसके भाइयों ने उसे सोते हुए मार डाला था और किस तरह भूरे भेड़िये ने उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले हैं।

यह सुनकर पहले तो ज़ार बेरेन्देई को दुख हुआ, मगर शीघ्र ही वह इस दुख को भूल गया। शाहज़ादे इवान ने मोहिनी येलेना से शादी कर ली और वे सदा हंसी-खुशी का जीवन बिताते रहे।



दो इवान

बहुत पुराना क़िस्सा है कि कहीं दो इवान रहते थे, दोनों सगे भाई थे। एक था अमीर इवान और दूसरा ग़रीब इवान। अमीर इवान का घर तो सभी तरह की चीज़ों से भरा-पूरा था, खत्तियां अनाज से भरी हुई थीं, हरे-भरे जंगलों में गउएं चरती थीं, नदी तट पर भेड़ें घूमती थीं, गर्म-गर्म तन्दूर में फूली-फूली रोटियां पकती थी – किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी। लेकिन उसके परिवार में सिर्फ़ दो ही आदमी थे – वह ख़ुद और उसकी बीवी। अमीर इवान के बच्चे नहीं थे।

दूसरी तरफ़ ग़रीब इवान के ढोर-डंगर थे तो बस, दलदल-कीचड़ में मेढक और टोकरी में बिल्ली। मगर बच्चे थे सात। सातों बेंच पर बैठे रहते थे, कूटू का दलिया खाना चाहते थे। मगर घर में न तो दलिया था, न आटा। क़िस्मत का मारा ग़रीब इवान बेचारा क्या करता। वह अपने अमीर भाई के पास गया।

"नमस्ते, भाई!"

"नमस्ते, ग़रीब इवान! किसलिए आये हो? घर में टिककर क्यों नहीं बैठते?"

"भाई, मुझे आटा उधार दे दो। मैं तुम्हें बाद में लौटा दूंगा।"

"अच्छी बात है," अमीर इवान ने जवाब दिया। "यह आटे से भरा हुआ कटोरा

ले जाओ और इसके बदले में तुम आटे की बोरी लौटा देना।"

"यह तुम क्या कह रहे हो, भाई – कटोरे के बदले में बोरी! क्या यह बहुत ज्यादा नहीं?"

"अगर ज्यादा है तो यहां से चलते बनो, कोई दूसरी जगह ढूंढ़ो।"

कोई चारा नहीं था। ग़रीब इवान रो पड़ा, उसने आटे से भरा हुआ कटोरा लिया और घर को चल दिया। वह अपने घर के दरवाज़े तक पहुंचा ही था कि तेज़ हवा चल पड़ी, वह ख़ूब शोर मचाने, बगूले उड़ाने लगी, उसने कटोरे से सारा आटा उड़ा दिया और तल में थोड़ी-सी धूल छोड़कर दूर उड़ गयी।

ग़रीब इवान को बड़ा ग़ुस्सा आया।

"अरी ओ उत्तरी हवा, तूने मेरे बच्चों का दिल दुखाया है, उन्हें भूखा रहने के लिए मजबूर किया है। मैं तुझे पकड़ लूंगा और ऐसी बुरी हरकत करने के लिए तेरी ख़ूब ख़बर लूंगा।"

सो ग़रीब इवान हवा के पीछे-पीछे चल पड़ा। हवा सड़क पर चले तो इवान भी सड़क पर। हवा जंगल में जाये तो इवान भी उसके पीछे-पीछे। दोनों एक बहुत बड़े शाहबलूत के पास जा पहुंचे। हवा उसके कोटर में चली गयी और इवान भी उसमें घुस गया।

हवा ने इवान को देखकर पूछा :

"कहो किसान इवान, क्या मेरे यहां मेहमान आये हो?"

"बात यों है, मामला ऐसे है," इवान ने कहना शुरू किया, "मैं अपने भूखे बच्चों के लिए मुट्ठी भर आटा ला रहा था, लेकिन तू शरारती हवा ज़ोर से चलने लगी शोर मचाने लगी और आटे को उड़ा ले गयी। अब मैं घर क्या लेकर जाऊं?"

"बस, इतनी-सी बात है!" हवा बोली। "दुखी होने की कोई ज़रूरत नहीं। यह लो करामाती मेज़पोश – तुम इससे जो भी मांगोगे, तुम्हें वही मिल जायेगा।"

इवान बहुत ख़ुश हुआ, उसने हवा को प्रणाम किया और भागता हुआ घर पहुंचा।

उसने मेज़पोश को मेज़ पर रखा और बोला –

"करामाती मेजपोश, मुझे खाने-पीने को दो!"

इवान के इतना कहने की देर थी कि मेजपोश पर कचौड़ियां-समोसे, फूली-फूली रोटियां, मांस शोरबा, भुना हुआ गोश्त और मिठाई – सभी कुछ आ गया।

इवान और उसके बच्चों ने भर पेट खाया-पिया और सो गये। सुबह को वे नाश्ता करने बैठे ही थे कि अमीर इवान आ गया।



अमीर इवान ने मेज़ को जैसे ही तरह-तरह की मजेदार चीज़ों से अटा हुआ पाया, वैसे ही ग़ुस्से से उसका चेहरा लाल हो गया।

"क्या बात है भाई, तुम अमीर हो गये हो क्या?"

"अमीर हूं या नहीं, लेकिन पेट भरकर खा सकता हूं और तुम्हें भी खिला सकता हूं। मैं आटे की बोरी देने का तुम्हारा क़र्ज़दार हूं, सो अभी दे देता हूं। करामाती मेज़पोश, इसे आटे की बोरी दे दो!"

इतना कहते ही आटे की बोरी मेज़ पर आ गयी।

अमीर इवान ने आटे की बोरी ले ली, मुंह से एक भी शब्द नहीं कहा और चला गया।

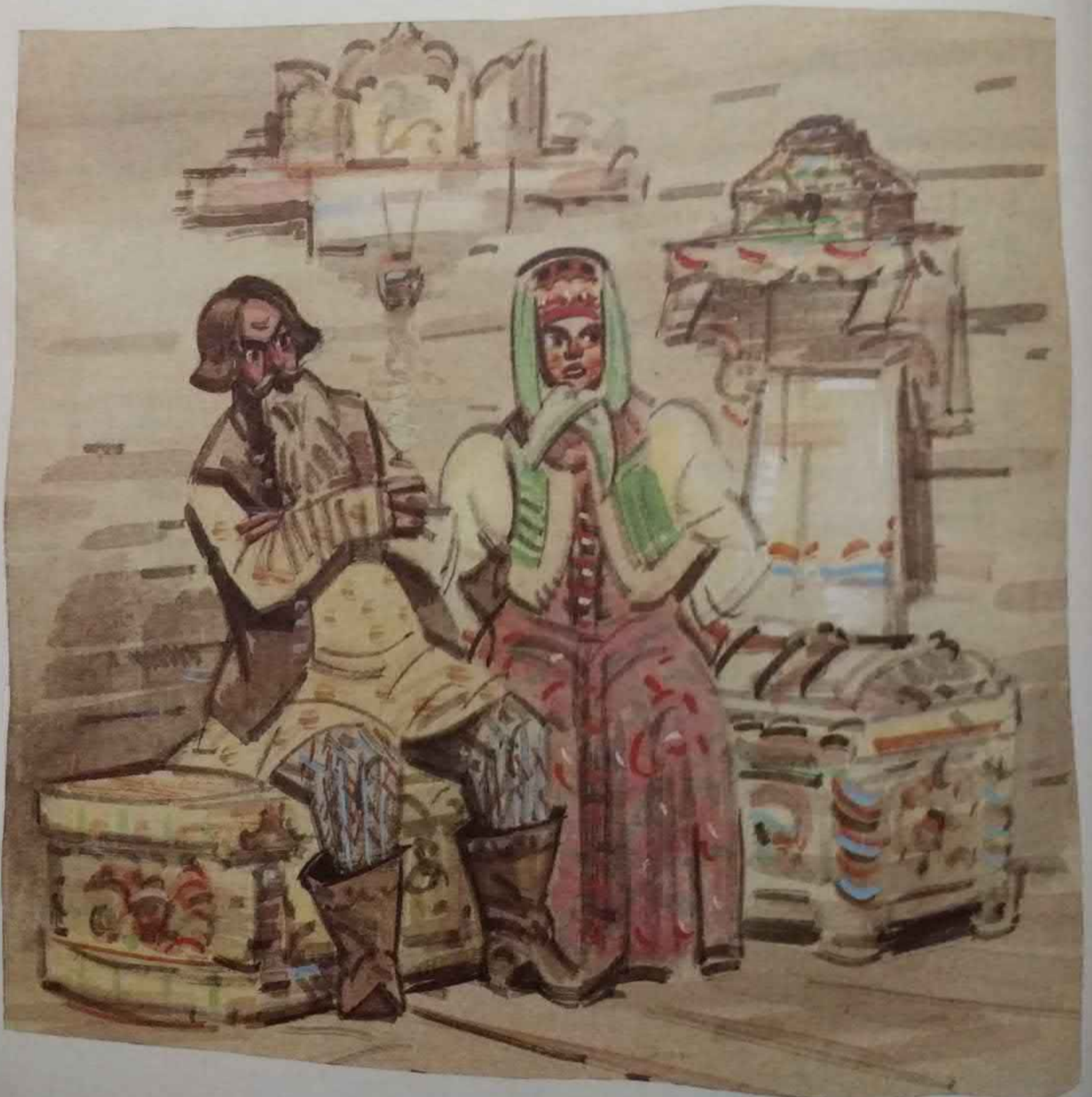
शाम होने पर अमीर इवान फिर से अपने भाई के पास भागा आया।

"मेरे प्यारे भाई, मुझे मुसीबत से बचाओ, मेरी मदद करो! धनी गांव से मेहमान आ गये हैं, मगर मेरे यहां चूल्हा गर्म नहीं है, रोटी पकी हुई नहीं है, मेहमानों की खातिरदारी के लिए कुछ नहीं है। भैया, एक-दो घण्टे के लिए अपना मेज़पोश दे दो!"

ग़रीब इवान ने उसे अपना मेज़पोश दे दिया।

अमीर इवान ने मेहमानों को खिलाया-पिलाया, विदा किया, करामाती मेज़पोश को सन्दूक़ में बन्द कर दिया और ग़रीब इवान को बिल्कुल वैसा ही, लेकिन साधारण मेज़पोश दे आया।

"शुक्रिया भाई!" उसने ग़रीब इवान से कहा। "ख़ूब अच्छी तरह से खाया-पिया हमने।"



ग़रीब इवान अपने बच्चों के साथ खाने के लिए बैठा। उसने मेज़पोश बिछाकर कहा –

"करामाती मेज़पोश, खाना दो!"

सफ़ेद मेज़पोश बिछा हुआ था, मगर भोजन का नाम-निशान नहीं था।

ग़रीब इवान अमीर इवान के पास भागा गया।

"मेरे भाई, तुमने मेरे मेज़पोश के साथ क्या कर दिया?"

"मैं क्या जानूं, मुझे क्या मालूम! मैंने तो जैसा लिया था, वैसा ही लौटा दिया।"

ग़रीब इवान रो पड़ा, घर चला आया। एक दिन गुज़रा, दूसरा दिन बीता, बच्चे रोयें-धोयें, खाने को मांगें। लेकिन घर में न आटा, न दाना-दलिया। कोई चारा नहीं, ग़रीब इवान अमीर इवान के पास गया।

"नमस्ते, भाई!"

"नमस्ते, ग़रीब इवान! किसलिए आये हो, टिककर घर में क्यों नहीं बैठते?"

"बच्चे रोते हैं, खाने को मांगते हैं। भैया मेरे, मुझे कुछ आटा या दलिया या रोटी दे दो।"

"मेरे पास तुम्हारे लिए न आटा है, न दलिया है और न रोटी है। अगर चाहते हो तो तहख़ाने में से मीठी, जेली की प्लेट ले जाओ।"

इवान जेली की प्लेट लेकर घर को चल दिया। वह चला जा रहा था, सूरज चमक रहा था, धूप तेज़ हो रही थी, जेली को गर्मा रही थी। जेली पिघलने लगी, तश्तरी से नीचे बहने लगी और सारी नीचे गिर गयी। सड़क पर उसका डबरा ही बनकर रह गया। ग़रीब इवान को बड़ा गुस्सा आया –

"अरे ओ मूर्ख सूरज! तेरे लिए यह खिलवाड़ था और मेरे बच्चों के लिए



मुसीबत। ढूंढ़ लूंगा मैं तुझे और चखाऊंगा इस शरारत का मजा!"

और इवान चल दिया सूरज की खोज में। वह चलता गया, चलता गया और सूरज भी आगे बढ़ता गया। सिर्फ़ शाम होने पर ही सूरज पर्वत के पीछे जाकर छिपा। इवान ने उसे वहां ही जा पकड़ा।

सूरज ने इवान को देखा और पूछा –

"अरे इवान, क्या मेरे यहां मेहमान आये हो?"

"बात यों है, मामला ऐसे है," इवान ने कहना शुरू किया, "कि मैं अपने भूखे बच्चों के लिए जेली लिये हुए घर जा रहा था। लेकिन तुझ बुद्धू सूरज ने धूप तेज़ करनी शुरू की, जेली के साथ खिलवाड़ शुरू कर दिया, वह पिघलने लगी और रास्ते में गिर गयी। मैं अब क्या लेकर घर जाऊं?"

"ख़ैर, कोई बात नहीं," सूरज बोला, "मैंने ही तुम्हारा दिल दुखाया है, मैं ही तुम्हारी मदद करूंगा। मैं तुम्हें अपने रेवड़ में से एक बकरी दूंगा। तुम उसे शाहबलूत के फल खिलाना और वह तुम्हें दूध की जगह सोना देगी।"

इवान ने सूरज को प्रणाम किया और बकरी को घर ले आया। उसने उसे शाहबलूत के फल खिलाये और दुहने लगा। दूध की जगह बकरी से सोने की धारें बहने लगीं। इवान मज़े से रहने लगा, बच्चों को ख़ूब खिलाने-पिलाने लगा।

अमीर इवान को बकरी के बारे में ख़बर मिली और वह भागा हुआ भाई के पास आया।

"नमस्ते, भाई!"

"नमस्ते, अमीर इवान!"

"मेरे प्यारे भाई, मेरी मदद करो, एक घण्टे के लिए अपनी बकरी दे दो। मुझे अपना क़र्ज़ चुकाना है और मेरे पास पैसे नहीं हैं।"

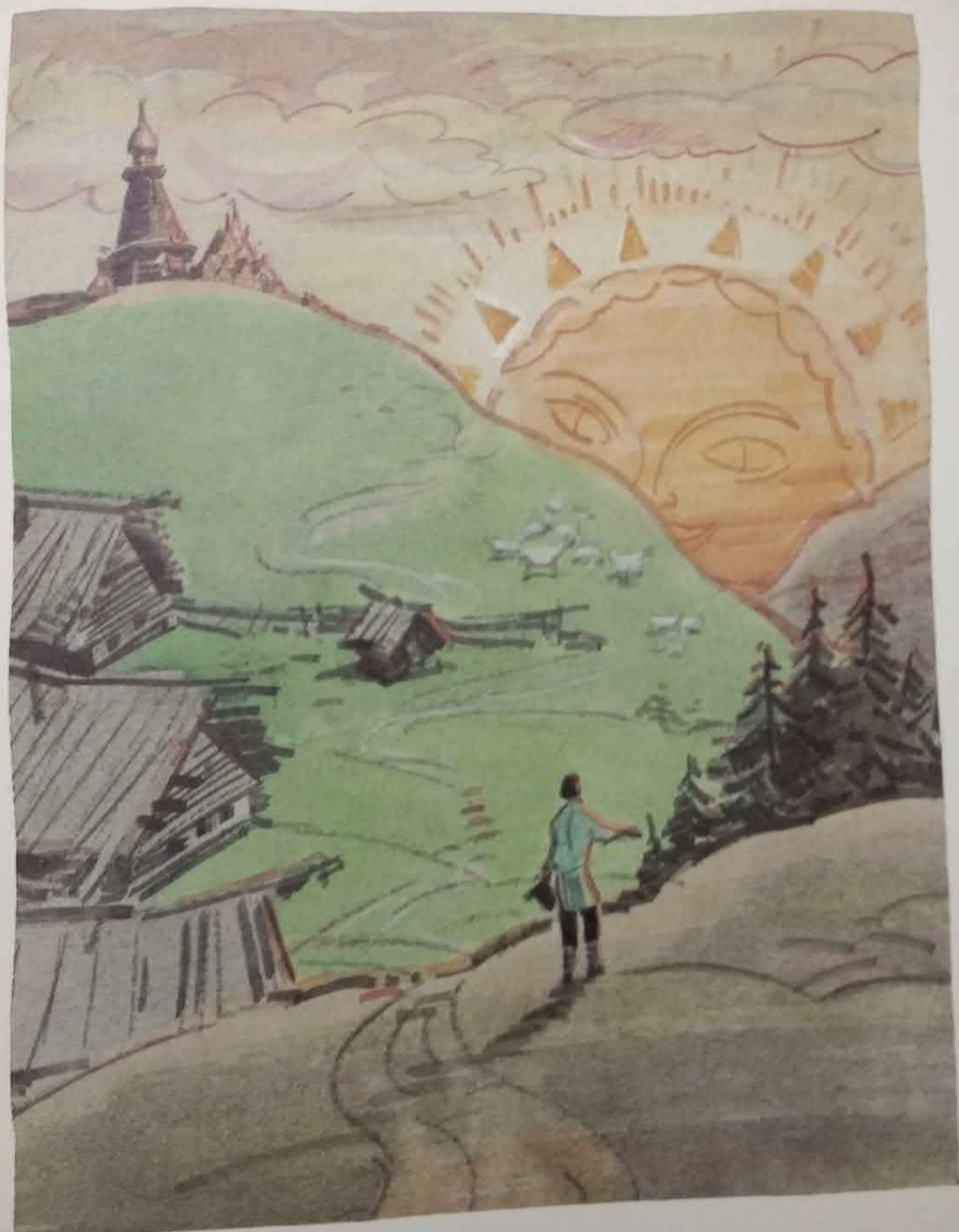
"ले जाओ, लेकिन धोखा नहीं देना।"

अमीर इवान बकरी को ले गया, उससे सोना दुह लिया, उसे कोठरी में बन्द किया और ग़रीब इवान को मामूली बकरी देते हुए कहा –

"शुक्रिया भाई, मुसीबत में मेरी मदद कर दी।"

ग़रीब इवान ने बकरी को शाहबलूत के फल खिलाये और उसे दुहने लगा... बकरी के थनों से दूध निकलता था, खुरों तक बहता था, मगर सोने का नाम-निशान नहीं था।

ग़रीब इवान अमीर इवान के पास भागा गया, मगर वह बोला –



"मैं क्या जानूं, मुझे क्या मालूम। मैं जो बकरी लाया था, मैंने वही लौटा दी।"

ग़रीब इवान रोता हुआ घर वापस चला गया। दिन बीते, हफ़्ते गुज़र गये, बच्चे रोते थे—कुछ खाना चाहते हैं। खूब ज़ोर का जाड़ा आ गया, लेकिन ग़रीब इवान के घर में न तो आटा था, न दलिया। क्या करता बेचारा ग़रीब इवान, अपने अमीर भाई के पास गया।

"बच्चे रोते हैं, खाने को मांगते हैं। भाई, मुट्ठी भर आटा दे दो!"

"तुम्हें न तो आटा मिलेगा न दलिया। अगर चाहते हो तो कोठरी में पत्तागोभी का कल का बचा हुआ जो शोरबा रखा है, वह ले जाओ।"

ग़रीब इवान शोरबे से भरा हुआ कटोरा लेकर घर को चल दिया। वह चला जा रहा था, बर्फ़ीली आंधी शोर मचा रही थी, पाला काट रहा था और सब कुछ जमता जा रहा था। तुषार शोरबे के साथ खिलवाड़ करने लगा, वह उसे जमाता था, उस पर हिम बुरकाता था। वह यह खिलवाड़ करता रहा, करता रहा और आखिर शोरबे को नीचे तक जमा दिया। कटोरे में बर्फ़ का काला डला पड़ा रह गया, मगर खाने को कुछ नहीं था।

ग़रीब इवान को बहुत गुस्सा आया—

"अरे ओ तुषार, ओ लाल-लाल नाकवाले! तुम्हारे लिए खिलवाड़ और मेरे बच्चों के लिए मुसीबत का पहाड़। मैं तुम्हें ढूंढ लूंगा और ऐसी शरारत का मज़ा चखाऊंगा।"

और चल दिया ग़रीब इवान पाले की खोज में। पाला मैदान में तो इवान भी उसके पीछे मैदान में। पाला जंगल में तो इवान भी उसके पीछे जंगल में। पाला बर्फ़ के एक बहुत बड़े ढेर के नीचे जा लेटा और इवान भी वहीं पहुंच गया।

पाले को हैरानी हुई—

"इवान तुम क्या मेरे यहां मेहमान आये हो?"

"बात यह है, मामला यों है," इवान ने कहना शुरू किया। "मैं अपने बच्चों के लिए कल का बचा हुआ शोरबा घर ले जा रहा था, तुमने उसके साथ खिलवाड़ करना शुरू कर दिया और उसे जमा दिया। अब मैं क्या लेकर घर जाऊं? करामाती मेज़पोश और सोना देनेवाली बकरी तो भाई ने छीन ली और तुमने शोरबा बिगाड़ दिया।"

"बस, इतनी ही बात है!" पाले ने जवाब दिया। "लो यह थैला – मदद करनेवाला। तुम बस इतना कहना: 'थैले में से दो सोटे निकलें!' – तो दो सोटे निकल आयेंगे। जब तुम कहोगे: 'दो सोटें, थैले में चले जायें!' तो दोनों सोटे थैले में चले जायेंगे।"

इवान ने प्रणाम किया और घर चल दिया। घर पहुंचकर उसने थैला निकाला और कहा –

"थैले में से दो सोटे निकल आयें!"

बस क्या था – सनोबर के दो सोटे थैले में से निकले, कूदकर बाहर आये, इवान की पिटाई करते हुए कहने लगे –

"ग़रीब कभी अमीर का यक़ीन नहीं करो! इवान, अपने अमीर भाई पर भरोसा नहीं करो, अक़्ल सीखो, यह बात गांठ बांधो।"

इवान ने किसी तरह अपनी जान बचाई और पुकारकर कहा: "दो सोटे थैले में चले जायें!"

दोनों सोटे झटपट थैले में चले गये।

शाम होने पर अमीर इवान ग़रीब के पास भागा आया।

"कहां गये थे तुम इवान? क्या लाये हो, भैया?"

"तुषार के पास गया था, भैया। उससे बहुत बढ़िया थैला लाया हूं। बस इतना कहना ही काफ़ी है: "थैले में से दो सोटे निकलें!" दोनों कूदकर बाहर आ जायेंगे और जो भी कहोगे, वही कर देंगे।"

"अरे, मेरे ग़रीब इवान भाई, एक दिन के लिए अपना थैला मुझे दे दो। मेरे घर की छत कुछ टूट गयी है और उसकी मरम्मत करनेवाला कोई नहीं।"

"ले जाओ, अमीर इवान!"

अमीर इवान थैले को घर ले आया और उसने दरवाज़ा बन्द करके कहा –

"थेले में से दो सोटे निकलें!"

सनोबर के दो सोटे थैले में से उछल-कूद कर बाहर आये और अमीर इवान की धुनाई करते हुए कहने लगे –

"अमीर, तुम ग़रीब का दिल नहीं दुखाओ! अमीर इवान, तुम करामाती मेज़पोश और बकरी ग़रीब इवान को लौटा दो।"

अमीर इवान भागता हुआ ग़रीब इवान के पास पहुंचा और सोटे भी उसके पीछे-पीछे।

"मेरे भाई, मेरी जान बचाओ! मैं करामाती मेज़पोश और बकरी भी तुम्हें लौटा दूंगा।"

"दो सोटे थैले में चले जायें!" ग़रीब इवान चिल्लाया।

सोटे थैले में चले गये। अमीर इवान किसी तरह से जीता-जागता घर लौटा और उसने ग़रीब इवान को करामाती मेज़पोश तथा सोना देनेवाली बकरी लौटा दी।

ग़रीब इवान अपने बच्चों के साथ रहने लगा, सुख-सौभाग्य के दिन बिताने लगा। अब उसके सात बच्चे हैं, बेंच पर बैठे रहते हैं और बेल-बूटोंवाले रंगीन चमचों से घी-मक्खनवाला कूटू का दलिया खाते हैं।



फ़ीनिस्त – सुनहरा बाज़

कहते हैं कि किसी ज़माने में, कहीं एक किसान रहता था। उसकी बीवी मर गयी और तीन बेटियां छोड़ गयी। बूढ़ा एक नौकरानी रखना चाहता था ताकि घर की देखभाल हो सके। मगर उसकी सबसे छोटी बेटी मार्युश्का ने कहा।

"पिता जी, नौकरानी मत रखिये। मैं अकेली ही घर की देखभाल करूंगी।"

इस तरह मार्युश्का घर की देखभाल करने लगी। उसे बड़ी सफलता मिली। कोई ऐसा काम नहीं था जो वह न कर सकती हो। और वह जो कुछ भी करती, बहुत अच्छी तरह करती। उसका पिता उसे बेहद प्यार करता और ऐसी समझदार और मेहनती बेटी पाने के लिए अपना भाग्य सराहता। मार्युश्का थी भी बड़ी खूबसूरत। किन्तु उसकी दोनों बहनें बदसूरत थीं। वे ईर्षालु और लालची थीं, हमेशा बनाव-शृंगार में लगी रहतीं और बढ़िया से बढ़िया कपड़े पहनतीं। वे नये-नये गाउनों से अपने को सजाती और जैसी थीं, उससे कहीं अधिक सुन्दर दिखाई देने की कोशिश में सारा-सारा दिन बरबाद कर देतीं। मगर जल्द ही सभी चीज़ें उनके मन से उतर जातीं – क्या गाउन, क्या शाल, और क्या ऊंची एड़ी के जूते।

एक दिन बूढ़ा बाज़ार के लिए रवाना होने लगा तो उसने अपनी बेटियों से पूछा :

"मैं तुम्हारे लिए क्या ख़रीदकर लाऊं, प्यारी बेटियो? तुम्हें कौन-सी चीज़ पाकर ख़ुशी होगी?"

"हमारे लिए दो बढ़िया रूमाल ख़रीद लाइये, पिता जी," बड़ी बेटियों ने कहा, "मगर यह ख़्याल रखिये कि उन पर बड़े-बड़े सुनहरे फूल बने हुए हों।"

किन्तु छोटे बेटी मार्युश्का चुपचाप खड़ी रही। तब पिता ने उससे पूछा:

"तुम्हें क्या चाहिए, मेरी बिटिया?"

"प्यारे पिता जी, मेरे लिए फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ का एक पंख खरीद लाइये।"

कुछ अरसे बाद बूढ़ा बाप बड़ी बेटियों के रूमाल ख़रीदकर लौट आया, मगर पंख उसे कहीं नहीं मिला।

कुछ समय बाद वह फिर बाज़ार जाने के लिए तैयार हुआ।

"अच्छा, बेटियो, अपनी-अपनी पसन्द की चीज़ें बताओ," उसने कहा।

दोनों बड़ी बेटियां बहुत चाव से बोलीं:

"हम दोनों के लिए चांदी के नाले लगे हुए गम बूटों के जोड़े लेते आइये।"

मगर मार्युश्का ने फिर से वही बात दोहरायी:

"प्यारे पिता जी, मेरे लिए तो फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ का पंख लाइये।"

पिता दिन भर बाज़ार में घूमता रहा। बूट तो उसने खरीद लिये, मगर पंख कहीं नहीं मिला। वह पंख के बिना ही लौट आया।

इसी तरह वक़्त बीतता गया। वह तीसरी बार बाज़ार के लिए चला तो उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने उससे कहा:

"हम दोनों के लिए एक-एक नया गाउन खरीद लाइये।"

पर मार्युश्का ने तो फिर से वही बात दोहरायी:

"प्यारे पिता जी, मुझे फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ का पंख ला दीजिये।"

पिता सुबह से शाम तक बाज़ार में घूमता रहा, पर पंख न मिला। वह अपनी गाड़ी में नगर से बाहर आ गया। रास्ते में अचानक ही एक बूढ़े आदमी से उसकी भेंट हुई।

"नमस्कार, बड़े मियां!"

"नमस्कार, भाई! किधर जा रहे हो?"

"वापस गांव को। मैं बड़ी परेशानी में हूं। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं क्या करूं? मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझे फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ का एक पंख ख़रीदकर लाने को कहा था, मगर मुझे वह कहीं नहीं मिला।"

"तुम्हें जिस पंख की ज़रूरत है, वह मेरे पास है, मगर उस पर जादू-टोना किया हुआ है। चूंकि तुम भले आदमी हो, इसलिए मैं वह तुम्हें दे देता हूं।"

बूढ़े ने पंख निकाला और इस भले आदमी को दे दिया। वह पंख बिल्कुल साधारण लगता था और किसान अपने घर की ओर गाड़ी हांकता हुआ मन में सोचता जाता था: "मार्युश्का क्या करेगी इसका?"

थोड़ी देर में बूढ़ा किसान घर पहुंचा और उसने वे उपहार अपनी बेटियों को दे दिये। बड़ी लड़कियां अपने नये-नये गाउन पहनकर खुश हुईं और मार्युश्का का मजाक़ उड़ाती रहीं:

"तू पहले भी मूर्ख थी और अब भी मूर्ख ही है! इस पंख को अपने बालों में खोंस ले – तू बहुत सुन्दर लगने लगेगी!"

किन्तु मार्युश्का ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह केवल उनसे दूर रही। रात को जब सभी लोग सो गये तो उसने पंख फ़र्श पर रखकर धीरे से कहा:

"मेरे प्यारे दूल्हे, फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़, मेरे पास आओ!"

तभी एक बहुत सुन्दर युवक उसके सामने आकर खड़ा हो गया। जब सुबह होनेवाली थी तो वह फ़र्श से टकराकर बाज़ बन गया। मार्युश्का ने खिड़की खोल दी और बाज़ नीले आकाश में ऊंचा उड़ गया।

इस तरह तीन रातों तक वह उसका स्वागत करती रही। दिन के समय वह नीले आकाश में बाज़ बना उड़ता रहता और रात होने पर मार्युश्का के पास लौट आता और सुन्दर युवक बन जाता।



किन्तु चौथे दिन दुष्ट बहनों ने इन्हें देख लिया और जो कुछ देखा था, उसे अपने पिता से कह सुनाया।

"प्यारी बेटियो," बाप ने कहा, "बेहतर यही है कि तुम अपने काम से काम रखा करो!"

"खैर," बहनों ने सोचा, "हम देखेंगी कि इसके बाद क्या होता है!"

उन्होंने खिड़की के चौखटे में तेज़ छुरियों की एक क़तार लगा दी और निकट ही छिपकर तमाशा देखने लगीं।

थोड़ी देर बाद सुनहरा बाज़ प्रगट हुआ। वह खिड़की के पास आया, पर मार्युश्का के कमरे में प्रवेश न कर सका। वह वहीं फड़फड़ाता और टकराता रहा, यहां तक कि उसकी सारी छाती छुरियों से ज़ख्मी हो गयी। इधर मार्युश्का मीठी नींद सो रही थी और वह कुछ भी न जान सकी। अन्त में बाज़ ने कहा:

"जिसे मेरी चाह हो, वह मुझे पा सकता है, पर इसके लिए काफ़ी क़ीमत चुकानी होगी। तुम मुझे तब तक नहीं पा सकोगी जब तक कि तुम्हारे द्वारा पहने जाकर लोहे के बूटों के तीन जोड़े न टूट जायें, लोहे की तीन टोपियां न फट जायें और लोहे की तीन छड़ियां इस्तेमाल होने से न टूट जायें।"

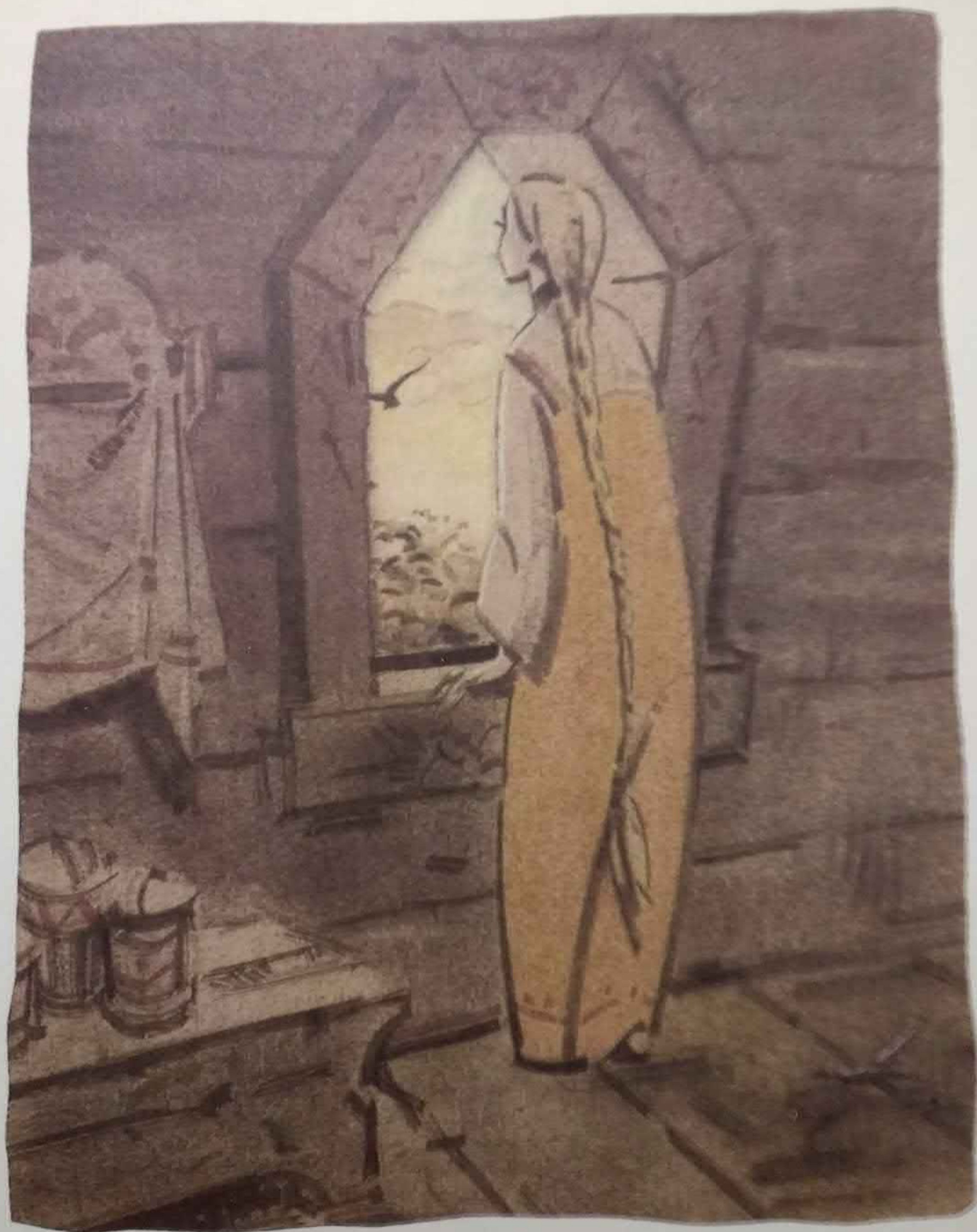
मार्युश्का ने यह सुना तो बिस्तर से कूदकर खिड़की की ओर लपकी। पर बाज़ तो तब तक जा चुका था। केवल उसके खून के निशान बाक़ी रह गये थे। मार्युश्का फूट-फूटकर रो पड़ी। उसकी आंसू की बूंदों ने लाल रक्त को धो डाला। रो-रोकर वह पहले से भी अधिक सुन्दर दिखाई देने लगी।

तब वह बाप के पास गयी और बोली:

"मुझे बुरा-भला मत कहिये पिता जी! मुझे घर छोड़ना ही होगा। मेरी मंज़िल दूर है, बहुत दूर। मुझे जाने की इजाज़त दें। अगर मैं ज़िन्दा रही तो आपसे अवश्य मिलूंगी। अगर मर गयी तो यह समझ लीजिये कि ऐसा होना ही था।"

अपनी प्यारी बेटी से जुदा होने की बात सोचकर बाप का कलेजा फटने लगा। मगर अन्त में उसने उसे इजाज़त दे ही दी।

इस तरह मार्युश्का चल दी। उसने लोहे के बूटों के तीन जोड़े, लोहे की तीन छड़ियां और तीन टोपियां बनवा लीं। तब वह अपनी कठिन यात्रा पर अपने प्यारे फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ को पाने के लिए निकल पड़ी। वह खुले मैदानों में से गुज़री, उसने घने जंगल लांघे और ऊंचे पर्वत पार किये। नन्हे-नन्हे पक्षियों ने अपने मधुर गीतों से उसका मन बहलाया, निर्झरों ने अपने शीतल जल से उसका गोरा मुख धोया और



घने जंगलों ने उसका स्वागत किया। मार्युश्का को कोई हानि नहीं पहुंचा सकता था क्योंकि तमाम जंगली जानवर – भूरे भेड़िये, लाल लोमड़ियां और भालू – सभी उसकी रक्षा के लिए दौड़ते हुए आते थे। अन्त में लोहे के जूतों का एक जोड़ा और एक छड़ी टूटी और एक टोपी फटी।

एक दिन वह एक जंगल के खुले मैदान में पहुंची और वहां उसने मुर्ग़ी के पंजों पर एक झोंपड़ी खड़ी देखी जो लगातार घूमती जा रही थी।

"झोंपड़ी, झोंपड़ी," मार्युश्का ने कहा, "अपनी पीठ जंगल की ओर कर ले और मुंह मेरी ओर। मुझे भीतर आने दे ताकि मैं वहां बैठकर रोटी खा लूं।"

झोंपड़ी ने अपनी पीठ जंगल की ओर और मुंह मार्युश्का की ओर कर लिया। वह भीतर चली गयी। वहां उसने देखा कि बुढ़िया ढड्ढो, बाबा-यगा, जिसकी नाक ऐसी थी जैसी पेड़ की गांठ, एक झाड़ू और मूसल लिये हुए बैठी है।

मार्युश्का को देखते ही बाबा-यगा चिल्लायी :

"ओह! आदम बू, आदम बू! सुन्दरी, किधर से आयी है? किधर जायेगी?"

"दादी अम्मां, मैं फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ की तलाश में भटक रही हूं।"

"ओ, लड़की! वह तो बहुत दूर है। तुम्हें नौ-तिया-सत्ताईस देशों और दस-तिया-तीस राज्यों के पार जाना होगा। एक दुष्ट जादूगरनी ने, जो वहां की महारानी है, उसे जादू की शराब पिलाकर अपने वश में कर लिया है और ज़बरदस्ती उससे शादी कर ली है। पर मैं तुम्हारी मदद करूंगी। यह सोने का अण्डा और चांदी की तश्तरी ले लो। दस-तिया-तीस राज्य में पहुंचकर महारानी की नौकरानी हो जाना। दिन भर का काम खत्म होने पर चांदी की इस तश्तरी में सोने का अण्डा रख देना। यह अपने आप घूमने लगेगा। अगर महारानी इसे ख़रीदना चाहे तो बेचना नहीं। उससे यह मांग करना कि वह तुम्हें फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ को देख लेने दे।"

मार्युश्का ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और आगे चल दी। जंगल बहुत घना और अन्धकारपूर्ण हो गया। वह इतनी अधिक डर गयी कि उसके पांव मन-मन के भारी हो गये। तभी अचानक एक बिल्ला आया। वह उछलकर मार्युश्का के पास पहुंचा और म्याऊं-म्याऊं की आवाज़ में बोला :

"मार्युश्का, डरो नहीं। आगे और भी अधिक बुरी हालत होगी, मगर तुम आगे बढ़ती जाना और मुड़कर नहीं देखना।"

बिल्ला उसके पैरों से अपनी पीठ रगड़ता हुआ वहां से ग़ायब हो गया। मार्युश्का आगे बढ़ी। जैसे-जैसे वह जंगल में आगे बढ़ती गयी, वैसे-वैसे जंगल अधिक भयानक

होता गया। मंजिल-दर-मंजिल वह चलती गयी, चलती गयी और तब लोहे के जूतों का दूसरा जोड़ा और छड़ी टूट गयी तथा टोपी फट गयी। शीघ्र ही वह मुर्गी के पंजों पर खड़ी हुई एक दूसरी झोंपड़ी के पास पहुंची। इसके चारों तरफ़ मजबूत बाड़ बनी हुई थी और खूंटों पर चमकदार खोपड़ियां टंगी हुई थीं।

मार्युश्का ने कहा:

"झोंपड़ी, झोंपड़ी, अपनी पीठ जंगल की ओर कर ले और मुंह मेरी ओर। मुझे भीतर आने दे ताकि मैं वहां बैठकर रोटी खा लूं।"

झोंपड़ी ने वैसा ही किया। उसने अपनी पीठ जंगल की ओर और मुंह मार्युश्का की ओर कर लिया। मार्युश्का भीतर चली गयी। वहां उसने देखा कि बुढ़िया ढड्ढो, बाबा-यगा, जिसकी नाक ऐसी थी जैसी पेड़ की गांठ, एक झाड़ू और एक मूसल लिये हुए बैठी है।

बाबा-यगा ने मार्युश्का को देखा तो चिल्लायी:

"ओह! आदम बू, आदम बू! सुन्दरी, किधर से आयी है? किधर जायेगी?"

"मैं फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ की तलाश में भटक रही हूं, दादी अम्मां।"

"तुम मेरी बहन से मिल आयी हो क्या?"

"हां, दादी अम्मां, मिल आयी हूं।"

"यह अच्छी बात है, सुन्दरी, तब मैं तुम्हारी मदद करूंगी। लो यह चांदी का चौखटा और सोने की सूई। यह सूई अपने आप चलती है और लाल मखमल पर चांदी और सोने की कढ़ाई करती है। अगर महारानी इसे खरीदना चाहे तो बेचना नहीं – उससे कहना कि वह तुम्हें फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ को देख लेने दे।"

मार्युश्का ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और आगे चल दी। जंगल में तरह-तरह की धड़ाम-धड़ाम, धम-धम की आवाज़ें तथा सीटियां सुनाई देने लगीं और लटकती हुई खोपड़ियों से अद्भुत-सी रोशनी निकलने लगी। वातावरण बेहद भयानक हो गया, किन्तु तभी एक कुत्ता उछलकर मार्युश्का के सामने आ खड़ा हुआ।

"भौं, भौं, मार्युश्का, डरो नहीं प्यारी, अभी और भी भयानक दृश्य देखने को मिलेंगे। मगर तुम चलती जाना और पीछे मुड़कर नहीं देखना।"

इतना कहकर वह ग़ायब हो गया। मार्युश्का आगे ही आगे चलती गयी। जंगल और भी अधिक से अधिक अन्धकारपूर्ण होता गया। उसके घुटने छिल-छिल जाते थे और आस्तीनें झाड़ियों में फंस-फंस जाती थीं... मगर मार्युश्का आगे ही आगे बढ़ती गयी और उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

वह बहुत चली या कम, दूर तक चली या नज़दीक तक, यह कहना मुश्किल है। लेकिन चलते-चलते लोहे के जूतों का तीसरा जोड़ा और तीसरी छड़ी टूट गयी तथा लोहे की टोपी फट गयी। तब वह एक जंगल के बीच खुले मैदान में पहुंची। वहां उसने मुर्गी के पंजों पर खड़ी हुई एक झोंपड़ी देखी जिसके चारों ओर ऊंचा घेरा था और खूंटों पर घोड़ों की चमकती हुई खोपड़ियां टंगी थीं।

तब मार्युश्का ने कहा :

"झोंपड़ी, झोंपड़ी, अपनी पीठ जंगल की ओर कर ले और मुंह मेरी ओर।"

झोंपड़ी ने अपनी पीठ जंगल की ओर और मुंह मार्युश्का की ओर कर लिया। वह भीतर गयी। वहां उसने देखा कि बुढ़िया ढड्ढो, बाबा-यगा, जिसकी नाक ऐसी थी जैसी पेड़ की गांठ, एक झाड़ू और मूसल लिये हुए बैठी है।



बाबा-यगा ने मार्युश्का को देखा तो चिल्लायी :

"ओह! आदम बू, आदम बू! सुन्दरी, किधर से आयी है? किधर जायेगी?"

"दादी अम्मां, मैं फ़ीनिस्त–सुनहरे बाज की तलाश में भटक रही हूं।"

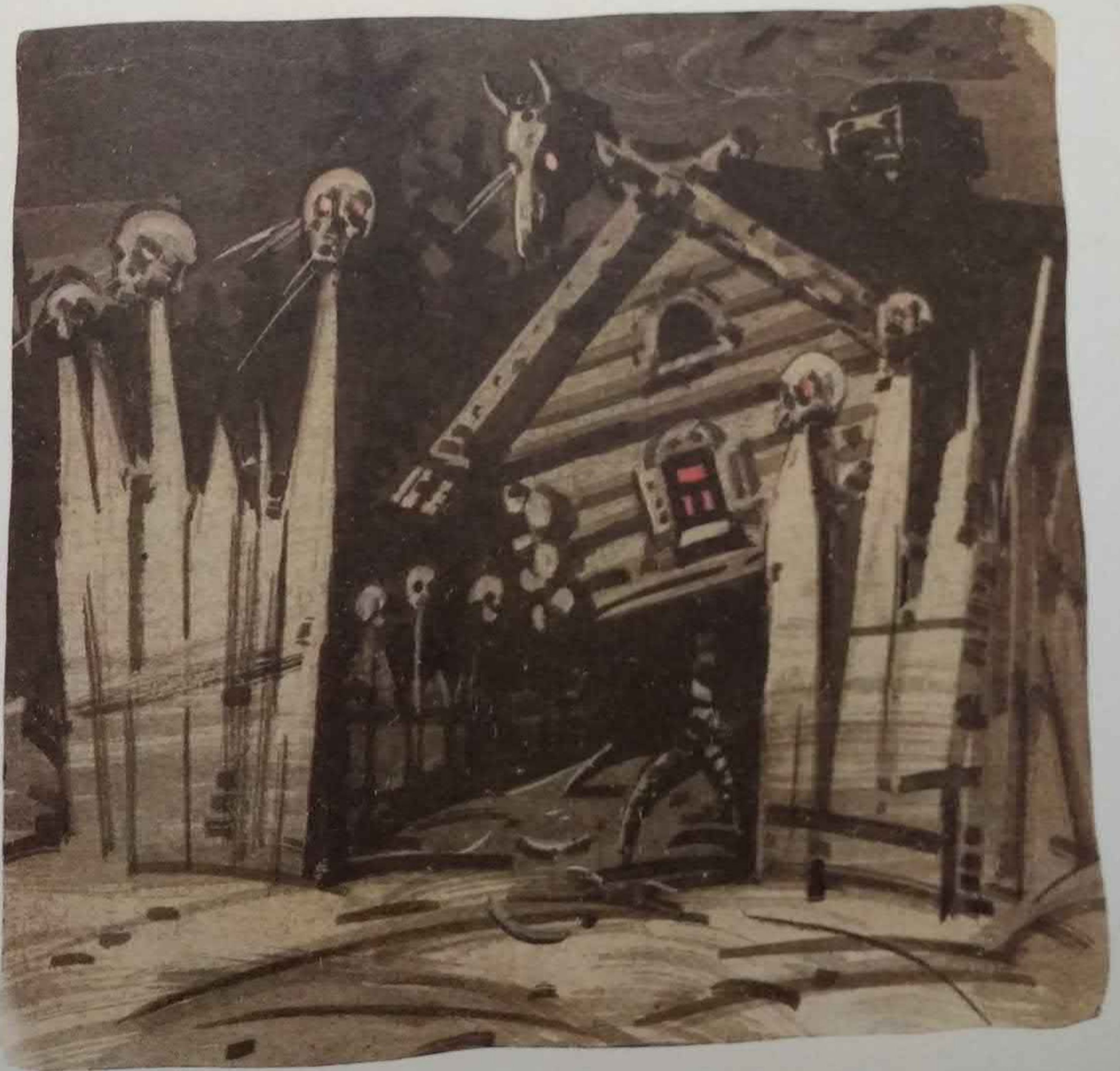
"उसे ढूंढ़ना कुछ आसान काम नहीं है, सुन्दरी! पर मैं तेरी मदद करूंगी। लो यह चांदी की चर्खी और सोने की तकली। तकली को हाथों में थामने पर यह अपने आप कातना शुरू कर देगी और इसमें से जो धागा निकलेगा वह सुनहरा होगा।"

"धन्यवाद, दादी अम्मां।"

"अच्छा, अच्छा, धन्यवाद बाद में देना और अब मेरी एक और बात सुनो।

अगर महारानी सोने की तकली खरीदना चाहे तो बेचना नहीं, बल्कि उससे कहना कि वह तुम्हें फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ को देख लेने दे।"

मार्युश्का ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और अपनी राह चल दी। जंगल सांय-सांय और भांय-भांय कर रहा था तथा ज़ोर से सीटियां बज रही थीं। सभी ओर उल्लू चक्कर काट रहे थे। चूहे अपने बिलों से बाहर निकलकर मार्युश्का की ओर दौड़-दौड़कर आ रहे थे। तब अचानक एक भूरा भेड़िया सामने से दौड़ता हुआ आया और कहने लगा :



"डरो नहीं मार्युश्का, मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। बस, पीछे मुड़कर नहीं देखना।"

वह भेड़िये की पीठ पर सवार हो गयी और आन की आन में कहां की कहां जा पहुंची। वे दूर-दूर तक फैले हुए मैदानों और मखमल जैसे चरागाहों में से गुज़रे। उन्होंने मलाई के किनारोंवाले शहद के दरिया पार किये और ऐसे ऊंचे पहाड़ों पर चढ़े जो बादलों को छू रहे थे। भेड़िये पर सवार मार्युश्का जल्दी से आगे ही आगे बढ़ती गयी, यहां तक कि वह एक बिल्लौरी महल के पास पहुंच गयी जिसके ओसारे पर नक़्क़ाशी की हुई थी और जिसकी खिड़कियां बेलबूटेदार थीं। उस समय महारानी खुद खिड़की में से झांक रही थी।

"लो," भेड़िये ने कहा, "हम पहुंच गये हैं, मार्युश्का। मेरी पीठ से नीचे उतर जाओ और महल में जाकर नौकरानी हो जाओ।"

मार्युश्का नीचे उतरी। उसने अपनी छोटी-सी गठरी उठाकर भेड़िये को धन्यवाद दिया। तब उसने महारानी के पास जाकर प्रणाम किया।

"माफ़ कीजियेगा," उसने कहा, "मैं आपका नाम नहीं जानती। आपको कोई नौकरानी तो नहीं चाहिए?"

"हां, चाहिए तो," महारानी ने कहा, "मैं बहुत अरसे से एक नौकरानी की खोज कर रही हूं। पर मुझे ऐसी नौकरानी की ज़रूरत है जो कातना और बुनना जानती हो और कढ़ाई कर सकती हो।"

"मैं यह सब कुछ कर सकती हूं," मार्युश्का ने कहा।

"तब भीतर आकर काम शुरू कर दो।"

इस तरह मार्युश्का नौकरानी बन गयी। वह सारा दिन काम करती और रात होने पर चांदी की तश्तरी और सोने का अण्डा निकालकर कहती:

"सोने के अण्डे, अपनी चांदी की तश्तरी में घूमो और मुझे मेरा प्यारा प्रेमी दिखाओ।"

सोने का अण्डा घूमने लगता और तभी फ़ीनिस्त – सुनहरा बाज़ उसके सामने आ जाता। मार्युश्का उसे देखती रहती, देखती रहती और उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगते।

"फ़ीनिस्त, मेरे प्यारे सुनहरे बाज़, तुमने यह क्या किया? मुझ दुखिया को अपनी याद में आंसू बहाने के लिए छोड़कर क्यों चले आये?"

महारानी ने यह सुन लिया और कहा:

"मार्युश्का, यह सोने का अण्डा और चांदी की तश्तरी मुझे बेच दो।"

"नहीं," मार्युश्का ने जवाब दिया, "ये बेचे नहीं जा सकते, मगर, यदि आप मुझे फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ को देखने की इजाज़त दे दें तो इन्हें मुफ़्त प्राप्त कर सकती हैं।"

महारानी ने कुछ देर इस पर विचार करने के बाद कहा:

"ख़ैर, ऐसा ही सही। रात को जब वह सो जायेगा तो मैं तुम्हें उसे देख लेने दूंगी।"

रात होने पर मार्युश्का उसके सोने के कमरे में गयी। वहां उसने फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ को देखा। उसका प्रियतम गहरी नींद सो रहा था और उसे किसी तरह भी जगाया नहीं जा सकता था। वह देखती रही, देखती रही, मगर उसका जी न भरा, आंखें तृप्त न हुईं। उसने उसके मधुमय ओंठ चूमे और उसे अपनी गोरी छाती से लगाया। मगर उसका प्रियतम सोता रहा, जागा नहीं। सुबह हो गयी, मगर मार्युश्का तब भी अपने प्यारे को जगा नहीं पायी ...

दिन भर काम करने के बाद, सन्ध्या को वह चांदी का चौखटा और सोने की सूई निकालकर कढ़ाई करने लगी। इधर सूई कढ़ाई कर रही थी और उधर मार्युश्का कहती जाती थी:



"छोटे तौलिये, तुझ पर क़सीदा हो जाये, क़सीदा हो जाये। मेरा प्यारा फ़ीनिस्त–सुनहरा बाज़ तुझसे अपना मुंह पोंछेगा।"

महारानी ने छिपकर यह सुना और कहा:

"मार्युश्का, अपना चांदी का चौखटा और सोने की सूई मुझे बेच दे।"

"मैं बेचूंगी तो नहीं," मार्युश्का ने जवाब दिया, "मगर, यदि आप मुझे फ़ीनिस्त–सुनहरा बाज़ देख लेने देंगी तो मुफ़्त ही दे दूंगी।"

महारानी ने बहुत विचार किया और अन्त में बोली:

"ख़ैर, ऐसा ही सही। आज रात को उसके कमरे में जाकर देख लेना।"

रात हुई तो मार्युश्का फ़ीनिस्त–सुनहरे बाज़ के सोने के कमरे में दाख़िल हुई। आज भी उसने अपने फ़ीनिस्त को गहरी नींद में सोते पाया।

"ओ मेरे प्यारे फ़ीनिस्त–सुनहरे बाज़, उठो, जागो!"

मगर उसका फ़ीनिस्त पहले की भांति गहरी नींद में सोया रहा। बहुत कोशिश करने पर भी मार्युश्का उसे जगा नहीं पायी।

सुबह होने पर मार्युश्का काम में लग गयी और उसने अपनी चांदी की चर्ख़ी तथा सोने की तकली बाहर निकाल ली। महारानी ने ये चीज़ें देखीं तो फिर मार्युश्का से उन्हें बेच देने के लिए कहा। पर मार्युश्का ने जवाब दिया:

"बेचूंगी तो नहीं, यदि आप मुझे फ़ीनिस्त–सुनहरे बाज़ के साथ एक रात रह लेने देंगी तो ये चीज़ें मैं आपको मुफ़्त ही दे दूंगी।"

"ख़ैर, ऐसा ही सही," महारानी ने कहा और अपने मन में सोचा: "वह उसे जगा तो सकेगी नहीं!"

रात होने पर मार्युश्का अपने प्रियतम के सोने के कमरे में दाख़िल हुई, मगर फ़ीनिस्त पहले की भांति गहरी नींद में सो रहा था।

"ओ मेरे फ़ीनिस्त–सुनहरे बाज़, उठो, जागो!"

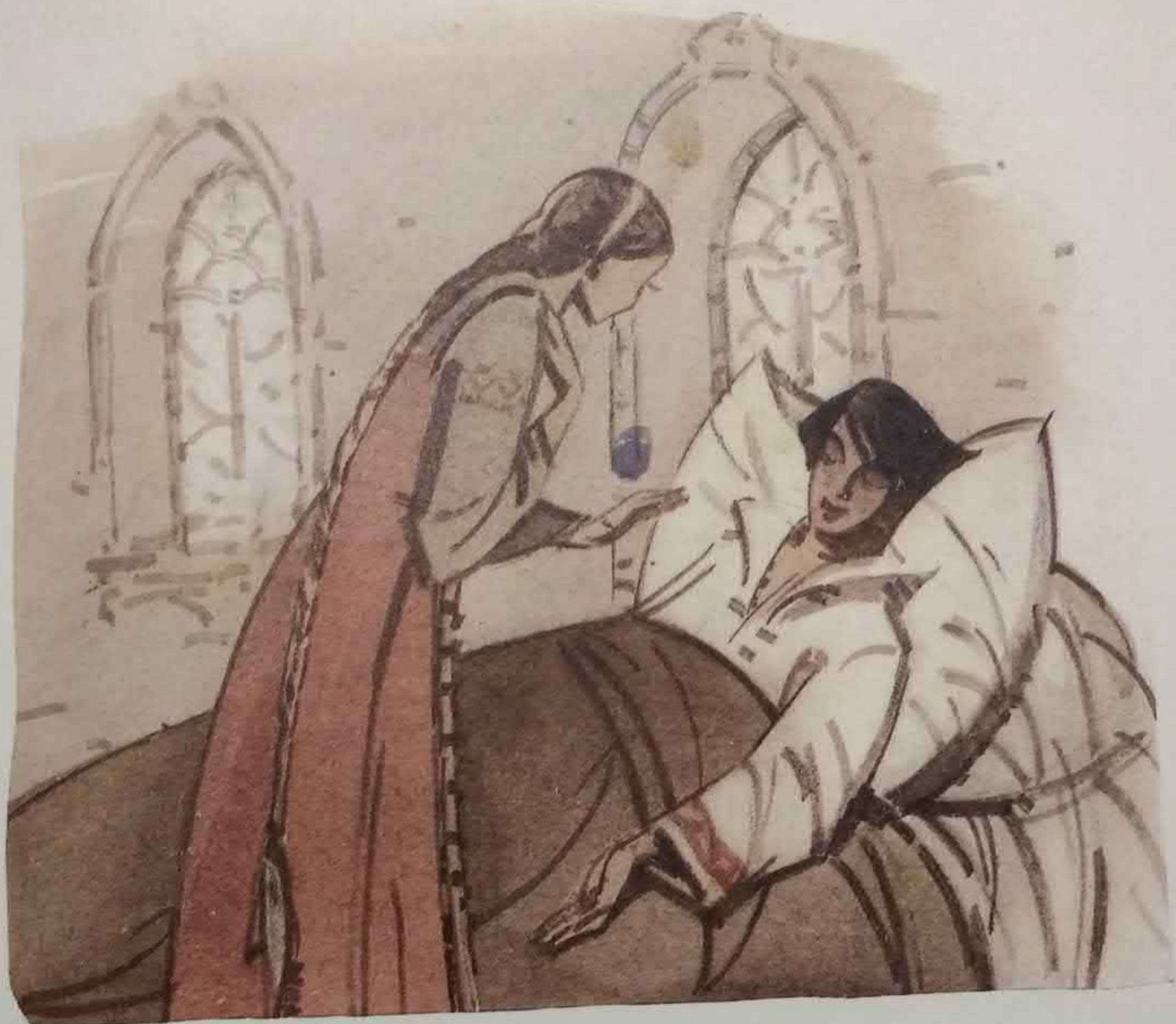
पर फ़ीनिस्त सोता रहा और नहीं जागा।

मार्युश्का ने बार-बार जगाने की कोशिश की, मगर असफल रही। पौ फटने का समय समीप आ गया था।

वह फूट-फूटकर रोने लगी:

"प्यारे फ़ीनिस्त–सुनहरे बाज़, उठो, अपनी आंखें खोलो, अपनी मार्युश्का को पहचानो, उसे छाती से लगा लो!"

तभी मार्युश्का की आंखों से गर्म-गर्म आंसू की एक बूंद सुनहरे बाज़ के उघड़े



कंधे पर गिरी। आंसू की बूंद से उसका कंधा जल गया। फ़ीनिस्त – सुनहरा बाज़ जागा, उसने अपनी आंखें खोलीं और मार्युश्का को देखा। उसने उसे अपनी बांहों में भरकर चूमा :

“क्या यह सचमुच तुम्हीं हो, मेरी मार्युश्का? तो तुमने लोहे के बूटों के तीन जोड़े और तीन छड़ियां तोड़ डालीं और लोहे की तीन टोपियां फाड़ दीं? आख़िर तुमने मुझे पा लिया। चलो, अब अपनी मातृभूमि को लौट चलें।”

उन्होंने घर की ओर सफ़र करने की तैयारी शुरू कर दी और महारानी ने यह

देखा तो ढिंढोरचियों को आदेश दिया कि जायें और सभी जगह उसके पति की बेवफ़ाई का ढिंढोरा पीट आयें।

उसके राज्य के सभी राजा और सौदागर यह फ़ैसला करने के लिए इकट्ठे हुए कि फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ को क्या सजा दी जाये।

तब फ़ीनिस्त – सुनहरे बाज़ ने एकत्रित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा:

"आप लोग ही इस बात का फ़ैसला करें कि मेरी पत्नी किसे होना चाहिए? वह जो मुझको प्यार करती है या वह जो मुझे बचती है और मुझसे धोखा करती है?"

सभी को सहमत होना पड़ा कि सिर्फ़ मार्युश्का ही उसकी बीवी होने की हक़दार है।

इसके बाद वे अपने देश को वापस चले गये। वहां उन्होंने एक शानदार दावत की। उनकी शादी के मौक़े पर अनेक तोपों की सलामी दी गयी और बहुत-से बाजे बजे। उन्होंने जो दावत की वह इतनी शानदार थी कि लोग उसे अभी तक याद करते हैं। इसके बाद वे दोनों लंबे अरसे तक सुखी जीवन बिताते रहे।

बहन अल्योनुश्का और भाई इवानुश्का

एक वक़्त का ज़िक्र है कि कहीं एक बूढ़ा और उसकी बीवी रहते थे। उनकी एक बेटी अल्योनुश्का और नन्हा-सा बेटा इवानुश्का था।

बूढ़ा और बुढ़िया अचानक चल बसे और अल्योनुश्का और इवानुश्का इस बड़ी दुनिया में अकेले रह गये।

अल्योनुश्का अपने छोटे भाई को साथ लेकर, काम की खोज में घर से निकल पड़ी। उन्हें बहुत लम्बा सफ़र तय करना था। वे चलते रहे, चलते रहे और उन्होंने एक खेत लांघा। तब इवानुश्का को ज़ोर की प्यास लग आयी।

"प्यारी बहन अल्योनुश्का, मुझे प्यास लगी है!" उसने कहा।

"सब्र करो, प्यारे भाई, हम जल्द ही किसी कुएं के पास पहुंच जायेंगे।"

चलते-चलते सूरज ऊंचा हो गया, धूप परेशान करने लगी, पसीना बहने लगा, मगर कुआं नज़र नहीं आया। अचानक उन्हें गाय के खुर का पानी से भरा हुआ एक निशान दिखाई दिया।

"प्यारी बहन अल्योनुश्का, मैं यहां से पानी पी लूं?"

"नहीं प्यारे भाई, तू बछड़ा हो जायेगा!"

नन्हे इवानुश्का ने बहन की बात मान ली और वे थोड़ी दूर और आगे बढ़ गये।

चलते-चलते सूरज और ऊंचा हो गया, धूप और परेशान करने लगी, पसीना और ज़्यादा बहने लगा, मगर कुआं नज़र नहीं आया। तब वे घोड़ों के सुमों के पानी से भरे हुए निशान के पास पहुंचे।

"प्यारी बहन अल्योनुश्का, क्या मैं यहां से पानी पी लूं?"

"नहीं प्यारे भाई, तू बछेड़ा हो जायेगा!"

इवानुश्का ने आह भरी और वे आगे चल दिये।

चलते-चलते सूरज और भी ऊंचा हो गया, धूप और भी ज़्यादा परेशान करने लगी, पसीना और भी ज़्यादा बहने लगा, मगर कुआं नज़र नहीं आया। तब वे बकरी के खुर के पानी से भरे निशान के पास पहुंचे।

"प्यारी बहन अल्योनुश्का, मैं प्यास से मरा जा रहा हूं। यहां से पानी पी लूं?" इवानुश्का ने पूछा।

"नहीं, नन्हे भाई, तू मेमना बन जायेगा!"

मगर इवानुश्का ने अपनी बहन की बात न मानी और वहां से पानी पी लिया।

ऐसा करते ही वह मेमना बन गया...

अल्योनुश्का ने अपने भाई को पुकारा तो इवानुश्का की जगह उसके पीछे एक मेमना दौड़ता हुआ आया।

अल्योनुश्का फूट-फूटकर रोने लगी। वह सूखी घास की टाल के पास बैठी हुई सिसक रही थी और मेमना उसके इर्द-गिर्द फुदकता फिरता था।



तभी अचानक घोड़े पर सवार एक सौदागर वहां से गुज़रा।

"तुम किसलिए रो रही हो, सुन्दरी?" उसने पूछा।

अल्योनुश्का ने उसे अपनी मुसीबत बतायी। सौदागर ने कहा:

"सुन्दरी, मुझसे शादी कर लो। मैं तुम्हें सोने-चांदी से लाद दूंगा और यह मेमना भी हमारे साथ रहेगा।"

अल्योनुश्का ने इस पर कुछ देर तक विचार किया और फिर वह सौदागर



से शादी करने के लिए राज़ी हो गयी।

वे दोनों सुख से रहने लगे। मेमना भी उनके साथ रहता था, अल्योनुश्का के साथ एक ही प्याले में से खाता-पीता था।

एक दिन सौदागर घर से बाहर गया हुआ था। अचानक ही कहीं से एक चुड़ैल वहां आ पहुंची। वह अल्योनुश्का की खिड़की के नीचे खड़ी होकर उसे नदी-तट पर जाकर स्नान करने के लिए उकसाने लगी।

अल्योनुश्का चुड़ैल के पीछे-पीछे चल दी। वहां पहुंचने पर चुड़ैल उसके ऊपर चढ़ बैठी। उसने उसकी गर्दन के गिर्द एक भारी पत्थर बांधकर उसे नदी में फेंक दिया।

तब चुड़ैल ने अल्योनुश्का का रूप धारण किया, उसके कपड़े पहने और उसके घर जा पहुंची। कोई भी यह अनुमान न लगा पाया कि वह चुड़ैल है। यहां तक कि घर लौटने पर सौदागर भी यह न जान सका।

केवल मेमना जानता था कि क्या घटना घटी है। वह मुंह लटकाये इधर-उधर



घूमता रहा और उसने खाने-पीने की कोई चीज़ छुई तक नहीं। सुबह-शाम वह नदी-तट पर जाता और यह गाता:

"खड़ा हुआ है नदी-किनारे
दीदी, भैया तुम्हें पुकारे
निकल नदी से बाहर आओ,
बहन अल्योनुश्का, बाहर आओ।"

चुड़ैल को इस बात का पता चल गया। अब वह मेमने को मार डालने के लिए अपने पति पर दबाव डालने लगी।

मेमने को मार डालने की बात सुनकर सौदागर को बेहद अफ़सोस होता। वह इसे बहुत चाहने लगा था। मगर चुड़ैल मेमने को मारने के लिए सौदागर की लगातार आरज़ू-मिन्नत करती रही। अन्त में वह राज़ी हो गया।

"अच्छा तो मार डालो..." उसने कहा।

चुड़ैल ने बड़ी आग जलवायी, बड़े-बड़े पतीले गर्म करवाये और छुरियां तेज़ करवायीं।

मेमने ने समझ लिया कि उसका आख़िरी वक़्त क़रीब आ रहा है। इसलिए उसने अपने पिता-तुल्य सौदागर से कहा:

"मरने से पहले मुझे एक बार नदी पर हो आने की इजाज़त दे दें। मैं अंतिम बार नदी का पानी पीना चाहता हूं।"

मे
पुकार-पु
को
और

"जाओ," सौदागर ने कहा।

मेमना नदी की तरफ़ दौड़ा। वह नदी-तट पर खड़ा होकर दर्दभरी आवाज में पुकार-पुकारकर कहने लगा:

"दीदी अल्योनुश्का, प्यारी अल्योनुश्का,
बाहर आओ, बाहर आओ,
तैर नदी से बाहर आओ।
आग जलायी उन लोगों ने,
कर लीं छुरियां तेज,
बड़े कड़ाहे उबल रहे हैं,
ले लेने को प्राण कि मेरे,
जानी दुश्मन मचल रहे हैं!"

और अल्योनुश्का ने नदी में से जवाब दिया:

"भाई इवानुश्का, प्यारे इवानुश्का,
कैसे बाहर आऊं मैं, कैसे बाहर आऊं मैं।
गर्दन से तो बंधा हुआ है पत्थर भारी,
नर्म दूब में उलझ रही, सारी की सारी।
बाधा पीली रेत कि मैं संकट की मारी।"

चुड़ैल मेमने की खोज में गयी, परन्तु उसे कहीं न पा सकी। तब उसने एक नौकर को बुलाया और उससे यह कहा:

"जाओ, जाकर मेमने को खोजो और उसे मेरे पास लाओ।"

नौकर नदी-तट पर गया और वहां उसने मेमने को तट पर इधर-उधर दौड़ते और दर्दभरी आवाज़ में यह कहते सुना:

"दीदी अल्योनुश्का, प्यारी अल्योनुश्का,
बाहर आओ, बाहर आओ,
तैर नदी से बाहर आओ।

आग जलायी उन लोगों ने,
कर लीं छुरियां तेज़,
बड़े कड़ाहे उबल रहे हैं,
ले लेने को प्राण कि मेरे,
जानी दुश्मन मचल रहे हैं!"

और नदी में से एक आवाज़ सुनाई दी:

"भाई इवानुश्का, प्यारे इवानुश्का,
कैसे बाहर आऊं मैं, कैसे बाहर आऊं मैं।
गर्दन से तो बंधा हुआ है पत्थर भारी,
नर्म दूब में उलझ रही, सारी की सारी।
बाधा पीली रेत कि मैं संकट की मारी।"

नौकर दौड़ता हुआ घर पहुंचा। नदी-तट पर उसने जो कुछ देखा-सुना था वह अपने मालिक से कह सुनाया। सौदागर ने जब यह सुना तो बहुत-से लोग साथ लेकर नदी-तट पर पहुंचा। उन्होंने नदी में एक रेशमी जाल डाला और अल्योनुश्का को खींचकर बाहर निकाल लिया। उन्होंने उसकी गर्दन के गिर्द बंधा हुआ पत्थर खोला। उसे चश्मे के जल में स्नान करवाया और सुन्दर कपड़े पहनाये। अल्योनुश्का अब पहले से भी कहीं अधिक सुन्दर हो गयी थी।

मेमने ने खुशी से फूला न समाते हुए तीन कलाबाजियां खायीं और वह फिर से नन्हा-मुन्ना इवानुश्का बन गया।

उस दुष्ट चुड़ैल को घोड़े की दुम से बांधकर खुले मैदान में छोड़ दिया गया।



जादुई घोड़ा

बहुत पुरानी बात है कि कहीं एक बूढ़ा रहता था। उसके तीन बेटे थे। दो बड़े बेटे घर के काम-काज की देखभाल करते थे, बड़े उदार और दानी थे। उन्हें सुन्दर कपड़े पहनने का भी बड़ा शौक़ था। मगर इवान जो सबसे छोटा था, उसमें कोई भी गुण नहीं था, निरा बुद्धू था। वह अपना अधिकतर समय अलावघर पर बैठे-बैठे बिता देता और केवल खुम्मियां इकट्ठी करने के लिए ही बाहर जंगल में जाता।

जब बूढ़े का मरने का वक़्त क़रीब आया तो उसने तीनों बेटों को अपने पास बुलाकर कहा :

"जब मैं मर जाऊं तो तुम लोग लगातार तीन रातों तक जरूर मेरी क़ब्र पर आना और मेरे खाने के लिए कुछ रोटी लाना।"

बूढ़ा मर गया और उसे दफ़ना दिया गया। पहली रात को सबसे बड़े भाई को क़ब्र पर जाना था, लेकिन वह बड़ा सुस्त था या यों कहिये कि बड़ा डरपोक था और क़ब्र पर जाने से डरता था। इसलिए उसने बुद्धू इवान से कहा :

"अगर तुम आज मेरी जगह पिता जी की क़ब्र पर चले जाओ तो मैं तुम्हें केक खरीद दूंगा।"

इवान फ़ौरन राज़ी हो गया। उसने कुछ रोटी ली और अपने पिता की क़ब्र पर जा पहुंचा। वह क़ब्र के पास बैठ गया और आगे घटनेवाली घटना का इन्तज़ार करने लगा। आधी रात होने पर ज़मीन फटकर अलग हो गयी और बूढ़ा बाप क़ब्र से बाहर आकर बोला :

"कौन है? क्या तुम हो, मेरे बड़े बेटे? मुझे बताओ रूस का क्या हाल है? क्या कुत्ते भौंक रहे हैं, या भेड़िये चिल्ला रहे हैं, या मेरे बेटे रो रहे हैं?"

तब इवान ने जवाब दिया :

"यह मैं हूं, पिता जी, आपका सबसे छोटा बेटा इवान। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।"

तब पिता ने भर पेट रोटी खायी और अपनी क़ब्र में जा लेटा। इवान घर लौट आया और रास्ते में केवल खुम्मियां इकट्ठी करने के लिए ही रुका।

जब वह घर आया तो उसके सबसे बड़े भाई ने पूछा :

"पिता जी से भेंट हुई?"

"हां, हुई," इवान ने जवाब दिया।

"उन्होंने रोटी खायी?"

"हां, उन्होंने भर पेट रोटी खायी।"

एक और दिन गुज़रा और तब दूसरे भाई की बारी आयी। लेकिन वह भी या तो बेहद सुस्त था या इतना डरता था कि जाना नहीं चाहता था। इसलिए उसने इवान से कहा :

"इवान, अगर तुम मेरी जगह चले जाओ तो मैं तुम्हें नये जूते बना दूंगा।"

"ठीक है," इवान ने कहा, "मैं चला जाऊंगा।"

उसने कुछ रोटी ली और अपने पिता की क़ब्र पर जाकर इन्तज़ार करने लगा। आधी रात होने पर ज़मीन फटकर अलग हो गयी। बूढ़े बाप ने क़ब्र से बाहर आकर पूछा :

"कौन है? क्या तुम हो, मेरे मंझले बेटे? मुझे बताओ रूस का क्या हाल है? क्या कुत्ते भौंक रहे हैं, या भेड़िये चिल्ला रहे हैं, या मेरे बेटे रो रहे हैं?"

तब इवान ने जवाब दिया :

"यह मैं हूं, पिता जी, आपका बेटा इवान। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।"

तब पिता ने भर पेट रोटी खायी और अपनी क़ब्र में लौट गया। इवान घर वापस

चला आया। रास्ते में उसने फिर खुम्मियां इकट्ठी कीं। वह घर आया तो मझले भाई ने पूछा :

"पिता जी ने रोटी खायी?"

"हां, भर पेट खायी।"

तीसरी रात इवान की बारी थी। उसने अपने भाइयों से कहा :

"दो रात से मैं पिता जी की क़ब्र पर जाता रहा हूं। आज तुममें से कोई एक जाये। मैं घर पर रहकर आराम करूंगा।"

"नहीं," भाइयों ने जवाब दिया, "आज भी तुम ही जाओ। तुम तो इसके आदी हो चुके हो।"

"चलो, कोई बात नहीं!" इवान राज़ी हो गया।

उसने कुछ रोटी ली और क़ब्र पर जा पहुंचा। आधी रात होने पर ज़मीन फटी और बूढ़ा बाप क़ब्र से बाहर आकर बोला :

"कौन है? क्या तुम हो, मेरे तीसरे बेटे, इवान? मुझे बताओ रूस का क्या हाल है? क्या कुत्ते भौंक रहे हैं, या भेड़िये चिल्ला रहे हैं, या मेरे बेटे रो रहे हैं?"

तब इवान ने जवाब दिया :

"मैं ही हूं, पिता जी, आपका बेटा इवान। और रूस में सब कुछ ठीक-ठाक है।"

पिता ने भर पेट रोटी खायी और उससे कहा :

"केवल तुमने ही मेरे आदेश का पालन किया है, इवान। मेरी क़ब्र पर आते हुए सिर्फ़ तुम ही नहीं डरे। अब तुम ऐसा करना – खुले मैदान में जाकर पुकारना : 'जादुई घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!' जब घोड़ा तुम्हारे सामने आये तो उसके दायें कान में दाखिल होकर बायें से बाहर आ जाना। तब तुम इतने सुन्दर युवक बन जाओगे कि जैसा पहले कभी किसी ने देखा ही न हो। फिर तुम घोड़े पर सवार होकर, जहां मन चाहे चले जाना।" इतना कहकर पिता ने उसे लगाम दी।

इवान ने वह लगाम ले ली और धन्यवाद देकर घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसने खुम्मियां इकट्ठी कीं।

वह घर आया तो उसके भाइयों ने पूछा :

"पिता जी से भेंट हुई, इवान?"

"हां, हुई।"

"क्या उन्होंने रोटी खायी?"

"हां उन्होंने भर पेट रोटी खायी और क़ब्र पर न आने का आदेश दिया।"

अब हुआ यह कि उन्हीं दिनों ज़ार ने देश के सभी भागों में डौंड़ी पिटवायी। सभी सूरमाओं को राजधानी में इकट्ठे होने के लिए कहा गया।

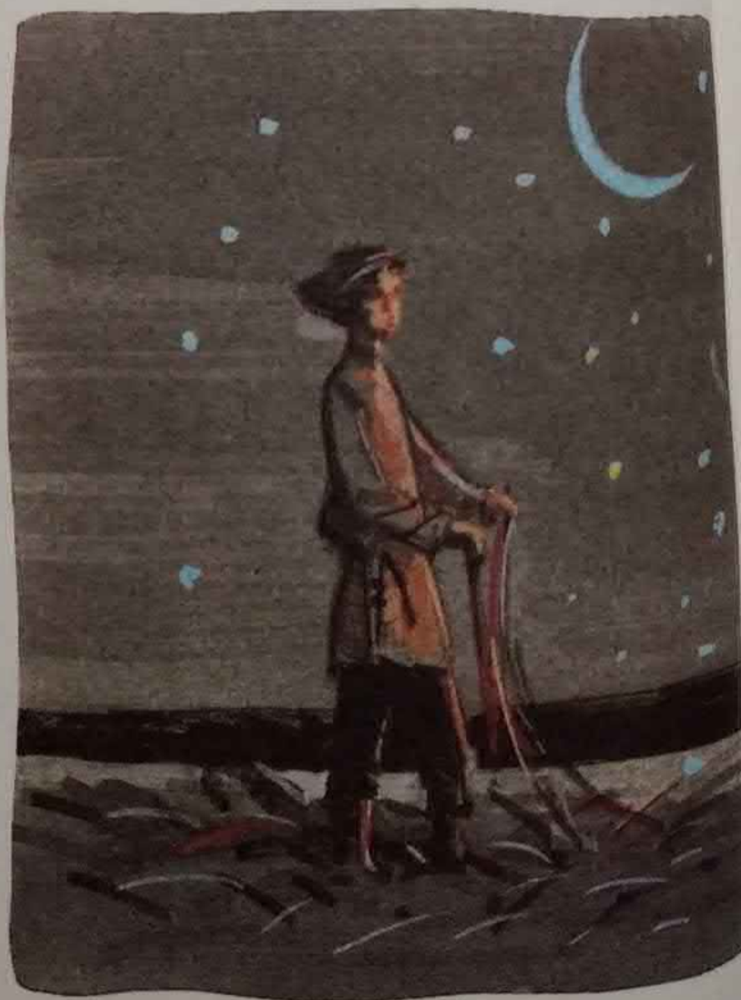
ज़ार की बेटी अनुपमा ने अपने लिए बारह स्तम्भों पर बलूत के लट्ठों की बारह तहोंवाला एक महल बनवाने का आदेश दिया था। उसने सबसे ऊपर की मंज़िल की खिड़की में बैठकर उस आदमी की प्रतीक्षा करने का निश्चय किया था जो अपने घोड़े से खिड़की तक उछलकर उसके होंठों को चूम लेगा। जीतनेवाला चाहे अमीर-कुलीन हो, चाहे ग़रीब-गुरबा, ज़ार अपनी बेटी अनुपमा का विवाह उसी के साथ करेगा और उसे अपना आधा राज्य भी देगा।

यह ख़बर इवान के भाइयों ने भी सुनी। उन्होंने आपस में तय किया कि वे भी अपनी क़िस्मत आज़माने जायेंगे।

उन्होंने अपने बढ़िया घोड़ों को ख़ूब जई खिलायी और उन्हें अस्तबलों से बाहर लाये। उन्होंने अपनी बढ़िया पोशाकें पहनीं और घुंघराले बाल संवारे। अलावघर पर बैठे हुए इवान ने अपने भाइयों से कहा :

"मुझे भी अपने साथ ले चलो, मेरे भाइयो! मुझे भी क़िस्मत आज़माने का मौक़ा दो!"

"तुम्हें साथ ले चलें? बुद्धू कहीं के! तुम यहीं अलावघर पर बैठे अच्छे लगते हो!" उन्होंने ठहाका लगाया। "अगर तुम हमारे साथ गये तो लोग तुम्हें देखकर हंसेंगे। तुम्हारे लिए तो यही अच्छा है कि जंगलों में जाकर खुम्मियों की तलाश करो।"



उसके भाई अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार हुए। उन्होंने अपने टोपों के सिरे ऊपर करके सीटी बजायी, सिंहनाद किया और सरपट घोड़े दौड़ाते हुए धूल के बादल में विलीन हो गये। इवान ने पिता की दी हुई लगाम उठायी और खुले मैदान में जा पहुंचा।

पिता ने जैसे बताया था, उसने वैसे ही ज़ोर से आवाज़ दी :

"जादुई घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!"

और लो! एक घोड़ा उसकी तरफ़ तेज़ी से आता हुआ दिखाई दिया। उसके पांव तले की धरती कांपती थी, उसकी नाक से शोले और कानों से धुएं के बादल निकल रहे थे। यह तेज़ घोड़ा इवान के पास आकर रुक गया और कहने लगा :

"हुक्म, मालिक!"

इवान ने घोड़े की गर्दन थपथपायी, उसे लगाम पहनायी और उसके दायें कान में प्रवेश कर बायें से बाहर आ गया। देखते ही देखते वह उषावेला के आकाश जैसा सुन्दर युवक बन गया। वह जादुई घोड़े की पीठ पर सवार हो गया और ज़ार के महल की तरफ़ चल दिया। जादुई घोड़ा अपनी दुम की फटकार के साथ पहाड़ियों को लांघता, घाटियों को फांदता, ठूंठों-पेड़ों को फलांगता हुआ बढ़ता चला गया।

इवान आख़िर ज़ार के महल के आंगन में जा पहुंचा। उस समय महल के इर्द-गिर्द के मैदान लोगों से भरे पड़े थे। वहां ही बारह खम्भों पर बलूत के लट्ठों की बारह तहों-वाला महल था। उस महल की सबसे ऊपर की मंज़िल की खिड़की में राजकुमारी अनुपमा बैठी थी।



ज़ार बाहर ओसारे में आया और उसने कहा :

"वीर युवको! तुममें से जो अपने घोड़े पर सवारी करता हुआ महल की खिड़की तक उछलकर मेरी बेटी के होंठ चूमेगा, वही उससे शादी करेगा और उसे मैं अपना आधा राज्य भी दूंगा।"

राजकुमारी अनुपमा को पाने की इच्छा रखनेवाले नौजवान, बारी-बारी से घोड़े पर सवार होकर आये, कूदे-फांदे, मगर अफ़सोस! खिड़की उनकी पहुंच से बहुत दूर थी। दूसरे लोगों के साथ इवान के दोनों भाइयों ने भी कोशिश की। वे आधी ऊंचाई तक भी न पहुंच सके।

अब इवान की बारी आयी। उसने अपना जादुई घोड़ा सरपट दौड़ाया, वह हुंकारते और सिंहनाद करते हुए ऊपर को उछला और दो कम अन्तिम लट्ठे तक जा पहुंचा। वह एक बार फिर घोड़े को तेज़ी से दौड़ाता हुआ आया, ऊपर को उछला और इस बार एक कम अन्तिम लट्ठे तक पहुंच गया। उसके लिए अब तीसरा और आख़िरी मौक़ा बाक़ी रह गया था। इस बार उसने जादुई घोड़े को बहुत ही तेज़ दौड़ाया। घोड़ा हांफ रहा था और उसके मुंह से झाग निकल रहा था। इवान आग की तेज़ लपट की भांति खिड़की के पास पहुंचा और उसने राजकुमारी अनुपमा के शहद जैसे मीठे होंठ चूम लिये। राजकुमारी ने अपनी मुहर की अंगूठी से उसके माथे पर निशान लगा दिया।

लोग चिल्लाये :

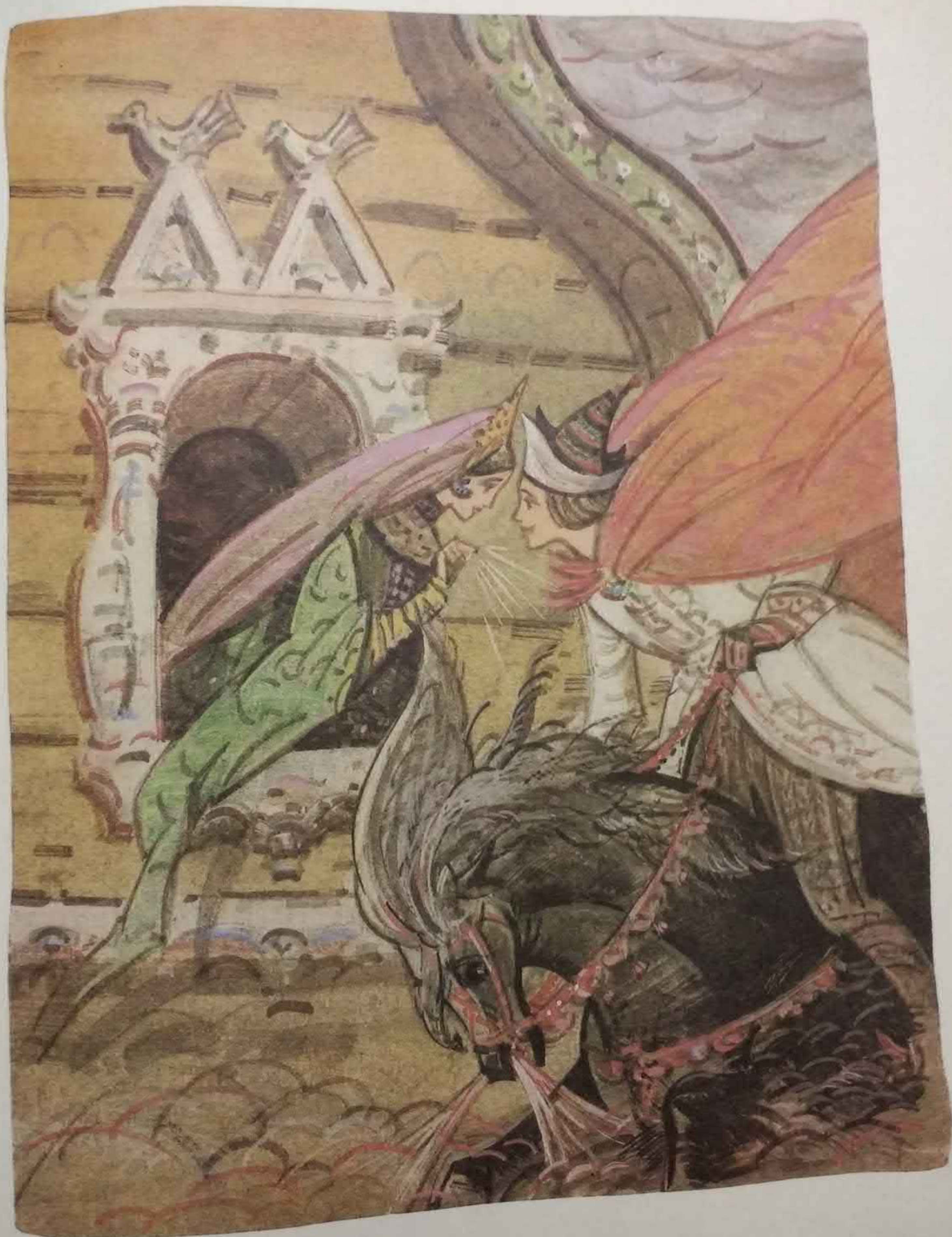
"इसे पकड़ो! इसे रोको!"

लेकिन इवान और उसके घोड़े का कहीं अता-पता ही न था।

वे दोनों तेज़ी से खुले मैदान में पहुंचे। इवान जादुई घोड़े के बायें कान में दाखिल होकर दायें से बाहर निकल आया और देखते ही देखते वह पहले जैसा हो गया। जादुई घोड़े को वहीं छोड़कर वह अपने घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसने खुम्मियां इकट्ठी कीं। वह मकान के भीतर गया, एक चिथड़े से उसने अपना माथा बांध लिया और पहले की भांति अलावघर पर चढ़कर लेट गया।

कुछ देर बाद उसके भाई आये। वे जहां गये थे और उन्होंने जो कुछ देखा था, वह सब बयान किया।

"राजकुमारी को चाहनेवाले बहुत थे और एक से एक बढ़-चढ़कर सुन्दर भी," उन्होंने कहा। "लेकिन उनमें से एक तो बस, कमाल ही का था। वह अपने तूफ़ानी घोड़े से उछलकर राजकुमारी की खिड़की तक पहुंचा और उसके होंठ चूमने में सफल हो गया। हमने उसे आते देखा, मगर जाते नहीं देखा।"





चिमनी के पास अपनी जगह से इवान ने कहा :

"क्या, मैं तो नहीं था, जिसे तुमने देखा था ?"

उसके भाई खीझकर बोले :

"अरे बेवक़ूफ़, अपनी बकवास बन्द करो! वहीं अलावघर पर बैठकर खुम्मियां खाओ!"

तब इवान ने खोल दिया राजकुमारी की मुहर के ऊपर बंधा हुआ चिथड़ा। बस, फ़िर क्या था, तेज़ रोशनी से सारा घर जगमगा उठा। उसके भाई डरकर चिल्लाये :

"अरे बेवक़ूफ़, यह तुम क्या कर रहे हो ? मकान जला डालोगे!"

अगले रोज़ ज़ार ने बहुत बड़ी दावत की, जिसमें उसने अपनी सारी प्रजा को बुलाया। उस दावत में जागीरदार और रईस, साधारण लोग, ग़रीब-अमीर, जवान-बूढ़े – सभी बुलाये गये।

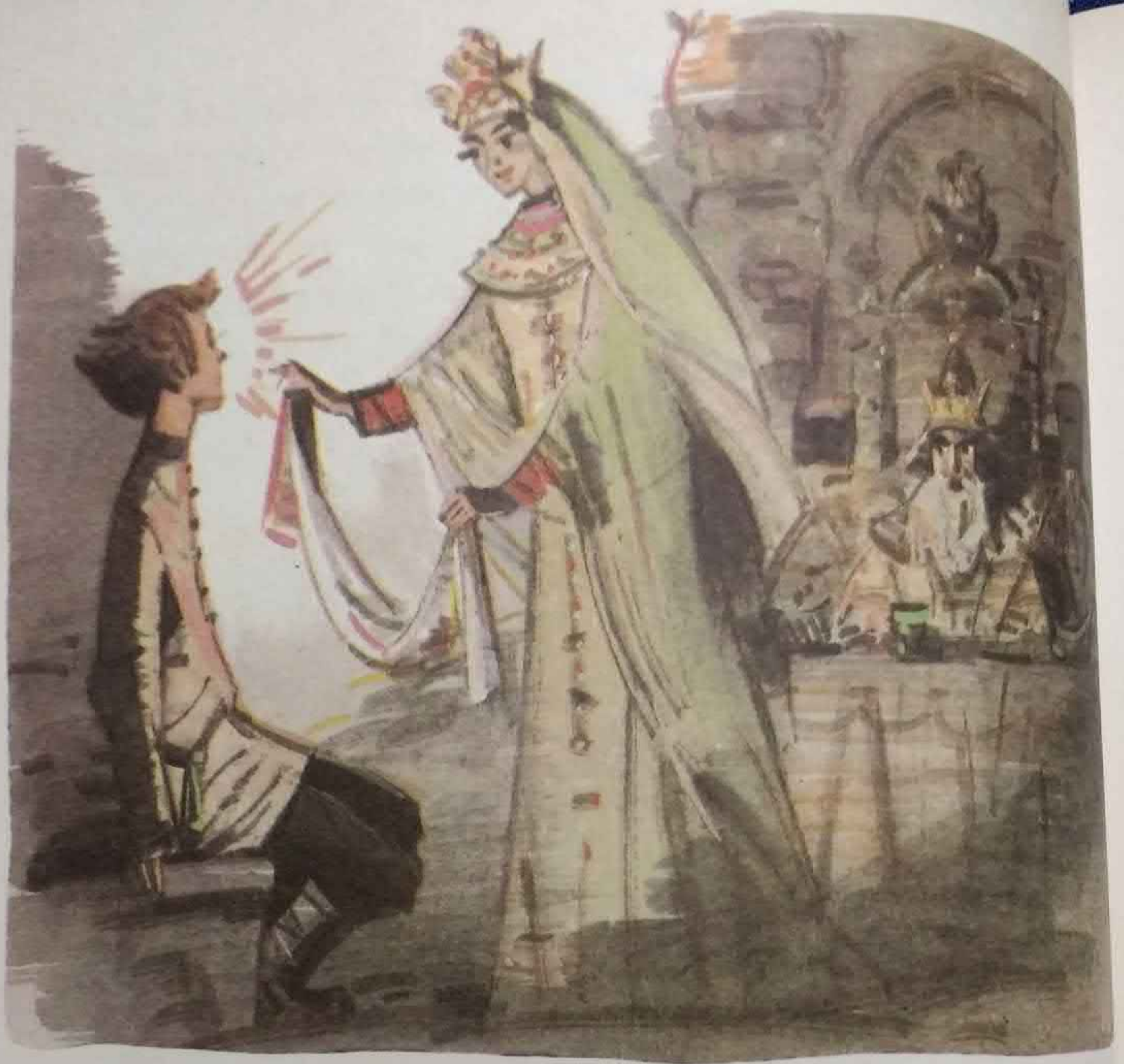
इवान के भाई भी दावत में शामिल होने के लिए तैयार हुए। "मुझे भी अपने साथ ले चलो, भाइयो!" इवान ने प्रार्थना की।

"क्या ?" वे हंसे। "जो भी तुम्हें देखेगा, वही हंसेगा। यहां बैठकर खुम्मियां खाओ!"

भाई अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार होकर चले गये और इवान उनके पीछे-पीछे पैदल ही चल दिया। वह ज़ार के महल में पहुंचा और दूर एक कोने में ही बैठ गया। राजकुमारी अनुपमा मेहमानों से भेंट करने लगी। वह सभी को शराब का एक जाम देती और साथ ही यह देखती कि किसी के माथे पर उसकी मुहर तो नहीं लगी है।

इवान के सिवा वह सभी मेहमानों से मिली। इवान के पास पहुंचते ही राजकुमारी का दिल बैठ गया। इवान के सारे शरीर पर कालिख पुती हुई थी और उसके बाल बिखरे हुए थे।





राजकुमारी अनुपमा ने पूछा :
"तुम कौन हो? कहां से आये हो? तुम्हारे माथे पर चिथड़ा क्यों बंधा हुआ है?"
"मैं गिरकर ज़ख़्मी हो गया हूं," इवान ने जवाब दिया।
राजकुमारी ने चिथड़ा खोला तो सारा महल एकदम जगमगा उठा।
"यह मेरी मुहर है!" वह चिल्लायी। "यह रहा मेरा मंगेतर!"
ज़ार इवान के पास आया और उसे देखकर कहने लगा :
"अरे नहीं, राजकुमारी अनुपमा, यह तुम्हारा मंगेतर नहीं हो सकता! यह तो इतना गन्दा है!"

इवान ने ज़ार से कहा:

"मुझे अपना मुंह धोने की इजाज़त दे दीजिये, ज़ार।"

ज़ार ने इजाज़त दे दी। इवान आंगन में पहुंचकर उसी भांति चिल्लाया जैसा कि उसके पिता ने सिखाया था:

"जादुई घोड़े, मेरे सामने आओ, मेरी सुनो और मानो!"

और लो! एक घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ उसकी तरफ़ आता दिखाई दिया। उसके पैरों तले की ज़मीन कांप रही थी, उसकी नाक से शोले और कानों से धुएं के बादल निकल रहे थे। इवान उसके दायें कान में दाखिल होकर बायें से बाहर निकल आया और एक बार फिर वह उषावेला के आकाश जैसा सुन्दर बन गया। वह कितना सुन्दर था, यह बयान करना मुमकिन नहीं।

महल में जमा सभी लोगों ने जब उसे देखा तो दांतों तले उंगली दबाकर रह गये।

इसके बाद उन दोनों की शादी हो गयी और ज़ार ने शादी की खुशी में एक बड़ी दावत की।



हिमदेव

एक बार एक बूढ़ा अपनी दूसरी बीवी के साथ रहता था। दोनों की एक-एक बेटी थी। एक बेटी बूढ़े की थी और एक उसकी बीवी की।

हर कोई जानता है कि सौतेली माताएं कैसी होती हैं। चाहे तुम काम बिगाड़ो, चाहे संवारो, पिटाई तो तुम्हारी होगी ही। अपनी बेटी चाहे जो भी करे, उसकी सदा सराहना की जाती है, उसे हमेशा शाबाशी दी जाती है।

बूढ़े की बेटी प्रतिदिन पौ फटने के पहले उठती। वह पशुओं की देख-भाल करती, आग जलाने के लिए लकड़ी और पानी लाती, चूल्हा जलाती और फ़र्श पर झाड़ू लगाती... तो भी उसकी सौतेली मां हर काम में से दोष ढूंढ़ निकालती, बात-बात पर बिगड़ती और उसे दिन भर डांटती।

तेज़ हवा एक बार ज़ोर से सांय-सांय करती है और फिर शान्त हो जाती है। पर अगर कोई बुढ़िया एक बार चालू हो जाती है तो जल्द ही चुप होने का नाम नहीं लेती। सौतेली मां ने सौतेली बेटी से छुटकारा पाने का निश्चय कर लिया।

"बूढ़े, इसे यहां से ले जाओ," उसने अपने पति से कहा, "यह मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाती। इसे जंगल में ले जाओ और जाड़े-पाले में ठिठुरकर मरने को छोड़ आओ।"

बूढ़ा बहुत दुखी हुआ और रोया, मगर वह कुछ नहीं कर सकता था। जैसे बीवी नचाती थी उसे नाचना पड़ता था। इसलिए उसने अपने घोड़े जोते और बेटी को पुकारा :

"आओ, मेरी प्यारी बेटी, स्लेज में बैठ जाओ।"

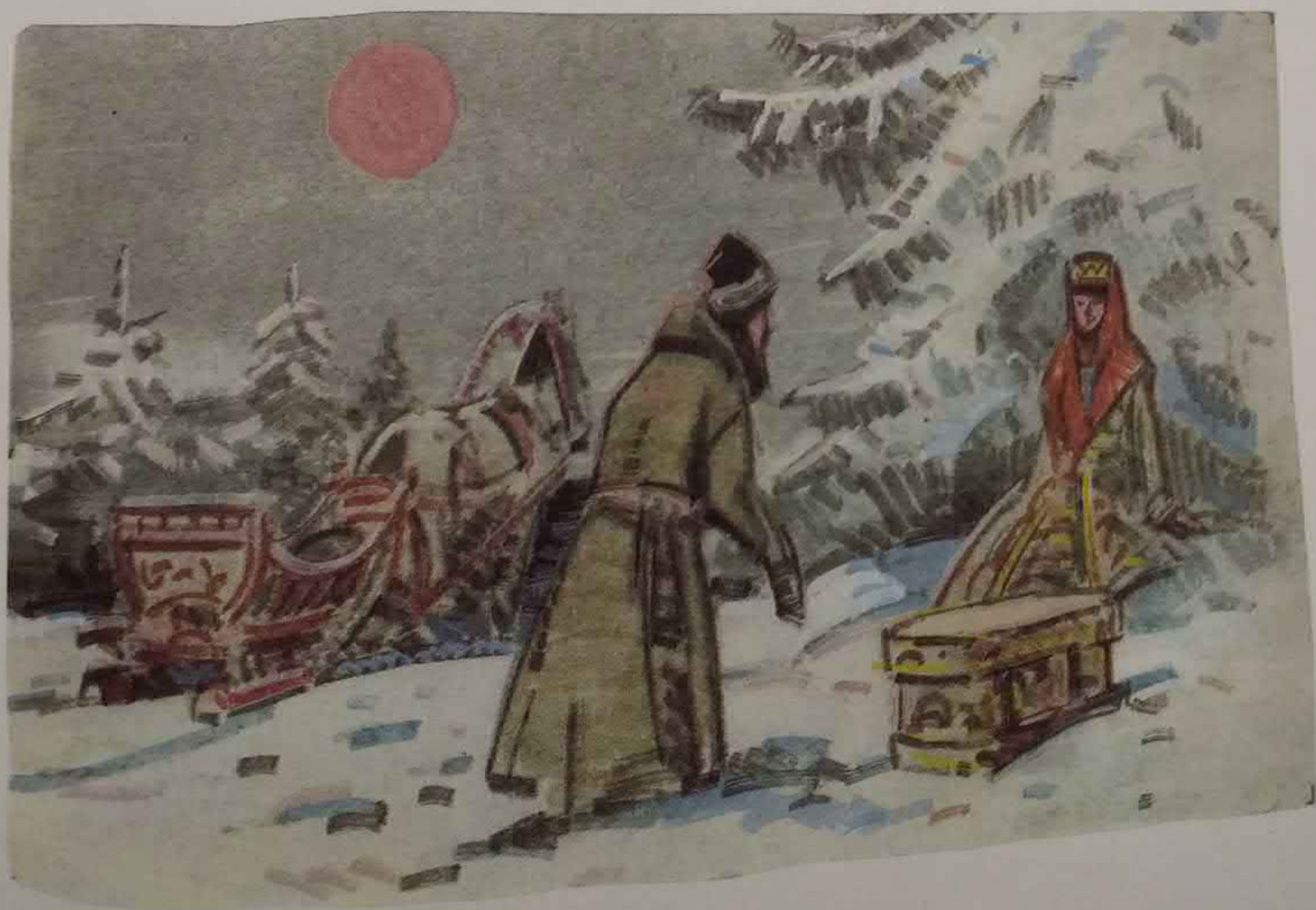
बूढ़ा बाप बे-मां की लड़की को जंगल में ले गया और वहां एक बड़े देवदार के पेड़ के नीचे उसे बर्फ़ पर फेंककर गाड़ी आगे भगा ले गया।

बेहद सर्दी थी। लड़की देवदार के नीचे बैठी हुई ठिठुर रही थी। अचानक उसने हिमदेव को एक से दूसरे पेड़ पर कूदते-फांदते और वृक्षों की शाखाओं के बीच चटख-पटख की आवाज़ करते सुना। पलक झपकते में वह उस पेड़ के ऊपर आ पहुंचा जिसके नीचे वह लड़की बैठी हुई थी।

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की?" उसने ऊपर से पुकारकर पूछा।

"नहीं, हिमदेव!"

तब हिमदेव और नीचे आ गया और वह पहले से कहीं अधिक चटख-पटख करने लगा।



"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की?" उसने फिर पूछा। "क्या तुम अपने को गर्म अनुभव कर रही हो, मेरी सुन्दर बिटिया?"

लड़की बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रही थी, मगर उसने कहा:

"हां, मैं अपने को बहुत गर्म अनुभव कर रही हूं, हिमदेव!"

हिमदेव और भी नीचे आ गया। उसकी चटख-पटख की आवाज़ पहले से कहीं अधिक ऊंची हो गयी थी।

"लड़की, क्या तुम गर्म हो?" उसने पूछा। "क्या तुम गर्म हो, सुन्दर बिटिया? क्या तुम गर्म हो, मेरी माधुरी?"

ठंड से लड़की के सभी अंग जमे जा रहे थे और वह बड़ी मुश्किल से ज़बान हिला पा रही थी, पर फिर भी उसने कहा:

"मैं गर्म हूं, प्यारे हिमदेव!"

हिमदेव को लड़की पर रहम आ गया और उसने उसे पोस्तीन और रोयेंदार कंबलों से ढंक दिया।

इसी बीच बुढ़िया मातमी दावत की तैयारी कर रही थी और अपनी सौतेली बेटी की याद में पूरियां पका रही थी। उसने अपने पति से कहा:

"अबे ओ बूढ़े खूसट, जंगल में जाओ और अपनी बेटी को दफ़नाने के लिए वापस ले आओ!"

बूढ़ा जंगल में गया और वहां, उसी जगह पर उसने अपनी बेटी को पहले से अधिक खुश बैठे पाया। लड़की के गालों पर सुर्ख़ी थी। वह बढ़िया फ़र का पोस्तीन पहने थी और सोने-चांदी के ज़ेवरों से लदी थी। उसके पीछे उपहारों से भरी हुई एक बड़ी टोकरी रखी थी।

बूढ़े की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने बेटी को स्लेज में बिठाया, बड़ी टोकरी उसके पीछे रखी और घर की ओर चल दिया।

इधर वह बुढ़िया अभी भी पूरियां तल रही थी जब उसने अचानक मेज़ के नीचे से अपने कुत्ते को यह कहते सुना: "भौं-भौं-भौं, लदकर सोने-चांदी से बूढ़े की बिटिया आयेगी और बनेगी वह सुकुमारी, दुलहन प्यारी-प्यारी। किन्तु रहेगी बुढ़िया की बेटी सदा कुंवारी।

बुढ़िया ने कुत्ते की ओर एक पूरी फेंकी और कहा: "तू ग़लत कह रहा है कुत्ते! तुझे कहना चाहिए: 'बुढ़िया की बेटी के होंगे बड़े चाहनेवाले और किसी के दिल की वह बन जायेगी रानी मरी-खपी बूढ़े की बेटी, क़िस्सा ख़त्म कहानी।'"

कुत्ते ने पूरी खा ली, मगर फिर भी उसने यही कहा : "भौं-भौं-भौं, लदकर सोने-चांदी से बूढ़े की बिटिया आयेगी और बनेगी वह सुकुमारी, दुलहन प्यारी-प्यारी। किन्तु रहेगी बुढ़िया की बेटी सदा कुंवारी।"



बुढ़िया ने कुत्ते की ओर कई पूरियां फेंकीं और उसे मारा भी, मगर कुत्ते ने बार-बार वही पहली बात दोहरायी।

अचानक फाटक चरमराया, दरवाज़ा खुला और बूढ़े की बेटी ने भीतर प्रवेश किया। वह सोने-चांदी के ज़ेवरों से लदी चमचम कर रही थी। उसके पीछे उसका बाप क़ीमती उपहारों से भरी एक बड़ी टोकरी लिये हुए अन्दर आया। बुढ़िया ने यह सब कुछ देखा तो दंग रह गयी।

"अरे, बूढ़े खूसट! घोड़ों को स्लेज में जोतो!" उसने कहा, "मेरी बेटी को जंगल में ले जाओ और उसी जगह छोड़ आओ जहां अपनी बेटी को छोड़ आये थे..."

बूढ़े ने बुढ़िया की बेटी को स्लेज में बिठाया, उसे जंगल में उसी जगह पर ले गया और ऊंचे देवदार पेड़ के नीचे बर्फ़ के ढेर पर फेंककर घर लौट आया।

अब बुढ़िया की बेटी वहां बैठी थी। इतनी अधिक सर्दी थी कि उसके दांत बज रहे थे।

हिमदेव एक के बाद दूसरे पेड़ पर कूदता-फांदता, शाखाओं के बीच चटख-पटख की आवाज़ करता और बीच-बीच में बुढ़िया की बेटी पर नज़र डालता हुआ पूछता :

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की?"

लड़की जवाब देती :

"हाय-हाय, मुझे बेहद ठंड लग रही है! इस तरह चटख-पटख मत करो, हिमदेव!"

हिमदेव और नीचे आ गया और अधिक ज़ोर से चटख-पटख करने लगा।

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की?" उसने पुकारकर पूछा। "क्या तुम अपने को गर्म अनुभव कर रही हो, सुन्दरी?"

"अरे नहीं," उसने कहा, "मैं तो जमी जा रही हूं! जाओ यहां से, हिमदेव..."

मगर हिमदेव और नीचे आ गया तथा पहले से भी कहीं ऊंची आवाज़ में चटख-पटख करने लगा। उसकी सांस भी पहले से अधिक ठंडी हो गयी थी।

"तुम्हें जाड़ा तो नहीं लग रहा, लड़की? क्या तुम गर्म हो, सुन्दरी?"

"हाय, मैं तो बिल्कुल जम गई हूं! जाओ, भाग जाओ यहां से, दुष्ट हिमदेव!"

इस पर हिमदेव को इतना अधिक गुस्सा आया कि उसने अपनी सारी शक्ति से बुढ़िया की बेटी को अपनी जकड़ में ले लिया और उसे ठण्ड से मार डाला।

सुबह हुई ही थी कि बुढ़िया ने अपने पति से कहा:

"जल्दी करो, घोड़े जोतो, बूढ़े खूसट! जाओ, सोने-चांदी से चमचम करती मेरी बेटी को घर ले आओ..."

बूढ़ा आदमी स्लेज लेकर चला गया। तब मेज़ के नीचे से कुत्ता भौंका:

"भौं-भौं-भौं, बहुत जल्द बूढ़े की बेटी, दुलहन भी बन जायेगी। ठिठुर मरी बुढ़िया की बेटी कभी न अब उठ पायेगी।"

बुढ़िया ने कुत्ते की तरफ़ कचौड़ी का एक टुकड़ा फेंका, "तू गलत कहता है। यों कह:

'बुढ़िया की बेटी लदकर आयेगी सोने-चांदी से...'"

लेकिन कुत्ते ने वही पहली बात दोहरायी:

"ठिठुर मरी बुढ़िया की बेटी कभी न अब उठ पायेगी।"

तभी फाटक चरमराया और बुढ़िया अपनी बेटी से मिलने के लिए दौड़ी। उसने चटाई हटायी तो उसके नीचे अपनी बेटी की लाश पायी।

बुढ़िया ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी, मगर अब हो ही क्या सकता था!



जाओ वहां – न जाने कहां, लाओ उसे – न जाने किसे

किसी जगह एक ज़ार राज्य करता था। वह अकेला और कुंवारा था। उसने एक तीरंदाज़ को नौकर रखा हुआ था जिसका नाम अन्द्रेई था।

एक दिन तीरंदाज़ शिकार के लिए गया। वह दिन भर जंगलों में घूमता रहा, मगर एक भी शिकार उसके हाथ न लगा। बहुत देर हो गयी थी, इसलिए वह निराश होकर घर की ओर लौट चला। अचानक उसने एक पेड़ पर एक कबूतरी को बैठे देखा।

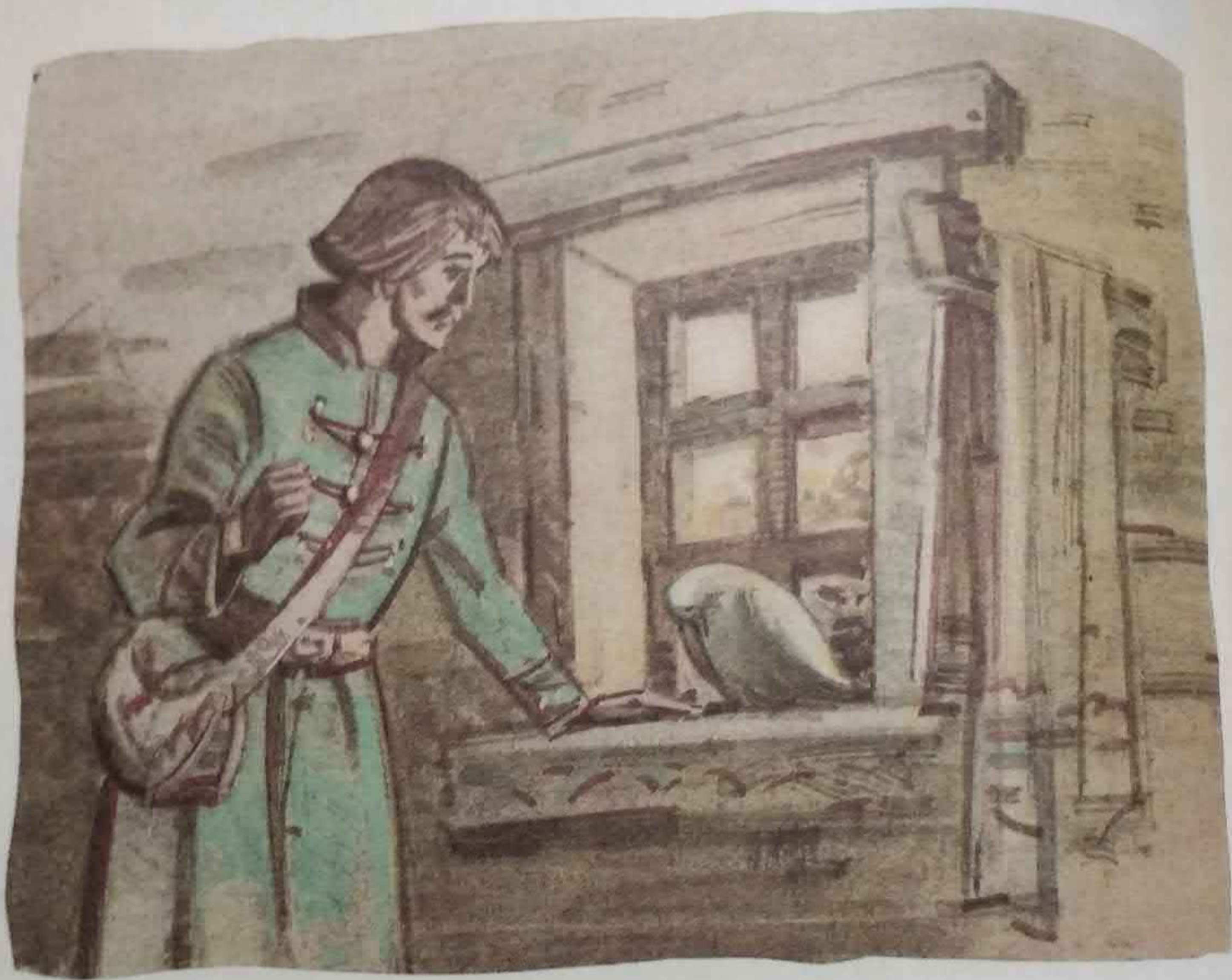
"मैं इसी को क्यों न निशाना बनाऊं?" उसने सोचा।

उसके तीर ने कबूतरी को बींध डाला और वह पेड़ से नीचे धरती पर आ गिरी। अन्द्रेई ने उसे उठा लिया और वह उसकी गर्दन मरोड़कर थैले में डालने ही वाला था कि कबूतरी इन्सान की आवाज़ में बोली:

"मुझे मत मारो, तीरंदाज अन्द्रेई। मेरी गर्दन मत मरोड़ो। मुझे ज़िन्दा घर ले जाओ और खिड़की में रख दो। मगर ध्यान रखना – ज्योंही मैं ऊंघने लगूं, त्योंही ज़ोर से मुझ पर दायां हाथ जमा देना। तुम्हारी क़िस्मत का सितारा चमक उठेगा।"

तीरंदाज़ अन्द्रेई को अपने कानों पर विश्वास न हुआ।

"यह सब क्या है?" उसने सोचा। "यह तो बिल्कुल कबूतरी दिखाई देती है,



फिर भी इन्सान की तरह बातचीत करती है।"

खैर, वह कबूतरी को घर ले गया। उसे खिड़की में बिठाकर स्वयं उसके पास खड़ा हो गया और उसके ऊंघने की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ समय बाद कबूतरी ने अपना सिर पंखों के बीच छिपा लिया और ऊंघने लगी। कबूतरी ने जैसे कहा था, अन्द्रेई ने वैसे ही किया। कबूतरी ज़मीन पर गिरी और गिरकर शाहज़ादी मारिया बन गयी। वह पौ फटने के समय के आसमान-सी सुन्दर थी। शायद ही कभी कोई ऐसी सुन्दरी धरती पर पैदा हुई होगी।

शाहज़ादी मारिया ने अन्द्रेई से कहा :

"तुमने मुझे पकड़ तो लिया, अब अपने साथ रखने की भी व्यवस्था करो। मुझसे शादी कर लो। मैं तुम्हारी ईमानदार तथा प्यारी पत्नी बनकर रहूंगी।"

इस तरह मामला तय हो गया। तीरंदाज़ अन्द्रेई ने शाहज़ादी मारिया से शादी कर ली और वह तथा उसकी पत्नी बहुत ख़ुश-ख़ुश एकसाथ रहने लगे। मगर तीरंदाज़ अब भी अपने कर्त्तव्य को नहीं भूला। पौ फटते ही वह जंगल में जाता, जंगली मुर्ग़ों का शिकार करता और उन्हें शाही रसोई में दे आता।

इसी तरह कुछ समय बीत गया और तब एक दिन शाहज़ादी मारिया बोली:

"हम बहुत ग़रीबी का जीवन बिता रहे हैं, अन्द्रेई!"

"हां, सो तो सच है।"

"अगर तुम कोई सौ रूबल उधार लेकर मुझे उसके रेशमी धागे खरीद ला दो तो मैं कोई ऐसा उपाय करूंगी कि हमारी जिन्दगी सुधर जाये।"

अन्द्रेई ने वही किया जो शाहज़ादी ने कहा था। वह अपने दोस्तों के पास गया, उसने किसी से एक रूबल मांगा, किसी से दो और इसी तरह रक़म इकट्ठी करके रंगबिरंगे रेशमी धागे खरीद लाया। वे धागे उसने अपनी बीवी को दिये। बीवी ने कहा:

"अब जाकर सो जाओ, रात से प्रभात भला। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अन्द्रेई जाकर सो गया और शाहज़ादी मारिया क़ालीन बुनने के लिए बैठ गयी। वह रात भर बुनती रही और उसने उन धागों से ऐसा क़ालीन बुना जैसा कि दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा था। उस क़ालीन पर सारे राज्य की तसवीर बनी हुई थी। उसमें सभी नगर और गांव, सभी वन और खेत, आकाश में उड़ते पक्षी, जंगली दरिन्दे; समुद्र में तैरती मछलियां और चमकते हुए चांद-सूरज दिखाई देते थे।

सुबह होने पर शाहज़ादी मारिया ने क़ालीन अपने पति को दिया और कहा:

"इसे सौदागरों के बाज़ार में जाकर बेच दो। मगर ख्याल रखना कि तुम अपनी तरफ़ से कोई क़ीमत मत बताना, जो कुछ वे दें, वही ले लेना।"

अन्द्रेई ने क़ालीन अपने कंधे पर लटकाया और सौदागरों की दुकानों के सामने घूमने लगा।

उसी वक़्त एक सौदागर दौड़ता हुआ उसके पास आया और कहने लगा:

"भलेमानस, तुम इसकी क्या क़ीमत लोगे?"

"तुम सौदागर हो, तुम्हीं बता दो।"

सौदागर सोचता रहा, सोचता रहा, मगर वह कुछ फ़ैसला न कर सका। तब एक दूसरा सौदागर आया, उसके बाद तीसरा और फिर एक और। जल्द ही वहां सौदागरों

की भीड़ लग गयी। वे सभी क़ालीन को देख-देखकर हैरान होते रहे, पर क़ीमत का फ़ैसला न कर सके।

तभी ज़ार का सलाहकार अपनी गाड़ी में वहां से गुज़रा और भारी भीड़ देखकर उसके मन में जिज्ञासा हुई कि वह मामले की जांच करे। वह गाड़ी से बाहर आया, मुश्किल से भीड़ को चीरता हुआ आगे गया और बोला :

"नमस्कार समुद्र-पार के सौदागरो! यहां क्या हो रहा है?"

"हम इस क़ालीन की क़ीमत निश्चित नहीं कर पा रहे हैं," उन्होंने कहा।

ज़ार के सलाहकार ने क़ालीन देखा तो ठगा-सा रह गया।

"सच-सच बताओ; तीरंदाज़! कहां से मिला तुम्हें यह अद्‌भुत क़ालीन?" उसने पूछा।

"मेरी बीवी ने बुना है," तीरंदाज़ ने जवाब दिया।

"और तुम इसकी कितनी क़ीमत चाहते हो?"

"मैं नहीं जानता। मेरी बीवी ने कहा था कि मैं वही क़ीमत ले लूं जो दी जाये।"

"तो ये रहे दस हज़ार रूबल, तीरंदाज़।"

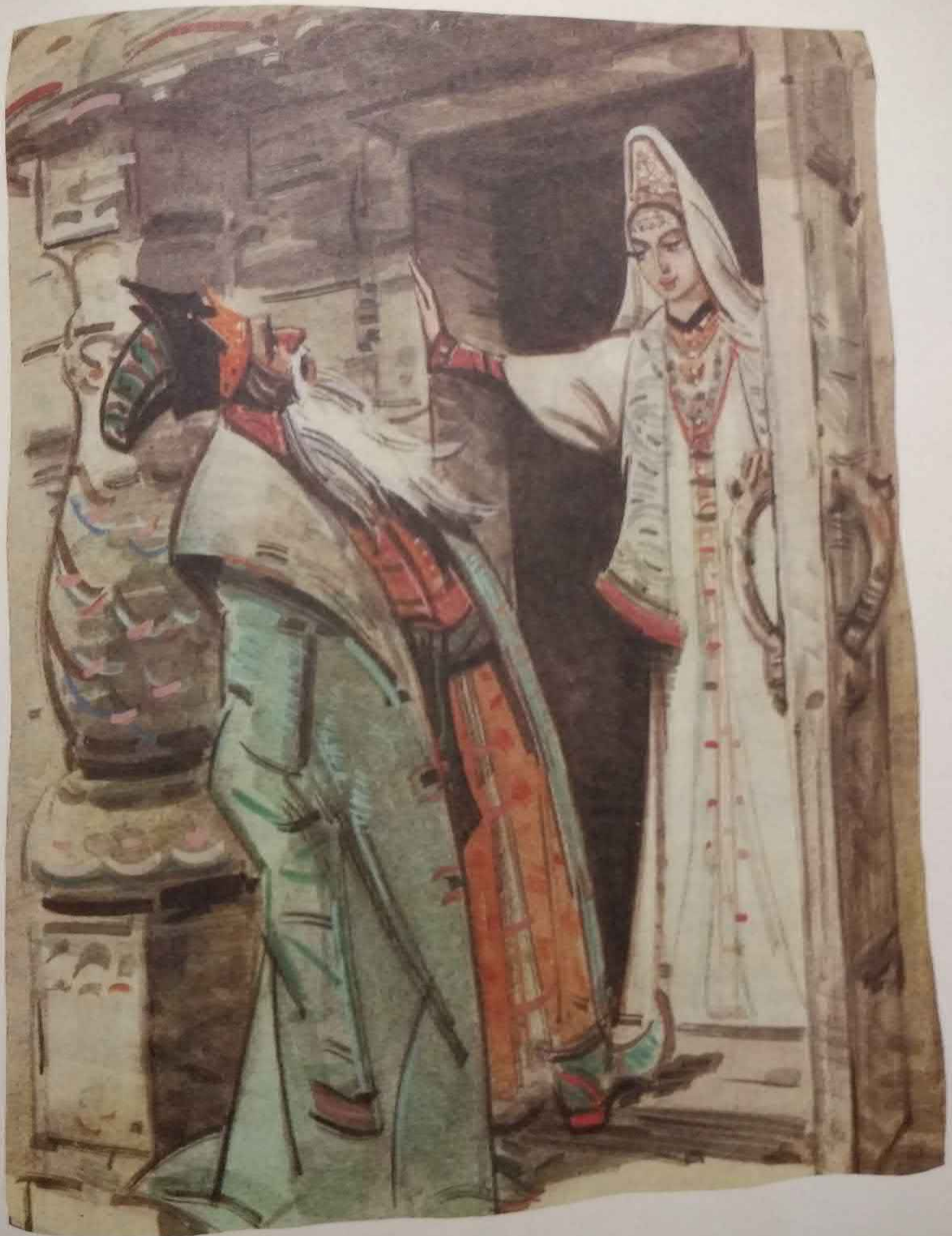
अन्द्रेई ने रूबल लिये और क़ालीन देकर घर चला गया। ज़ार का सलाहकार महल में पहुंचा और उसने वह क़ालीन ज़ार को दिखाया।

ज़ार अपनी आंखों के सामने सारे राज्य का चित्र देखकर दंग रह गया। कुछ देर के लिए तो मानो उसकी सांस चलनी बन्द हो गयी।

"तुम जो भी चाहो, कहो, मगर मैं तुम्हें यह क़ालीन वापस नहीं दूंगा!" ज़ार ने कहा।

उसने बीस हज़ार रूबल निकालकर सलाहकार को सौंप दिये। सलाहकार ने रक़म ले ली और सोचा : "कोई बात नहीं, मैं अपने लिए इससे भी बेहतर क़ालीन बनवा लूंगा।"

वह अपनी गाड़ी में सवार होकर नगर की उस छोटी-सी बस्ती में पहुंचा जहां तीरंदाज़ रहता था। उसने तीरंदाज़ अन्द्रेई की झोंपड़ी खोज निकाली और दरवाज़े पर दस्तक दी। शाहजादी मारिया ने दरवाज़ा खोला। ज़ार के सलाहकार का एक पांव दहलीज़ के ऊपर था और दूसरा नीचे ही जमकर रह गया। वह तो जैसे सकते में आ गया। उसकी ज़बान से एक शब्द भी नहीं फूटा और वह इतना भी भूल गया कि किसलिए यहां आया है। उसके सामने एक ऐसी सुन्दरी खड़ी थी कि अगर वह ज़िन्दगी भर उसे देखता रहता तो भी शायद उसकी आंखों की प्यास न बुझती।



शाहज़ादी मारिया ने कुछ देर इन्तज़ार किया और जब वह कुछ भी न बोला तो उसने उसको कन्धे से पकड़कर घुमा दिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया। थोड़ी देर बाद सलाहकार ने अपने को सम्भाला और खोया-सा घर लौट आया। मगर उस दिन के बाद वह खाना-पीना भूल गया और हर समय तीरंदाज़ की पत्नी की याद में डूबा रहने लगा।

ज़ार ने देखा कि उसका सलाहकार परेशान रहता है तो उससे इसका कारण पूछा।

"आह, हुज़ूर, कुछ दिन हुए मैंने तीरंदाज़ अन्द्रेई की पत्नी देखी थी। यूं कहिये कि दिल निकालकर ले गयी। किसी तरह भी उसे अपने मन से नहीं निकाल पाता हूं। उसने तो मुझ पर जादू-टोना-सा कर दिया है।"

तब ज़ार ने सोचा कि वह भी तीरंदाज़ की बीवी को देखेगा। उसने साधारण कपड़े पहने और नगर की उसी बस्ती में जा पहुंचा। उसने वह झोंपड़ी खोज ली जहां तीरंदाज़ अन्द्रेई रहता था और वहां पहुंचकर दरवाज़े पर दस्तक दी। शाहज़ादी मारिया ने दरवाज़ा खोला। ज़ार ने अपना एक पांव दहलीज़ पर रखा, मगर दूसरा नीचे ही गड़ा-सा रह गया। वह ठगा, ठगा-सा, टकटकी बांधे उस परी को देखता रहा।

शाहज़ादी मारिया ने कुछ देर इन्तज़ार किया, इन्तज़ार किया और जब वह कुछ भी न बोला तो उसने उसको कन्धे से पकड़कर घुमा दिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया।

ज़ार इसका दीवाना हो गया। "मैं अकेले जीवन क्यों बिताऊं?" उसने सोचा। "मुझे तो ऐसी सुन्दर दुलहन मिल सकती है। इसे तो रानी होना चाहिए न कि तीरंदाज की बीवी।"

जब वह वापस महल में पहुंचा तो शैतान ने उसके दिमाग़ को आ घेरा। उसने तीरंदाज़ की बीवी छीन लेने का इरादा बनाया। उसने अपने सलाहकार को बुलाया और कहा:

"अन्द्रेई तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का कोई तरीक़ा सोचो। मैं उसकी बीवी से शादी करना चाहता हूं। अगर तुम मेरी मदद करोगे तो मैं तुम्हें इनाम में कुछ नगर, गांव और सोना भी दूंगा। पर अगर मदद नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर कटवा दूंगा।"

सलाहकार बुरी तरह परेशान रहने लगा। तीरंदाज से छुटकारा पाने का उसे कोई उपाय न सूझा और इसलिए वह शराब पीकर अपना ग़म गलत करने के लिए एक शराबख़ाने में पहुंचा।

उसी शराबखाने में मांग-मांगकर शराब पीनेवाला एक पियक्कड़, फटा कफ़्तान पहने हुए उसके पास आया और बोला:

"तुम किसलिए इतने परेशान हो, ज़ार के सलाहकार?"

"जाओ यहां से, शराबी कीड़े!"

"मुझे दुतकारने के बजाय शराब का एक जाम पिला दो तो मैं तुम्हें कुछ नेक सलाह दूं।"

ज़ार के सलाहकार ने उसे शराब का एक गिलास दिया और उसे अपनी मुसीबत बतायी।

"तीरंदाज़ अन्द्रेई बहुत सीधा-सादा आदमी है," पियक्कड़ ने कहा, "अगर उसकी पत्नी भी भोली-भाली हुई तो उससे बहुत आसानी से छुटकारा पाया जा सकेगा। हमें कुछ ऐसी तरकीब सोचनी चाहिए जो उसकी भी समझ पर पत्थर डाल दे। जाओ, जाकर ज़ार से कहो कि अन्द्रेई को दूसरी दुनिया में यह मालूम करने के लिए भेज दे कि उसके स्वर्गीय पिता – बूढ़े ज़ार – का वहां क्या हाल-चाल है। अन्द्रेई वहां गया तो बस, वहीं का होकर रह जायेगा।"

ज़ार के सलाहकार ने उस शराबी कीड़े को धन्यवाद दिया और उलटे पांव ज़ार के पास भागा।

"मैंने तीरंदाज़ से छुटकारा पाने का एक रास्ता ढूंढ़ निकाला है, मेरे अन्नदाता!" उसने कहा।

इसके बाद उसने ज़ार को अपनी तरकीब बतायी। ज़ार बेहद खुश हुआ और उसने उसी समय अन्द्रेई तीरंदाज़ को बुलवा भेजा।

"सुनो अन्द्रेई," उसने कहा, "तुमने बहुत वफ़ादारी से आज तक मेरी खिदमत की है। अब मैं तुम्हें एक और ज़रूरी काम सौंपता हूं। दूसरी दुनिया में जाकर यह मालूम करो कि मेरे पिता जी का वहां कैसा हाल-चाल है। अगर तुम नहीं जाओगे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

परेशान-हाल अन्द्रेई घर लौटकर एक बेंच पर बैठ गया।

"तुम इतने उदास क्यों हो? क्या कोई मुसीबत सिर पर आ पड़ी है?" शाहज़ादी मारिया ने पूछा।

अन्द्रेई ने उसे ज़ार का आदेश सुनाया।

"यह भी कोई परेशानी की बात है!" शाहज़ादी मारिया ने कहा। "बहुत मामूली बात है। असली काम तो अभी आगे आयेगा। अब जाकर सो जाओ, रात से प्रभात



भला। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अगली सुबह अन्द्रेई ज्योंही उठा, शाहज़ादी मारिया ने उसे रूबलों से भरा थैला और सोने की अंगूठी दी।

"ज़ार के पास जाओ और उसे यह कहो कि वह तुम्हारे साथ अपने सलाहकार को भी दूसरी दुनिया में भेज दे, ताकि वह इस बात की गवाही दे सके कि तुम सचमुच ही दूसरी दुनिया में हो आये हो। अपने हमराही के साथ जाते हुए इस अंगूठी को अपने

सामने फेंक देना। यह तुम्हें रास्ता दिखाती जायेगी।"

अन्द्रेई ने रस्कों से भरा थैला और अंगूठी लेकर अपनी बीवी को अलविदा कहा। वह सलाहकार को साथ लेने के लिए ज़ार के पास पहुंचा। ज़ार इन्कार न कर सका।

इस तरह वे दोनों वहां से रवाना हुए। अन्द्रेई ने अंगूठी नीचे फेंकी और वह लुढ़कती हुई आगे-आगे जाने लगी। उस अंगूठी के पीछे-पीछे चलते हुए उसने खुले मैदान, दलदलें, झीलें और नदियां पार कीं। ज़ार का सलाहकार भी गिरता-पड़ता पीछे-पीछे चलता जाता था।

जब वे चलते-चलते थक जाते तो कुछ रस्क खा लेते और फिर आगे चल देते।

वे बहुत चले या थोड़ा चले, बहुत दूर गये या थोड़ी दूर – यह कहना मुश्किल है, मगर अन्त में वे एक घने जंगल में पहुंचे और एक घाटी में उतरे। वहां जाकर अंगूठी रुक गयी।

अन्द्रेई और ज़ार के सलाहकार ने वहां बैठकर कुछ रस्क खाये। तभी उन्होंने क्या देखा कि बूढ़ा ज़ार जलाने की लकड़ी से भरा हुआ एक बड़ा-सा ठेला खींच रहा है। बोझ से उसकी कमर दोहरी हुई जा रही थी और वह बुरी तरह हांफ रहा था।



दो शैतान, एक दाईं ओर से और दूसरा बाईं ओर से उसे छड़ियों से मार-मारकर चला रहे थे।

"देखो," अन्द्रेई ने कहा, "वह ज़ार का मृत पिता तो नहीं है?"

"हां, हां, वही तो है," सलाहकार ने कहा।

"श्रीमान शैतानो," अन्द्रेई ने चिल्लाकर कहा, "उस मृतक को कुछ समय के लिए छोड़ दो, मैं उससे कुछ बातें करना चाहता हूं।"

"तुम्हारे ख़्याल में हमारे पास रुकने और इन्तज़ार करने का समय है?" शैतानों ने जवाब दिया। "यह लकड़ी कौन ढोयेगा? हम तो यह बोझ ढोने से रहे?"

"मेरे साथ यह एक आदमी है। अगर तुम चाहो तो यह उसकी जगह ले सकता है," अन्द्रेई ने कहा।

इस तरह शैतानों ने बूढ़े ज़ार को अलग करके उसकी जगह सलाहकार को ठेले में जोत दिया। तब उन्होंने उसे छड़ियां मारनी शुरू कीं, एक ने बाईं ओर से और दूसरे ने दाईं ओर से। सलाहकार दोहरा होकर पूरे ज़ोर से ठेला खींचने लगा।

अन्देई ने बूढ़े ज़ार से पूछा कि उसकी ज़िन्दगी कैसी चल रही है।

"ओह, तीरंदाज़ अन्द्रेई," ज़ार ने कहा, "इस दुनिया में मेरा बहुत बुरा हाल है! मेरे बेटे को मेरी याद दिलाना और कहना कि लोगों से बुरा बर्ताव न करे, वरना यहां आने पर उसकी भी मेरी जैसी बुरी हालत होगी।"

उनकी बातचीत अभी ख़त्म हुई ही थी कि शैतान ख़ाली गाड़ी लिये वापस लौट आये। अन्द्रेई ने बूढ़े ज़ार से विदा ली। सलाहकार भी उसके साथ हो लिया और वे दोनों घर की ओर चल दिये।

कुछ अरसे बाद वे स्वदेश लौटे और महल में गये। ज़ार ने जब तीरंदाज़ को देखा तो गुस्से से बौखला उठा।

"तुम वापस किस तरह लौट आये?"

"मैं दूसरी दुनिया में आपके पिता से मिल आया हूं। उन्होंने आपके लिए अपना प्यार भेजा है और कहा है कि अगर आप उनकी भांति दूसरी दुनिया में अपनी दुर्गति करवाना नहीं चाहते तो लोगों से बुरा बर्ताव करना छोड़ दें।"

"और तुम यह साबित कैसे करोगे कि तुम दूसरी दुनिया में हो आये हो और मेरे पिता से मिल आये हो?"

"इस बात के सबूत हैं वे निशान जो शैतानों की छड़ियों ने आपके सलाहकार की पीठ पर छोड़े हैं।"

ज़ार के लिए यह काफ़ी बड़ा सबूत था। इसलिए उसे अन्द्रेई को छोड़ना ही पड़ा। इसके सिवा वह कर भी क्या सकता था? तब उसने अपने सलाहकार से कहा:

"अगर तुम इस तीरंदाज़ से छुटकारा पाने की कोई दूसरी तरकीब नहीं खोजोगे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

सलाहकार को इस बार पहले से भी अधिक परेशानी हुई। वह शराबखाने में जाकर एक मेज़ पर बैठ गया और उसने शराब लाने का आदेश दिया। तभी वह पियक्कड़ उसके पास आ पहुंचा और कहने लगा:

"क्या बात है, तुम इतने परेशान क्यों हो, ज़ार के सलाहकार? मुझे शराब का एक जाम पिलाओ। मैं तुम्हें कोई नेक सलाह दूंगा।"

सलाहकार ने उसे शराब का जाम दिया और उसे अपनी मुसीबत बतायी।

"कोई फ़िक्र मत करो," पियक्कड़ ने कहा, "अभी जाकर ज़ार से कहो कि तीरंदाज़ को यह काम करने के लिए कहे – यह एक ऐसा काम है जिसे करना तो एक तरफ़, सोचना भी मुश्किल है: तीरंदाज़ को नौ-तिया-सत्ताईस देशों और दस-तिया-तीस राज्यों के पार जाकर लोरी गानेवाला बिल्ला लाने के लिए कहा जाये।"

सलाहकार दौड़ता हुआ ज़ार के पास पहुंचा और उसे बताया कि वह किस तरह तीरंदाज़ से छुटकारा पा सकता है। ज़ार ने अन्द्रेई को बुलवाया।

"सुनो अन्द्रेई, तुमने मेरी एक ख़िदमत तो की, अब दूसरी भी करो। नौ-तिया-सत्ताईस देशों और दस-तिया-तीस राज्यों के पार जाकर लोरी गानेवाला बिल्ला लाओ। अगर नहीं लाये तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

अन्द्रेई मुंह लटकाये हुए घर पहुंचा। उसने अपनी बीवी को बताया कि ज़ार ने उसे क्या नया हुक्म दिया है।

"कुछ फ़िक्र मत करो!" शाहज़ादी मारिया ने कहा, "बहुत मामूली काम है। असली काम तो अभी आयेगा। अब जाकर सो जाओ, रात से प्रभात भला। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अन्द्रेई सो गया तो शाहज़ादी मारिया एक लुहार के पास पहुंची। उसने उसे लोहे की तीन टोपियां, एक संडसी और तीन छड़ियां बनाने के लिए कहा – एक लोहे की, दूसरी तांबे की और तीसरी टीन की।

अगले दिन मारिया ने अन्द्रेई को तड़के ही जगाया:

"ये तीन टोपियां, एक संडसी और तीन छड़ियां हैं – नौ-तिया-सत्ताईस देशों और दस-तिया-तीस राज्यों के पार चले जाओ। वहां पहुंचने से एक कोस पहले तुम्हें

बेहद नींद आयेगी – इसका कारण वह टोना होगा जो लोरी गानेवाला बिल्ला तुम पर करेगा। मगर तुम सोना नहीं। अपने हाथों को पीटना, पैरों को घसीटना और अगर जरूरत हो तो ज़मीन पर लुढ़कने लगना। अगर तुम सो गये तो समझो कि जान गयी – वह बिल्ला तुम्हें मार डालेगा।"

शाहजादी मारिया ने उसे बताया कि वह क्या करे, कैसे करे और तब उसे उसकी मुहिम के लिए विदा किया।

कहानी सुनने-सुनाने में तो देर नहीं लगती, मगर काम करने में देर लगती है। अन्त में अन्द्रेई दस-तिया-तीस राज्य में पहुंचा। मंज़िल से एक कोस इधर ही उसे नींद आने लगी। उसने लोहे की तीनों टोपियां सिर पर ओढ़ लीं, हाथों को पीटने लगा पैरों को घसीटा और फिर ज़मीन पर लुढ़कता भी रहा।

जैसे-तैसे वह जागता रहा। अन्त में वह एक ऊंचे खम्भे के पास पहुंच गया।

लोरी गानेवाले बिल्ले ने अन्द्रेई को देखा तो लगा गुर्राने और वह खम्भे से सीधा उसके सिर पर झपटा। उसने पहली टोपी और फिर दूसरी भी तोड़ डाली और फिर तीसरी तोड़ने ही वाला था जब अन्द्रेई ने उसे संडसी से पकड़कर नीचे गिरा दिया और छड़ियों से उसकी मरम्मत करने लगा। पहले उसने उसे लोहे की छड़ी से पीटा जो टूट गयी; फिर तांबे की छड़ी से उसकी ख़ूब ख़बर ली तो वह भी टूट गयी। अन्त में वह टीन की छड़ी से उसे पीटने लगा।

टीन की छड़ी मुड़ जाती, मगर टूटने का नाम न लेती – सिर्फ़ उसके शरीर के गिर्द घेरा डाल लेती। जिस समय अन्द्रेई उसे पीटता तो बिल्ला उसे पादरियों और पादरियों की बेटियों के बारे में काल्पनिक कहानियां सुनाता जाता। मगर अन्द्रेई तो जैसे कान में तेल डाले हुए था। वह पूरी ताक़त से उसे पीटता रहा।

लोरी गानेवाला बिल्ला अन्द्रेई की पिटाई की ताब न ला सका और यह देखकर कि उसका छलपूर्ण टोना भी बेकार रहा है, वह गिड़गिड़ाने और प्रार्थना करने लगा:

"मुझे छोड़ दो, भले आदमी, तुम जो भी चाहोगे, मैं वही करूंगा।"

"मेरे साथ चलने को तैयार हो?"

"हां, जहां भी तुम चाहो।"

अन्द्रेई बिल्ले को साथ लेकर घर की ओर चल दिया। अपने देश पहुंचकर बिल्ले को साथ लिये हुए वह ज़ार के महल में हाज़िर हुआ। उसने ज़ार से कहा:

"मैं आपका हुक्म बजा लाया हूं। यह लीजिये लोरी गानेवाला बिल्ला।"

ज़ार को अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ।

"अच्छा, बिल्ले, मुझे अपनी ताक़त दिखाओ," उसने कहा।

इस पर बिल्ले ने अपने नाख़ून तेज़ करते हुए ज़ार पर अपनी नज़र टिका दी। वह उसकी गोरी छाती चीरकर उसका धड़कता हुआ दिल बाहर निकालने के लिए बेचैन हो रहा था।

ज़ार की तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी।

"कृपया इसे शान्त करो, अन्द्रेई!" उसने कहा।

अन्द्रेई ने बिल्ले को शान्त करके पिंजरे में बन्द कर दिया, तब वह शाहजादी मारिया के पास अपने घर गया। वे दोनों ख़ुशी से रहते रहे। मगर ज़ार के लिए तो घड़ी-घड़ी, पल-पल भारी होने लगा। वह अपने दिल की रानी के बिना जिये तो कैसे? एक दिन उसने फिर सलाहकार को बुलवा भेजा।

"जैसे भी हो, अन्द्रेई तीरंदाज़ से छुटकारा पाने की कोई न कोई तरकीब निकालनी होगी। अगर ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

ज़ार का सलाहकार सीधा शराबख़ाने में पहुंचा। उसने फटा कफ़्तान पहने हुए उसी पियक्कड़ को ढूंढ़ा और उसे अपनी मुसीबत बतायी। पियक्कड़ ने शराब का एक गिलास पिया, मूंछों पर हाथ फेरा और कहा :

"जाकर ज़ार से कहो कि अन्द्रेई तीरंदाज़ को वहां – न जाने कहां, उसे – न जाने किसे लाने के लिए भेज दे। यह काम अन्द्रेई कभी पूरा नहीं कर पायेगा और इसलिए कभी वापस नहीं आयेगा।"

सलाहकार दौड़ता हुआ उलटे पांव ज़ार के पास गया और उसे सब कुछ ज्यों का त्यों जा बताया। ज़ार ने अन्द्रेई को बुलवा भेजा।

"तुमने मेरे दो काम तो कर दिये, अब तीसरा भी कर दो," उसने कहा। "जाओ वहां – न जाने कहां, लाओ उसे – न जाने किसे! अगर तुम यह कर दोगे तो मैं तुम्हें बहुत अच्छा इनाम दूंगा और अगर नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

अन्द्रेई घर गया और बेंच पर बैठकर रोने लगा।

"तुम रोते क्यों हो, मेरे प्यारे?" शाहज़ादी मारिया ने पूछा। "इस बार क्या बहुत ही बड़ी मुसीबत आ पड़ी है?"

"ओह," उसने कहा, "तुम्हारा रूप मेरी तबाही का कारण बनेगा। ज़ार ने कहा कि जाओ वहां – न जाने कहां, लाओ उसे – न जाने किसे।"

"हां, अब यह सचमुच मुश्किल काम है। पर ख़ैर, कोई बात नहीं, तुम अब जाकर



सो जाओ। रात से प्रभात भला। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

आधी रात होने पर शाहज़ादी मारिया ने अपनी जादू-टोनों की किताब खोली। उसने उसे शुरू से अन्त तक बड़े ध्यान से पढ़ा। किताब एक तरफ़ फेंककर वह सिर हाथों में थामकर बैठ रही। किताब में इस काम को पूरा करने की कोई तरकीब नहीं थी। तब उसने ओसारे में जाकर अपना रूमाल हिलाया। सभी तरह के जानवर और परिन्दे झटपट वहां आ पहुंचे।

"जंगल के जानवरो और आकाश के परिन्दो!" उसने कहा। "जानवरो, तुम हर जगह घूमते हो, परिन्दो, तुम हर जगह उड़ते-फिरते हो – शायद तुम मुझे यह बता सकते हो कि वहां – न जाने कहां किधर है और उसे – न जाने किसे को कैसे लाया जा सकता है?"

जानवरों और पक्षियों ने जवाब दिया:

"नहीं, शाहज़ादी मारिया, हमें यह मालूम नहीं है।"

शाहज़ादी मारिया ने फिर एक बार रूमाल हिलाया और जानवर तथा परिन्दे वहां से ऐसे ग़ायब हो गये जैसे वे वहां थे ही नहीं। रूमाल के तीसरी बार हिलाये जाने पर वहां दो जिन प्रकट हुए।

"आप क्या चाहती हैं? आपकी क्या इच्छा है?"

"मेरे वफ़ादार नौकरो, मुझे

महासागर के मध्य में ले चलो।"

शाहज़ादी मारिया को उठाकर दोनों जिन महासागर में जा पहुंचे और गहरे पानी के बिल्कुल बीच में खड़े हो गये। वहां वे दो ऊंचे स्तम्भों की भांति खड़े हुए शाहज़ादी मारिया को अपनी बांहों में थामे रहे। शाहज़ादी मारिया ने रूमाल हिलाया। सभी मछलियां और समुद्री जीव-जन्तु उसके पास आ गये।

"मछलियो और समुद्री जीव-जन्तुओ, तुम हर जगह तैरते-फिरते हो और सभी द्वीपों से परिचित हो – शायद तुम मुझे यह बता सकते हो कि वहां – न जाने कहां किधर है और उसे – न जाने किसे को कैसे लाया जा सकता है?"

"नहीं, शाहज़ादी मारिया, हम तो इसके बारे में कुछ भी नहीं जानते।"

शाहज़ादी मारिया निराशा हो गयी। उसने जिनों से कहा कि उसे वापस घर ले चलें। वे उसे वापस घर ले गये और दरवाज़े पर छोड़ दिया।

अगली सुबह को शाहज़ादी मारिया ने अन्द्रेई को सफ़र के लिए तैयार किया। उसने उसे सूत का एक गोला और कसीदा कढ़ा हुआ एक तौलिया दिया।

"सूत के इस गोले को अपने सामने फेंक देना और जिधर यह जाये, तुम भी उधर ही चलते जाना," उसने कहा, "और जहां भी तुम्हें हाथ-मुंह धोना पड़े तो मेरे दिये हुए तौलिये के सिवा कोई दूसरा तौलिया इस्तेमाल मत करना।"

अन्द्रेई ने शाहज़ादी मारिया को अलविदा कहा, चारों दिशाओं को प्रणाम किया और नगर से बाहर निकल गया। उसने सूत का गोला अपने सामने फेंका। वह जिधर लुढ़कता, अन्द्रेई भी उधर ही चलता जाता।

कहानी सुनने-सुनाने में तो देर नहीं लगती, मगर काम करने में देर लगती है। वह बहुत-से राज्यों और पराये देशों में से गुज़रा। गोला लुढ़कता गया, लुढ़कता गया और धागा खुलता गया। होते-होते वह मुर्ग़ी के सिर जैसा छोटा-सा रह गया और अन्त में इतना छोटा हो गया कि



दिखाई भी मुश्किल से देता ... अन्द्रेई एक जंगल में पहुंच चुका था जहां उसने मुर्ग़ी के पंजों पर खड़ी हुई एक झोंपड़ी देखी।

"झोंपड़ी, झोंपड़ी, अपनी पीठ जंगल की तरफ़ और मुंह मेरी तरफ़ कर ले!" अन्द्रेई ने कहा।

झोंपड़ी ने मुंह उसकी तरफ़ कर लिया। वह भीतर गया। वहां उसने पके बालोंवाली एक बूढ़ी ढड्ढो देखी जो अपने सामने चरखी रखे, सन कात रही थी।

"ओह, आदम बू, आदम बू! आदमी पहले कभी नहीं मिला, आज दरवाज़े पर खड़ा है। कौन है? कहां से आया है? किधर जायेगा? मैं तुम्हें ज़िन्दा भून डालूंगी, खा जाऊंगी और तुम्हारी हड्डियों पर सवारी करूंगी।"

"छिः-छिः, बाबा-यगा, एक मुसाफ़िर को खाने की बात कर रही है," अन्द्रेई ने कहा। "मुसाफ़िर गंदा और हड़ीला है। पहले गुसलखाने में चूल्हा जलाकर पानी गर्म करो, मुझे नहाने और गर्म होने दो, फिर खा लेना।"

तब बाबा-यगा ने नहाने का पानी गर्म किया। अन्द्रेई नहाया और अच्छी तरह गर्म हुआ। इसके बाद जिस्म पोंछने के लिए उसने अपनी पत्नी का दिया हुआ तौलिया बाहर निकाला।

"यह तौलिया तुम्हें कहां से मिला?" बाबा-यगा ने पूछा। "इस पर जो क़सीदे का काम है, वह तो मेरी बेटी का किया हुआ है।"

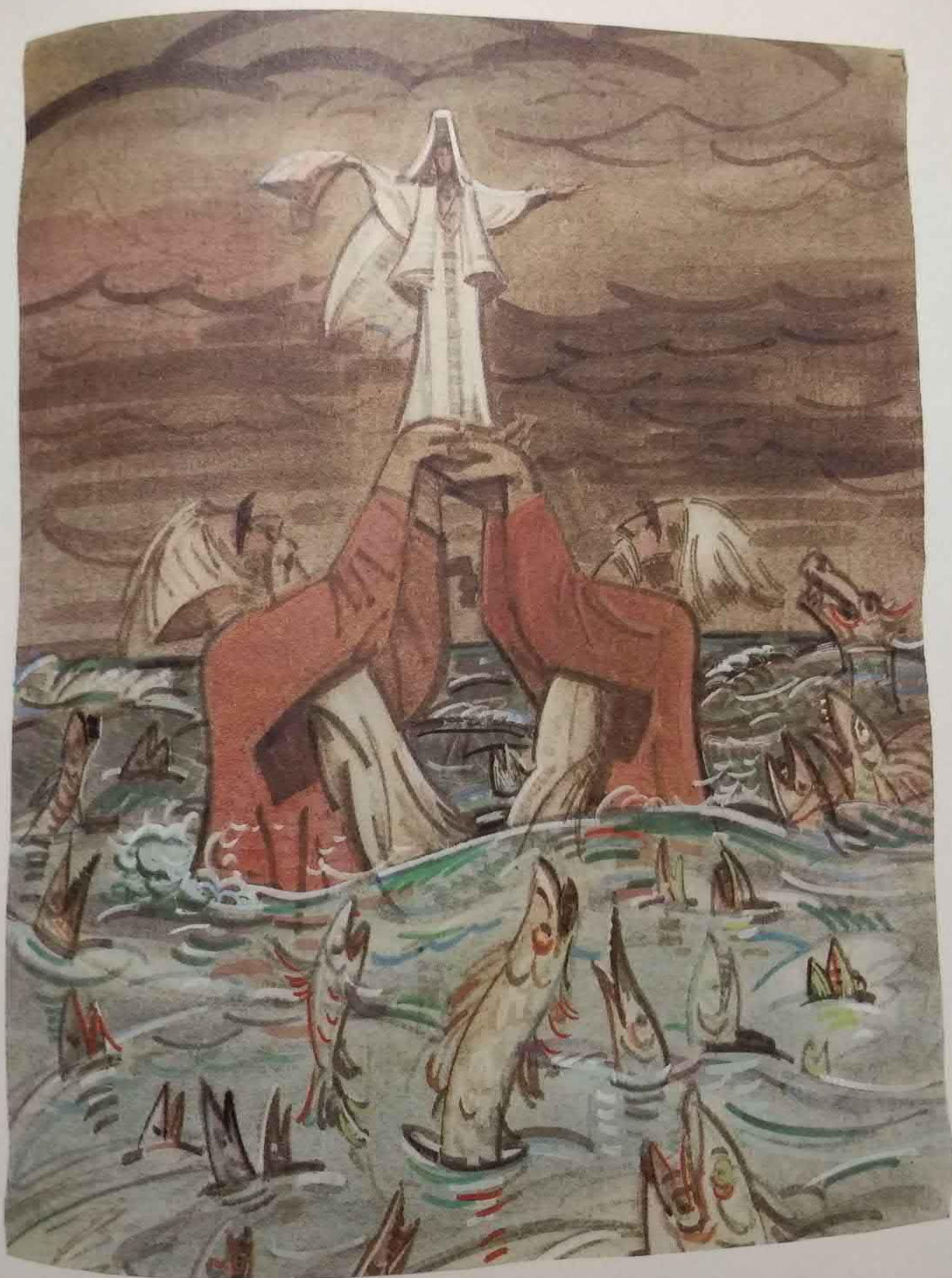
"तुम्हारी बेटी मेरी बीवी है। यह तौलिया उसी ने मुझे दिया था।"

"ओहो, जमाई राजा, मैं तुम्हारा स्वागत करती हूं। मैं कैसे तुम्हारी आवभगत करूं?"

बाबा-यगा ने जल्दी-जल्दी हाथ-पांव हिलाये और सभी तरह के खाने और शराबें वग़ैरह मेज़ पर इकट्ठी कर दीं। अन्द्रेई ने कोई आपत्ति न की और खाने में जुट गया। बाबा-यगा उसके पास बैठकर पूछने लगी कि उसने शाहज़ादी मारिया से किस तरह शादी की और यह कि क्या वे दोनों सुखी जीवन बिता रहे हैं? अन्द्रेई ने उसे सब कुछ बताया और यह भी कहा कि किस तरह ज़ार ने उसे वहां – न जाने कहां और उसे – न जाने किसे लाने का आदेश दिया है।

"दादी मां! काश, तुम मेरी कुछ मदद करो!" उसने कहा।

"ओ मेरे प्यारे जमाई, अचम्भे की यह बात मैंने तो कभी नहीं सुनी। इसे तो केवल एक बूढ़ी मेंढकी जानती है जो तीन सौ वर्षों से दलदल में रह रही है। पर



ख़ैर, कोई बात नहीं, तुम सो जाओ। रात से प्रभात भला। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अन्द्रेई सो गया और बाबा-यगा ने दो झाड़ुएं लीं। वह उड़कर दलदल के पास पहुंची। वहां जाकर उसने ज़ोर से पुकारा:

"बूढ़ी मां-मेंढकी, क्या तुम अभी भी जिन्दा हो?"

"हां, ज़िन्दा हूं।"

"तब फुदककर दलदल से बाहर आ जाओ।"

बूढ़ी मेंढकी फुदककर दलदल से बाहर आयी तो बाबा-यगा ने कहा:

"तुम जानती हो वहां – न जाने कहां, यह जगह किधर है?"

"जानती हूं।"

"तो मेहरबानी करके मुझे उसका पता बता दो। मेरे दामाद को 'जाओ वहां – न जाने कहां, लाओ उसे – न जाने किसे' यह काम पूरा करने की आज्ञा दी गयी है।"

"मैं तो ख़ुद ही उसे वहां ले जाती, मगर क्या करूं, मैं बहुत बूढ़ी हूं और वह जगह काफ़ी दूर है," मेंढकी ने कहा। "अपने दामाद से कहो कि वह मुझे ताज़ा दूध के मर्तबान में डालकर जलते दरिया तक ले चले। वहां मैं उसे रास्ता बता दूंगी।"

बाबा-यगा बूढ़ी मेंढकी को साथ लेकर उड़ती हुई घर पहुंची। उसने एक मर्तबान में ताज़ा दूध दुहकर मेंढकी को उसमें डाल दिया। अगली सुबह उसने अन्द्रेई को जगाया।

"मेरे प्यारे जमाई, यह मर्तबान है और इसके अन्दर है मेंढकी," उसने कहा। "कपड़े पहनकर मेरे घोड़े पर सवार हो जाओ और जलते दरिया के किनारे जा पहुंचो। घोड़े को वहीं छोड़कर तुम मर्तबान से मेंढकी को बाहर निकाल लेना। वह तुम्हें रास्ता बता देगी।"

अन्द्रेई ने कपड़े पहनकर मर्तबान लिया और बाबा-यगा के घोड़े पर सवार हो गया। यह कहना मुश्किल है कि उसने बहुत देर तक घोड़े की सवारी की, या थोड़ी देर तक, मगर अन्त में वे जलते दरिया के किनारे जा पहुंचे। उस नदी को न तो कोई जानवर पार कर सकता था, न कोई पक्षी ही उड़कर दूसरी तरफ़ जा सकता था।

अन्द्रेई घोड़े से नीचे उतरा तो मेंढकी ने कहा:

"वीर युवक, मुझे मर्तबान से बाहर निकाल लो। हमें यह दरिया पार करना होगा।"

अन्द्रेई ने मेंढकी को मर्तबान से बाहर निकालकर ज़मीन पर रख दिया।

"वीर युवक, अब मेरी पीठ पर सवार हो जाओ।"

"ओह, पर तुम तो इतनी छोटी हो, दादी मेंढकी! मैं तुम्हें कुचल डालूंगा।"

"इसकी फ़िक्र मत करो। मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मुझे कसकर पकड़ लो।"

अन्द्रेई मेंढकी की पीठ पर बैठ गया। मेंढकी ने फूलना शुरू किया। वह फूलती गयी, फूलती गयी और अन्त में सूखी घास की एक गंजी के आकार की हो गयी।

"तुम मुझे अच्छी तरह पकड़े हुए हो न?" उसने पूछा।

"हां, दादी मां।"

बूढ़ी मेंढकी और फूलती गयी और इस बार सूखी घास के एक बड़े गंज जितनी ऊंची हो गयी।

"तुम मुझे अच्छी तरह पकड़े हुए हो न?"

"हां, दादी मां।"

वह और फूलती गयी और इस बार अंधेरे जंगल से भी बड़े आकार की हो गयी। तब एक ही छलांग में वह जलता दरिया लांघ गयी। पार जाकर वह फिर अपने असली रूप में आ गयी।

"इस पगडंडी पर चलते जाओ, वीर युवक। कुछ दूर जाकर तुम्हें चबूतरे पर खड़ा हुआ लकड़ी का एक मकान दिखाई देगा जो वास्तव में न तो घर है, न झोंपड़ा और न अन्न-भण्डार ही, बल्कि सभी का मिला-जुला रूप है। तुम भीतर जाकर अलावघर के पीछेवाले कोने में खड़े हो जाना। वहीं तुम पाओगे उसे – न जाने किसे।"

अन्द्रेई उस पगडंडी पर चलता गया। वहां उसने एक पुराना झोंपड़ा देखा जो कि वास्तव में झोंपड़ा नहीं था। इसमें न तो कोई खिड़की थी, न ही कोई ओसारा। इसके चारों ओर एक ऊंचा घेरा बना हुआ था। वह भीतर जाकर अलावघर के पीछेवाले कोने में छिप गया।

थोड़ी देर बाद जंगल में भारी शोर और गड़गड़ाहट हुई। इसके फ़ौरन बाद वहां एक बौना आया जिसकी दाढ़ी थी एक हाथ लंबी। अन्दर आते ही वह ज़ोर से चिल्लाया:

"ए भाई नऊम, मैं भूखा हूं!"

उसके मुंह से शब्द निकलते ही वहां, न जाने कहां से, एक मेज़ सामने आ गयी। उस मेज़ पर बियर का एक पीपा, भुना हुआ बैल और उसकी बगल में एक तेज़ छुरी दिखाई दी। एक हाथ लंबी दाढ़ीवाला बौना बैल के मांस के सामने बैठकर उसे तेज़

छुरी से काटने, लहसुन में मिलाकर जल्दी-जल्दी खाने और सराहने लगा।

वह सारे का सारा बैल खा गया और बियर का पीपा पी गया।

"ए, भाई नऊम, जूठन साफ़ कर डालो!"

और तभी वहां से मेज़ इस तरह ग़ायब हो गयी जैसे कभी थी ही नहीं। हड्डियां, पीपा सभी कुछ ग़ायब हो गया... अन्द्रेई ने बौने के जाने का इन्तज़ार किया। इसके बाद वह अलावघर के पीछे से बाहर आया। उसने हिम्मत करके आवाज़ लगाई:

"भाई नऊम, मुझे कुछ खाने के लिए दो..."

उसके ऐसा कहते ही न जाने कहां से एक मेज़ प्रकट हुई और उस पर तरह-तरह की खाने की चीज़ें, शराबें और दूसरी अच्छी-अच्छी चीज़ें दिखाई दीं।

अन्द्रेई मेज़ पर बैठ गया और उसने कहा:

"बैठ जाओ, भाई नऊम, आओ हम दोनों मिलकर खायें।"

आदमी तो दिखाई न दिया, पर आवाज़ सुनाई दी:

"शुक्रिया, भले आदमी। बहुत बरसों से मैं यहां खिदमत कर रहा हूं, मगर



कभी रोटी का एक जला टुकड़ा तक भी खाकर नहीं देखा ; और तुम मुझे अपने साथ मेज पर बैठने को कह रहे हो।"

अन्द्रेई बेहद हैरान हुआ। वहां कोई दिखाई न दिया तो भी खाने की चीज़ें वहां से इस तरह ग़ायब हो गयीं मानो किसी ने झाड़ू फेर दी हो। तरह-तरह की बढ़िया शराबें अपने आप गिलासों में भर जातीं और गिलास फुदककर मेज़ पर आ जाते।

"भाई नऊम, मैं तुम्हें देखना चाहता हूं!" अन्द्रेई ने कहा।

"नहीं, उसे – न जाने किसे को भला कौन देख सकता है?"

"भाई नऊम, क्या तुम मेरी सेवा करना पसन्द करोगे?"

"बेशक, पसन्द करूंगा, क्योंकि तुम भले आदमी हो।"

जब वे खाना खत्म कर चुके तो अन्द्रेई ने कहा:

"मेज़ हटाकर मेरे साथ चलो।"

झोंपड़े से बाहर आकर अन्द्रेई ने घूमकर पूछा:

"क्या तुम यहां हो, भाई नऊम?"

"हां, चिन्ता नहीं करो। मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आ रहा हूं।"

कुछ देर बाद अन्द्रेई जलते दरिया के पास पहुंचा, जहां मेंढकी उसका इन्तज़ार

"कहो, वीर युवक," मेंढकी ने पूछा, "क्या तुम मिले उसे – न जाने किसे?"

"हां, दादी मेंढकी।"

"तो अब मेरी पीठ पर सवार हो जाओ।"

अन्द्रेई उसकी पीठ पर चढ़ बैठा और मेंढकी ने फूलना शुरू किया। इसके बाद उसने छलांग लगायी और जलते दरिया के पार पहुंच गयी।

उसने दादी मेंढकी का शुक्रिया अदा किया और अपनी राह चल दिया। वह थोड़ी दूर चलता, फिर घूमकर देखता और पूछता:

"तुम यहां हो, भाई नऊम?"

"हां, चिन्ता नहीं करो। मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आ रहा हूं।"

अन्द्रेई चलता गया, चलता गया। अन्त में वह बहुत थक गया और उसके पांवों में छाले पड़ गये।

"ओह, प्यारे," उसने कहा, "मैं बेहक थक गया हूं!"

"तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?" भाई नऊम ने कहा। "मैं तुम्हें आन की आन में घर पहुंचा देता।"

उसी समय अन्द्रेई तेज़ हवा में उड़ने लगा। अब वह तेज़ी से पहाड़ों, जंगलों, शहरों और गांवों को लांघने लगा। जब वे गहरे समुद्र के ऊपर से उड़े जा रहे थे तो अन्द्रेई का दिल दहल गया।

"भाई नऊम, मैं कुछ आराम करना चाहता हूं!" उसने कहा।

हवा एकदम मन्द हो गयी और अन्द्रेई सागर की ओर नीचे जाने लगा। मगर जहां पहले केवल नीली लहरें शोर मचाती थीं, वहां अब उसे एक द्वीप दिखाई देने लगा। उस द्वीप पर सोने की छतवाला एक महल नज़र आया जिसके सभी ओर एक सुन्दर बगीचा था। भाई नऊम ने अन्द्रेई से कहा:

"खाओ, पियो, आराम करो और समुद्र पर अपनी नज़र रखो। सौदागरों के तीन जहाज़ इधर से आयेंगे। उनका स्वागत करना और उन्हें खाने के लिए बुला लेना। उनकी खूब अच्छी तरह ख़ातिर करना। सौदागरों के पास तीन अद्भुत चीज़ें हैं। मुझे उन चीज़ों से बदल लेना – घबराना नहीं, मैं तुम्हारे पास लौट आऊंगा।"

बहुत समय गुज़रा या थोड़ा, यह कहना मुश्किल है, पर अन्त में पश्चिम की ओर से तीन जहाज उधर आये। मुसाफ़िरों ने द्वीप, सोने की छतवाला महल और उसके चारों ओर सुन्दर बगीचा देखा।

"यह भी क्या कमाल है?" उन्होंने कहा। "बहुत बार हम इधर से गुज़रे हैं, मगर नीली लहरों के सिवा कभी कुछ दिखाई नहीं दिया। चलो जहाजों को किनारे पर लगायें!"

तीनों जहाज़ों ने लंगर डाल दिये और तीनों सौदागर एक छोटी-सी नाव में बैठकर द्वीप की ओर चल दिये। अन्द्रेई तीरंदाज़ उनका स्वागत करने के लिए पहले से ही वहां उपस्थित था।

"स्वागत, प्यार मेहमानो!"

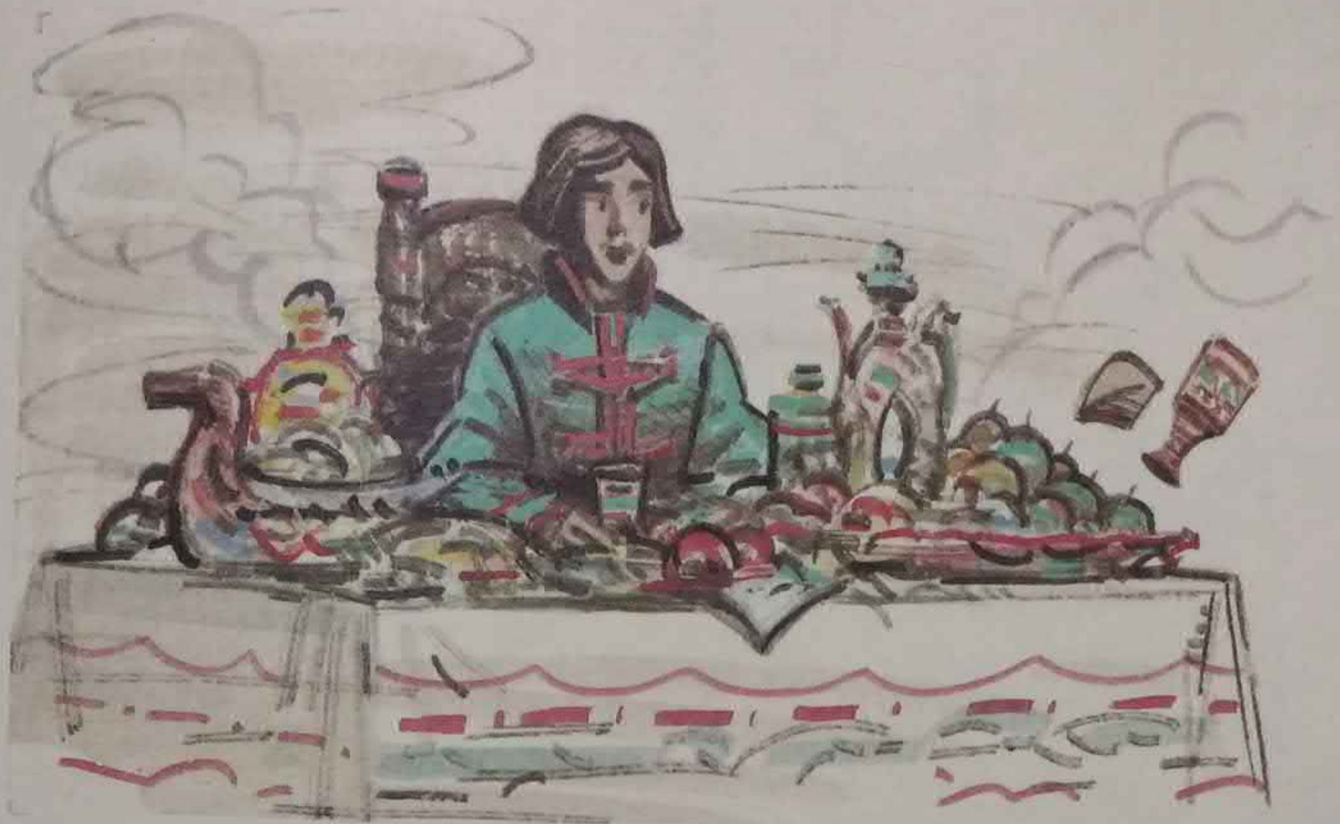
सौदागर उस जगह को देखते थे और अधिकाधिक हैरान होते जाते थे। उन्होंने देखा कि महल के ऊपर की छत आग की तरह दहक रही है। वृक्षों पर पक्षी चहचहा रहे हैं और पगडंडियों पर अद्भुत जानवर फुदकते फिर रहे हैं।

"भले आदमी, हमें यह बताओ, यह दिमाग़ चकरा देनेवाला अजूबा यहां किसने बनाया है?"

"यह सब कुछ मेरे सेवक, भाई नऊम ने एक ही रात में बनाया है।"

अन्द्रेई मेहमानों को खाने के लिए महल में ले गया।

"ए भाई नऊम, हमें कुछ खाने-पीने को दो!"



अचानक ही वहां, न जाने कहां से, एक मेज़ आ गयी जिस पर इन्सान के मनपसन्द तरह-तरह के खाने और शराबें रखी हुई दिखाई दीं। सौदागर हक्के-बक्के रहे गये।

"भले आदमी, आओ हम कुछ अदला-बदली कर लें," सौदागरों ने कहा। "हमें अपना नौकर नऊम दे दो और बदले में हमारा जो भी अजूबा तुम चाहो, ले सकते हो।"

"मैं तैयार हूं, मगर दिखाओ तो तुम्हारे अजूबे हैं कौन-से?"

एक सौदागर ने अपने कोट के नीचे से एक छड़ी निकाली। इस छड़ी को केवल इतना कहने की ज़रूरत होती है कि फलां की ख़ूब मरम्मत करो! और तभी छड़ी अपना काम शुरू कर देती है। वह हर आदमी की, वह चाहे कितना ही बलवान क्यों न हो, ख़ूब पिटाई कर सकती है।

दूसरे सौदागर ने अपने चोग़े के नीचे से एक कुल्हाड़ा निकाला और उसका मुंह नीचे की ओर कर दिया। कुल्हाड़े ने काटने का काम शुरू कर दिया। ठक-ठक – एक समुद्री जहाज तैयार होकर सामने आ गया। ठक-ठक – पालों, तोपों और बहादुर मल्लाहों समेत दूसरा जहाज़ सामने आ उपस्थित हुआ। जहाज़ तैरने लगे, तोपों ने आग उगली और बहादुर मल्लाहों ने मालिक से आज्ञा देने को कहा।



उसने कुल्हाड़े का मुंह ऊपर की तरफ़ किया और देखते ही देखते जहाज़ ऐसे ग़ायब हो गये जैसे कि वे वहां कभी थे ही नहीं।

तीसरे सौदागर ने अपनी जेब से एक मुरली निकालकर बजायी। देखते ही देखते वहां एक बड़ी सेना सामने आ गयी। इस सेना में पैदल और घुड़सवार सिपाही, बन्दूकें और तोपें, सभी कुछ था। सेना क़दम मिलाकर चलती थी, बैंड बजते थे, झण्डे लहराते थे और घुड़सवार सरपट घोड़े दौड़ाते हुए मालिक के सामने खड़े होकर आदेश की प्रतीक्षा करते थे।

तब सौदागर ने मुरली को दूसरी तरफ़ से बजाया और हर चीज़ ग़ायब हो गयी।

"मुझे तुम्हारी ये अद्‌भुत चीज़ें पसन्द हैं," अन्द्रेई तीरंदाज़ ने कहा, "मगर मेरा अजूबा अधिक क़ीमती है। अगर तुम चाहो तो मैं अपने सेवक, भाई नऊम को तुम तीनों की चीज़ों के बदले में दे सकता हूं।"

"क्या तुम बहुत अधिक क़ीमत नहीं मांग रहे हो?"



"बिल्कुल नहीं। इसकी या तो यही क़ीमत होगी या फिर कुछ भी नहीं।"

सौदागरों ने इस पर विचार किया। "हमें इस छड़ी, कुल्हाड़े और मुरली का क्या करना है? इनके बदले में भाई नऊम को ले लेना अधिक अच्छा होगा, तब हम रात-दिन, खा-पीकर मस्त पड़े रहेंगे। और सो भी बिना एक उंगली हिलाये।"

बस, सौदागरों ने अन्द्रेई को छड़ी, मुरली और कुल्हाड़ा दे दिया। इसके बाद वे चिल्लाये:

"ए भाई नऊम, तुम हमारे साथ चलो! क्या तुम ईमानदारी से हमारी सेवा करोगे?"

"क्यों नहीं?" एक आवाज़ सुनाई दी। "मुझे तो सेवा ही करनी है, तुम्हारी या किसी दूसरे की।"

इसके बाद सौदागर अपने जहाज़ों में जा बैठे। वे खा-पीकर चिल्लाते रहे:

"आओ, भाई नऊम, जल्दी करो! हमारे लिए यह लाओ, वह लाओ!"

वे तब तक पीते रहे जब तक कि नशे में बिल्कुल धुत्त नहीं हो गये और इसके बाद जहां बैठे थे, वहीं सो गये।

तीरंदाज़ अन्द्रेई महल में अकेला बैठा हुआ दुखी होता रहा। उसने सोचा: "न जाने, वह मेरा वफ़ादार सेवक, भाई नऊम कहां गया?"

"मैं यहां हूं। तुम क्या चाहते हो?"

अन्द्रेई खिल उठा।

"क्या अब मेरे लिए अपनी मातृभूमि में, अपनी प्यारी पत्नी के पास लौट जाना ही ठीक होगा? मुझे घर ले चलो, भाई नऊम!"

एक बार फिर से उसने अपने को हवा में उड़ते पाया। हवा के झोंकों में उड़ता हुआ वह अपने देश पहुंच गया।

इधर सौदागर जब जागे तो उन्होंने थोड़ी शराब पीनी चाही।

"ए भाई नऊम!" वे चिल्लाये। "हमें कुछ खाने-पीने को दो, जल्दी करो!"

मगर वे व्यर्थ ही पुकारते और गला फाड़ते रहे। उन्होंने घूमकर देखा तो द्वीप ग़ायब था। जहां द्वीप था, वहां अब केवल नीली लहरें लहरा रही थीं।

सौदागरों को बहुत दुख हुआ। "ओह! कितनी बुरा आदमी था वह! हमें इस तरह धोखा दे गया!" उन्होंने कहा। मगर वे कुछ भी तो न कर सकते थे। इसलिए उन्होंने अपने जहाज़ों के पाल खोले और अपनी मंज़िल की तरफ़ चल दिये।

इतनी देर में अन्द्रेई तीरंदाज़ उड़ता हुआ घर पहुंचा और अपनी झोंपड़ी के पास नीचे जा उतरा। मगर जहां पहले झोंपड़ी थी, वहां अब जली हुई चिमनी के सिवा उसे कुछ भी दिखाई न दिया।

वह मुंह लटकाये हुए नीले समुद्र-तट के किसी एकान्त स्थान पर पहुंचा। वहां बैठकर वह मन ही मन दुखी हो रहा था कि तभी, न जाने कहां से, एक नीलगूं कबूतरी वहां उड़ती हुई आयी। वह ज़मीन से टकरायी और टकराकर उसकी प्यारी बीवी, शाहज़ादी मारिया बन गयी।

उन्होंने एक दूसरे का आलिंगन किया और पूछने लगे कि जुदा होने के बाद उनके साथ क्या-क्या बीती।

"अब से तुम गये हो, मैं जंगलों और कुंजों में कबूतरी बनकर उड़ती रही हूं," शाहज़ादी मारिया ने कहा। "ज़ार ने मुझे तीन बार बुलवाया, मगर मुझे वहां न पाकर उसने हमारी झोंपड़ी को आग लगवा दी।"

"भाई नऊम, अगर हम नीले समुद्र के तट पर वीराने में एक महल खड़ाकर लें तो कैसा रहे?"

"बहुत अच्छा रहेगा, अभी पलक झपकते में तैयार हो जायेगा।"

"बिल्कुल वैसा ही हुआ। आन की आन में महल तैयार हो गया। वह ज़ार के महल से कहीं अधिक सुन्दर था। यह महल बड़े और हरे बगीचे के बीच था जिसमें तरह-तरह के पंछी वृक्षों पर बैठे गा रहे थे तथा सभी प्रकार के अद्‌भुत जानवर पगडंडियों पर घूमते-फिरते थे।

तीरंदाज़ अन्द्रेई और शाहज़ादी मारिया महल के भीतर गये। वे खिड़की के नज़दीक बैठकर एक दूसरे की तरफ़ प्यार से देखते हुए बातचीत करने लगे। इसी तरह निश्चिंत मन से उन्होंने एक, फिर दूसरा और तीसरा दिन बिताया।

जब ज़ार शिकार खेलता हुआ वहां आया तो उसने नीले सागर के तट पर, जहां पहले कुछ भी नहीं था, एक महल खड़ा पाया।

"किस उल्लू ने मेरी ज़मीन पर मेरी अनुमति के बिना यह महल बनाया है?" उसने कहा।

उसने पता लगाने के लिए अपने दूत भेजे। उन्होंने लौटकर ज़ार को बताया कि तीरंदाज़ अन्द्रेई ने वह महल बनाया है और उसमें अपनी युवा पत्नी, शाहज़दी मारिया के साथ रह रहा है।

ज़ार पहले से भी अधिक गुस्से में आया। उसने अपने दूतों को यह पता करने के लिए भेजा कि क्या अन्द्रेई वहां – न जाने कहां गया था और उसे – न जाने किसे लाया है।

दूत वहां पहुंचे और उन्होंने वापस आकर बतलाया:

"हां, अन्द्रेई तीरंदाज़ वहां – न जाने कहां गया था और उसे – न जाने किसे ले आया है।"

अब तो ज़ार ग़ुस्से से पागल हो उठा। उसने अपनी सेना को समुद्र-तट पर जाकर महल नीचे गिरा देने का हुक्म दिया। उसने यह भी कहा कि तीरंदाज़ अन्द्रेई तथा शाहज़ादी मारिया को बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया जाये।

अन्द्रेई ने देखा कि उनके महल की तरफ़ बड़ी भारी सेना बढ़ती आ रही है। उसने अपना कुल्हाड़ा बाहर निकाला और उसका मुंह नीचे की ओर कर दिया। कुल्हाड़े ने अपना काम करना शुरू किया। ठक-ठक – और समुद्र में एक जहाज़ खड़ा दिखाई देने लगा। ठक-ठक – इसके बाद दूसरा जहाज़ सामने आया। कुल्हाड़े ने सौ बार वैसा

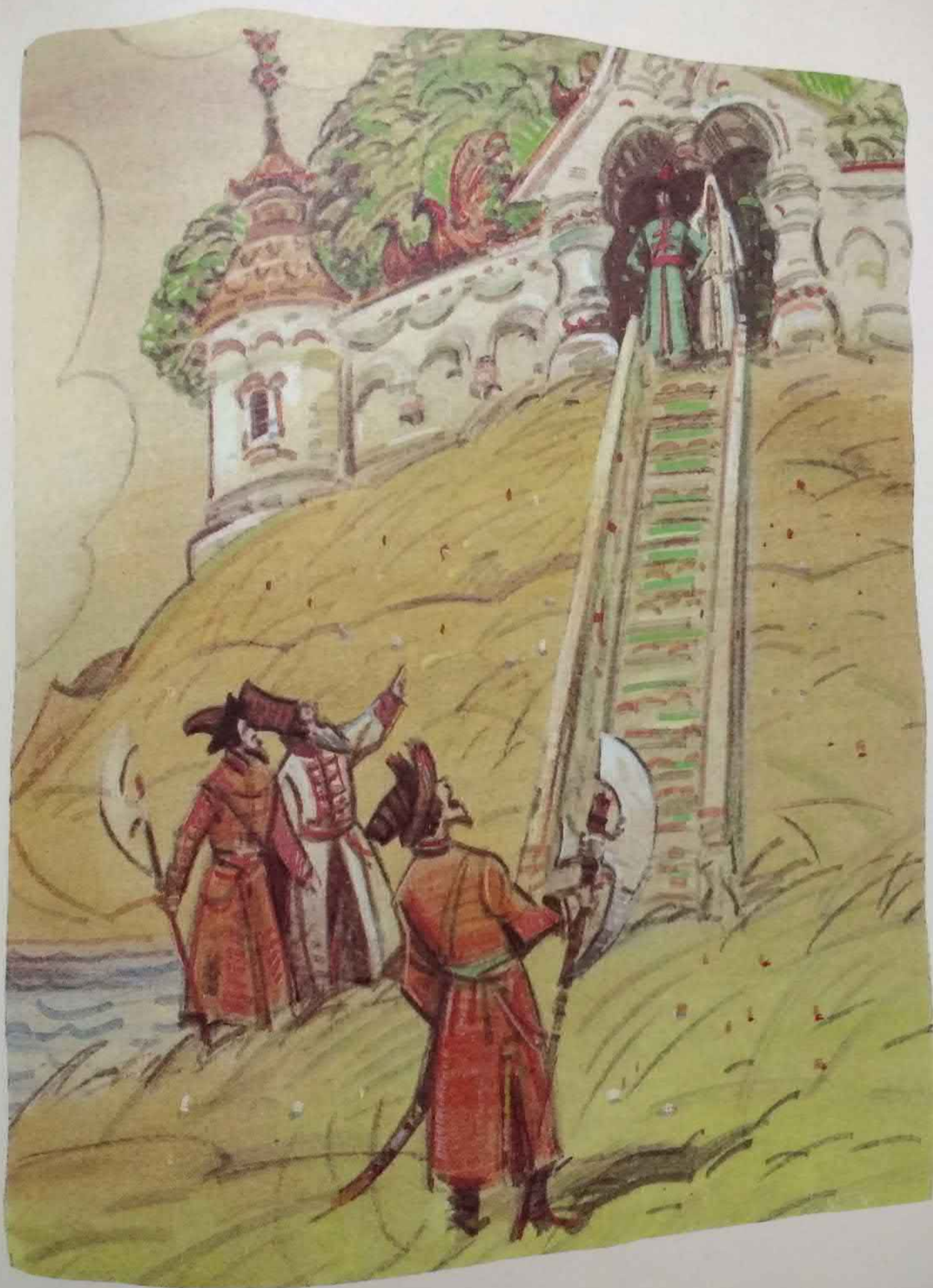
ही किया और समुद्र में सौ जहाज़ तैरते दिखाई देने लगे।

अन्द्रेई ने अपनी मुरली निकालकर बजायी। बहुत-से पैदल और घुड़सवार सैनिकों की एक सेना बन्दूकें और लहराते हुए झण्डे लिये सामने आ गयी। सेना के सरदार घोड़े दौड़ाते हुए उसके पास पहुंचे और आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। अन्द्रेई ने उन्हें लड़ाई शुरू करने का हुक्म दिया। अब क्या था, फ़ौजी बैंड बजने लगे, ढोल ढमढमाने लगे और दस्ते आगे बढ़ने लगे। पैदल सिपाहियों ने ज़ार की सेना के छक्के छुड़ा दिये और घुड़सवार घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए सैनिकों को क़ैदी बनाने लगे। सौ जहाज़ों के बेड़े ने अपनी तोपों के मुंह ज़ार के शहर की ओर मोड़ दिये।

ज़ार ने जब अपनी फ़ौज भागती देखी तो उसे डटे रहने की आज्ञा देने के लिए खुद आगे आया। अब क्या था – अन्द्रेई ने अपनी छड़ी बाहर निकाली।

"अच्छा तो छड़ी, ज़ार की कसकर मरम्मत कर।"





छड़ी कलाबाजियां खाती हुई ज़ार की तरफ़ बढ़ी। ज़ार के पास पहुंचकर उसने उसके माथे पर चोट की और वह उसी वक़्त दम तोड़कर दूसरी दुनिया में पहुंच गया।

तभी लड़ाई बन्द हो गयी। लोग नगर से बाहर आकर इकट्ठे हो गये और उन्होंने अन्द्रेई तीरंदाज़ से ज़ार बनने की प्रार्थना की।

अन्द्रेई को भला, इसमें क्या एतराज़ हो सकता था! उसने एक शानदार दावत की और वह शाहज़ादी मारिया के साथ बहुत बरसों तक उस देश में राज्य करता रहा।



लड़की और हंस

एक बार का ज़िक्र है कि कहीं एक किसान और उसकी बीवी रहते थे। उनकी एक छोटी-सी लड़की और एक नन्हा-सा लड़का था।

"बेटी," मां ने लड़की से कहा, "हम लोग काम पर जा रहे हैं, इसलिए तू अपने छोटे भाई की देखभाल करना। अगर तूने अच्छी लड़की की तरह यह काम किया और घर के बाहर नहीं गयी तो हम तुझे एक नया रूमाल ख़रीद देंगे।"

मां-बाप काम पर चले गये, लेकिन लड़की भूल गयी कि उसकी मां उससे क्या कह गयी थी। उसने अपने नन्हे भाई को खिड़की के पास घास पर बिठा दिया और ख़ुद अपनी सहेलियों के साथ खेलने चली गयी।

यकायक हंसों का एक झुंड उड़ता हुआ आया। हंसों ने ज़मीन पर झपट्टा मारा, नन्हे भैया को उठा लिया और उसे पीठ पर बैठाकर आकाश में उड़ चले।

लड़की घर लौटी, मगर अफ़सोस! नन्हा भैया ग़ायब था! वह हक्की-बक्की रह गयी, इधर दौड़ी, उधर दौड़ी, मगर भाई कहीं नहीं था।

उसने भैया को आवाज़ दी, रोते-रोते उसकी हिचकियां बंध गयीं। उसने पुकारकर कहा कि भैया जल्दी आ जाओ वरना मेरी बड़ी पिटाई होगी। मगर उसके नन्हे भाई ने कोई जवाब नहीं दिया।

तब वह बाहर खुले मैदान में दौड़ गयी, लेकिन वहां भी उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। हां, घने जंगलों से भी बहुत दूर कुछ हंस ज़रूर आसमान में उड़ रहे थे। इसी क्षण उसके मन में यह विचार आया कि हो न हो, उसके भैया को ये हंस ही उठा

ले गये हैं। उसने लोगों को कहते सुना था कि हंस बहुत बुरे पक्षी होते हैं जो अक्सर छोटे बच्चों को उठा ले जाते हैं।

सो लड़की ने आव देखा न ताव और दौड़ पड़ी उन पक्षियों के पीछे। वह दौड़ती गयी, दौड़ती गयी और एक तन्दूर के पास जा पहुंची।

"तन्दूर, तन्दूर, मुझे यह बताओ कि हंस किधर गये हैं?"

"पहले मेरी जई की रोटी खाओ, तब मैं तुम्हें बताऊंगा," तन्दूर ने कहा।

"क्या कहा, मैं और जई की रोटी खाऊं? अपने बाप के यहां मैं गेहूं की रोटी तक तो खाती नहीं..."

सो तन्दूर ने उसे कुछ नहीं बताया। नन्ही लड़की फिर दौड़ने लगी। कुछ दूर आगे उसे जंगली सेबों का एक पेड़ दिखाई दिया।

"सेब के पेड़, सेब के पेड़, मुझे यह बताओ कि हंस किधर गये हैं?"

"पहले मेरा एक जंगली सेब खा लो, तब बताऊंगा," पेड़ ने कहा।

"मेरे बाप के यहां तो बगीचे के सेब भी नहीं खाये जाते..."

सो सेब के पेड़ ने उसे कुछ नहीं बताया। लड़की फिर दौड़ने लगी। कुछ दूर आगे उसे दूध की नदी मिली जिसके किनारे फलों की मिठाई के बने थे।

"मिठाई के किनारेवाली दूध की नदी, मुझे यह बताओ कि हंस किधर गये हैं?"

"पहले दूध के साथ मेरी थोड़ी मिठाई खाओ तब बताऊंगी।"

"मेरे बाप के यहां तो बढ़िया मिठाई भी नहीं खाई जाती..."

सो दूध की नदी ने भी उसे कुछ नहीं बताया।



लड़की दिन भर जंगलों और मैदानों में दौड़ती रही। शाम हो जाने पर वह बेचारी घर लौटने की सोचने लगी। और क्या करती? तभी यकायक उसे क्या दिखाई दिया



कि एक झोंपड़ी है जिसका मुर्ग़ी जैसा पंजा है और एक छोटी-सी खिड़की है। यह झोंपड़ी लट्टू की तरह घूम रही थी।

झोंपड़ी में एक चुड़ैल बाबा-यगा बैठी सन कात रही थी। और उसके सामने बेंच पर लड़की का नन्हा भैया बैठा चांदी के सेबों से खेल रहा था।

लड़की झोंपड़ी के अन्दर चली गयी।

"नमस्ते, दादी!"

"नमस्ते, लड़की! तुम किसलिए आयी हो यहां?"

"मैं कीचड़ और काई में घूमती रही हूं। इसलिए मेरा फ़्राक भीग गया है, सो तन गर्माने आयी हूं।"

"तो बैठ जाओ और कुछ सन कातो।"

चुड़ैल ने चर्खा लड़की को दे दिया और ख़ुद बाहर चली गयी। लड़की वहां बैठी सन कात रही थी कि इतने में यकायक चूल्हे के नीचे से एक चूहा निकलकर दौड़ता हुआ आया और बोला:

"लड़की, लड़की, तुम मुझे अगर कुछ दलिया दो तो मैं तुम्हें एक अच्छी बात बताऊं।"

लड़की ने उसे कुछ दलिया दे दिया। तब चूहा बोला:

"चुड़ैल ग़ुसलख़ाने में आग जलाने गयी है। वह तुम्हें नहला-धुलाकर अलावघर में भूनेगी, फिर खा जायेगी और तुम्हारी हड्डियों पर सवारी करेगी।"

लड़की डर के मारे रोने और थर-थर कांपने लगी, लेकिन चूहा कहता गया:

"जल्दी करो, अपने नन्हे भैया को साथ लेकर भाग जाओ। तुम्हारी जगह मैं सन कातता रहूंगा।"



सो लड़की अपने भैया को गोद में लेकर भाग गयी। चुड़ैल कभी-कभी खिड़की के पास आती और पूछती :

"लड़की, सन कात रही है न?"

चूहा उसे जवाब दे देता :

"हां, दादी, कात रही हूं..."

गुसलखाने में आग जलाकर चुड़ैल लड़की को लेने आयी तो उसने देखा कि झोंपड़ी खाली है। चुड़ैल चिल्लायी :

"उड़कर जाओ, मेरे हंसो, फ़ौरन उड़कर जाओ और दोनों को पकड़कर लाओ! बहन अपने भैया को उठा ले गयी है!.."

अपने नन्हे भैया के साथ भागते-भागते बहन दूध की नदी के पास पहुंची। तभी उसने क्या देखा कि हंस उसे और उसके भैया को पकड़ने के लिए उड़ते आ रहे हैं!

"नदी मां, नदी मां, मुझे छिपा लो, जल्दी करो!" लड़की चिल्लायी।

"मेरी मिठाई खानी पड़ेगी।"

लड़की ने थोड़ी मिठाई खा ली और कहा : "धन्यवाद!" सो दूध की नदी ने उसे और उसके भैया को मिठाई के अपने किनारे की ओट में छिपा लिया।

हंस इन्हें नहीं देख पाये और वे उड़ते हुए आगे चले गये।

लड़की नन्हे भैया के साथ आगे बढ़ी। लेकिन उधर हंस भी लौट पड़े थे और सीधे उसी की तरफ़ उड़ते आ रहे थे। लगता था कि अभी उनकी नज़र उस पर पड़ी कि पड़ी। अब वह क्या करे? वह दौड़कर सेब के पेड़ के पास पहुंची।



सो लड़की अपने भैया को गोद में लेकर भाग गयी। चुड़ैल कभी-कभी खिड़की के पास आती और पूछती :

"लड़की, सन कात रही है न?"

चूहा उसे जवाब दे देता :

"हां, दादी, कात रही हूं..."

ग़ुसलख़ाने में आग जलाकर चुड़ैल लड़की को लेने आयी तो उसने देखा कि झोंपड़ी ख़ाली है। चुड़ैल चिल्लायी :

"उड़कर जाओ, मेरे हंसो, फ़ौरन उड़कर जाओ और दोनों को पकड़कर लाओ! बहन अपने भैया को उठा ले गयी है!.."

अपने नन्हे भैया के साथ भागते-भागते बहन दूध की नदी के पास पहुंची। तभी उसने क्या देखा कि हंस उसे और उसके भैया को पकड़ने के लिए उड़ते आ रहे हैं!

"नदी मां, नदी मां, मुझे छिपा लो, जल्दी करो!" लड़की चिल्लायी।

"मेरी मिठाई खानी पड़ेगी।"

लड़की ने थोड़ी मिठाई खा ली और कहा : "धन्यवाद!" सो दूध की नदी ने उसे और उसके भैया को मिठाई के अपने किनारे की ओट में छिपा लिया।

हंस इन्हें नहीं देख पाये और वे उड़ते हुए आगे चले गये।

लड़की नन्हे भैया के साथ आगे बढ़ी। लेकिन उधर हंस भी लौट पड़े थे और सीधे उसी की तरफ़ उड़ते आ रहे थे। लगता था कि अभी उनकी नज़र उस पर पड़ी कि पड़ी। अब वह क्या करे? वह दौड़कर सेब के पेड़ के पास पहुंची।

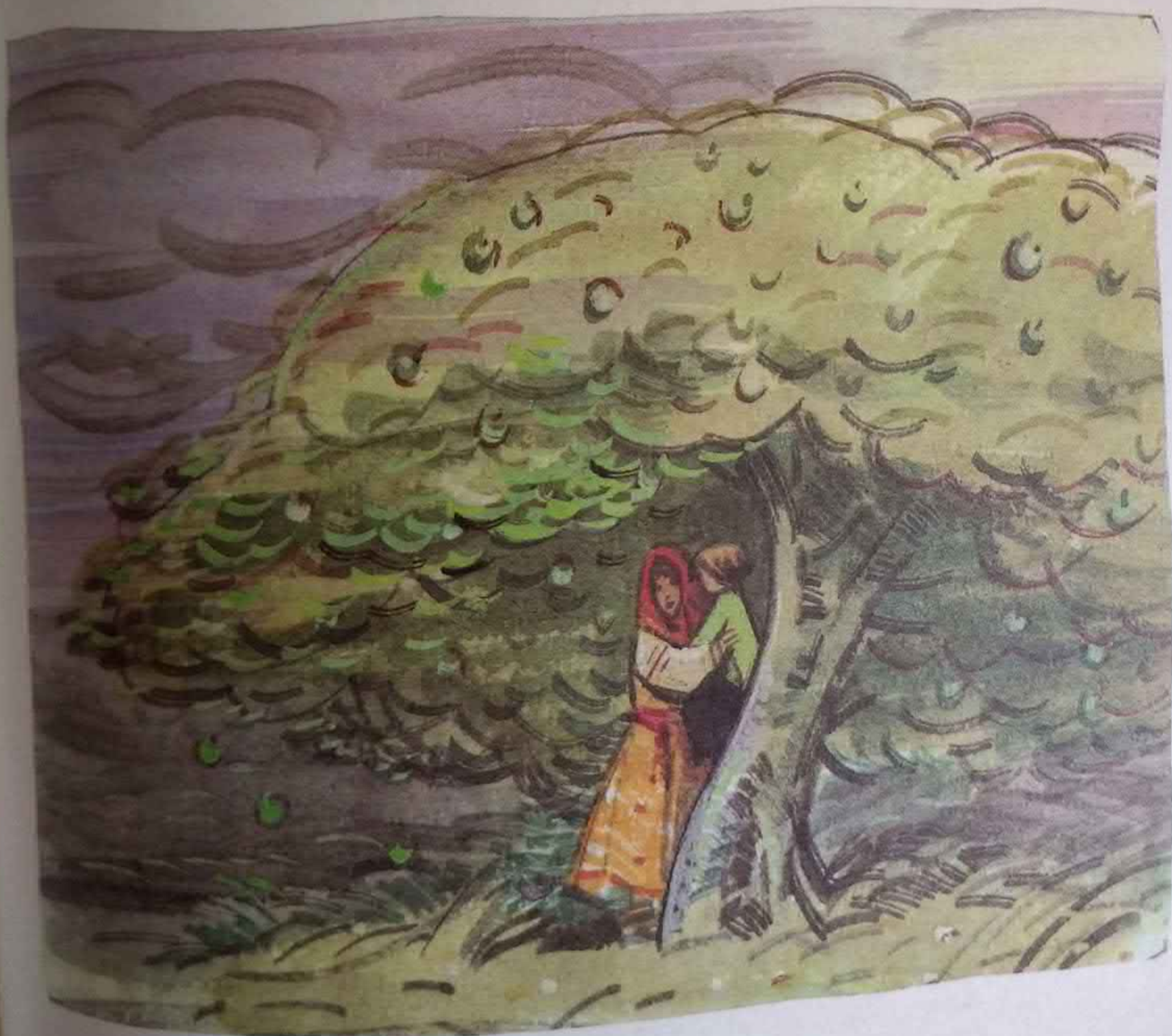
"सेब के पेड़, सेब के पेड़, मुझे छिपा लो, जल्दी करो!"

"मेरा जंगली सेब खाना पड़ेगा।"

लड़की ने जल्दी-जल्दी एक सेब खाकर कहा: "धन्यवाद!" सेब के पेड़ ने उसे अपने पत्तों और टहनियों के बीच छिपा लिया।

हंसों ने उन्हें नहीं देखा और आगे चले गये।

लड़की ने अपने भैया को उठाकर फिर दौड़ना शुरू कर दिया। वह घर के बिल्कुल नजदीक पहुंच गयी थी कि हंसों की उस पर नज़र पड़ गयी। उन्होंने उसे देखते ही चीखना और पंख फड़फड़ाना शुरू कर दिया। एक मिनट और बीतता तो वे झपट्टा मारकर नन्हे भैया को लड़की के हाथों से छीन ले जाते।



पर लड़की दौड़कर तन्दूर के पास पहुंच गयी।

"तन्दूर, तन्दूर, मुझे छिपा लो, जल्दी करो!"

"मेरी जई की रोटी खानी पड़ेगी।"

लड़की ने जल्दी से रोटी का एक टुकड़ा मुंह में डाल लिया और अपने भैया को लेकर तन्दूर में घुस गयी।

हंस कुछ देर तक चीख़ते-चिल्लाते हुए तन्दूर के चारों ओर चक्कर काटते रहे और फिर थककर चुड़ैल के पास लौट गये।

लड़की ने तन्दूर को धन्यवाद दिया और अपने भैया को लेकर वह घर दौड़ गयी।

थोड़ी ही देर बाद लड़की के मां-बाप भी घर लौट आये।



चांदी की तश्तरी और पका हुआ सेब

कभी कहीं एक बुढ़िया और बूढ़ा रहते थे। उनकी तीन बेटियां थीं। दोनों बड़ी बेटियां सजना-धजना पसन्द करतीं, चटक रंग के सुन्दर सराफ़ान पहनतीं, उनके सेंडलों की एडियां नुकीली होतीं और मालायें सुनहरी। लेकिन सबसे छोटी माशा थी विनम्र-सी, धुंधले-से रंग का सराफ़ान पहनती और उसकी आंखें थीं उजली-उजली। माशा की सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरती तो थी उसकी सुनहरे बालों की चोटी जो ज़मीन को छूती थी, फूलों का स्पर्श करती थी। दोनों बड़ी बहनें कोई काम-काज नहीं करती थीं, काहिल थीं, लेकिन माशा सुबह से शाम तक काम में जुटी रहती, घर में, खेत में और साग-सब्ज़ियों के बगीचे में। वह क्यारियों को सींचती, लकड़ियां चीरती, गउएं दुहती और बत्तखों को दाना-दुनका चुगाती। कोई भी उससे कुछ लाने को कहता वह ला देती, किसी काम से इन्कार न करती, सब कुछ करने को तैयार रहती। बड़ी बहनें उस पर हुक्म चलातीं, अपने लिए काम करने को दौड़ातीं। मगर माशा कभी कुछ न कहती।

ऐसे ही ज़िन्दगी चलती गयी।

एक दिन लड़कियों के पिता ने भूसा बेचने के लिए मंडी में जाने की तैयारी की। उसने बेटियों से कहा कि वह उनके लिए तोहफ़े लायेगा। एक बेटी ने कहा:

"बापू, मेरे लिए सराफ़ान बनाने का रेशमी कपड़ा लेते आना।"

दूसरी बेटी ने अनुरोध किया:

"मुझे लाल रंग की मख़मल ला देना।"

मगर माशा चुप रही। पिता को उस पर तरस आया:

"प्यारी माशा, तुम्हारे लिए क्या ख़रीदकर लाऊं?"

"मेरे बापू, मेरे लिए आप पका हुआ सेब और चांदी की तश्तरी ख़रीद लाइये।"

दोनों बड़ी बहनों को ख़ूब हंसी आई, हंसते-हंसते उनके पेट में तो बल पड़ गये।

"अरी ओ माशा, अरी ओ बुद्धू! हमारा तो बाग़ सेबों से भरा पड़ा है, जैसे चाहो वैसे ले लो। फिर तश्तरी का तुम्हें क्या करना है? बत्तख़ों को दाना-दुनका चुगाना है क्या?"

"नहीं, मेरी बहनो! मैं तश्तरी में सेब को घुमाऊंगी और कुछ करामाती शब्द बोलूंगी। वे शब्द मुझे एक बुढ़िया ने सिखाये हैं जिसे मैंने बढ़िया, सफ़ेद रोटी दी थी।"

"ख़ैर," बापू ने कहा, "तुम दोनों अपनी छोटी बहन का मज़ाक़ नहीं उड़ाओ! मैं हर किसी को उसका मनपसन्द तोहफ़ा ला दूंगा।"

किसान दूर या पास, बहुत देर तक या थोड़ी देर तक मंडी में रहा, यह कहना मुश्किल है। लेकिन उसने भूसा बेच दिया और बेटियों के लिए तोहफ़े ख़रीद लिये। एक बेटी के लिए नीला रेशमी कपड़ा, दूसरी के लिए लाल मख़मल और माशा के लिए चांदी की तश्तरी तथा पका हुआ सेब।

दोनों बड़ी बहनों की ख़ुशी का पारावार नहीं था। वे अपने लिए सराफ़ान सीने और माशा का मज़ाक़ उड़ाने लगीं:

"बैठी रहो अपना सेब लेकर, बुद्धू कहीं की..."

माशा कमरे के एक कोने में जा बैठी और चांदी की तश्तरी में पका हुआ सेब लुढ़काती हुई यह गाने लगी:

"लुढ़को, लुढ़को, चांदी की तश्तरी में पके हुए सेब लुढ़को, मुझे नगर और

मैदान दिखाओ, जंगल और सागर झलकाओ, पर्वत की ऊंचाई, आकाश की नीलिमा सुखदायी और दिखाओ रूसी धरती मां की सारी छवि मन भायी।"

अचानक चांदी की ज़ोरदार छनक हुई, सारा कमरा रोशनी से जगमगा उठा – पका हुआ सेब चांदी की तश्तरी में लुढ़कने लगा और तश्तरी में सभी शहर, सभी चरागाह, मैदानों में सैनिक, सागरों में जहाज़, पर्वतों की ऊंचाई, आकाश की नीलिमा



सुखदायी दिखाई देने लगी। दूज के चांद के पीछे-पीछे सूरज चमकता था, सितारे झूमर नृत्य कर रहे थे और झीलों पर हंस कलकल की ध्वनि कर रहे थे।

बहनों ने यह देखा और दिल में जल-भुन गयीं। दोनों सोचने लगीं कि कैसे माशा को कोई प्रलोभन देकर उससे तश्तरी और सेब हासिल कर लें। किन्तु माशा कुछ भी नहीं चाहती थी, कुछ भी लेने को तैयार नहीं थी, हर शाम को तश्तरी से ही अपना मन बहलाती थी।

दोनों बड़ी बहनें माशा को जंगल में चलने के लिए प्रेरित करने लगीं:

"प्यारी बहन, आओ जंगली फल चुनने को जंगल में चलें, हम माता-पिता के लिए जंगली स्ट्राबेरियां बटोरकर लायेंगी।"

तीनों बहनें जंगल में गयीं। कहीं भी जंगली फल नहीं थे, कहीं भी जंगली स्ट्राबेरियां नहीं थीं।

माशा ने तश्तरी निकाली, सेब को उसमें घुमाया और लगी करामाती शब्द मुंह से निकालने:

"पके सेब, चांदी की तश्तरी में घूमो-लुढ़को, यह दिखाओ कि कहां जंगली स्ट्राबेरियां उगी हुई हैं, कहां आसमानी फूल खिले हुए हैं।"

अचानक बहुत जोर से चांदी की छनक हुई, पका हुआ सेब चांदी की तश्तरी में लुढ़का और तश्तरी में सभी जंगल नज़र आने लगे। यह भी दिखाई देने लगा कि जंगली स्ट्राबेरियां कहां उगी हुई हैं, आसमानी फूल कहां हैं, खुम्मियां कहां छिपी हुई हैं, कहां चश्मे बहते हैं और कहां हंस झीलों पर कलकल का राग अलापते हैं।

कमीनी बहनों ने जब यह देखा तो उनकी आंखें ईर्ष्या से जलने लगीं। उन्होंने एक डंडा लिया, माशा को मार डाला, भोज-वृक्ष के नीचे क़ब्र खोदकर दबा दिया और तश्तरी तथा सेब को ले लिया। शाम होने पर ही दोनों घर लौटीं। वे खुम्मियों से भरी हुई टोकरियां घर लायीं और मां-बाप से बोलीं:

"माशा हमें छोड़कर भाग गयी। हमने सारा जंगल छान मारा, लेकिन वह कहीं नहीं मिली। लगता है कि भेड़िये ही उसे जंगल में खा गये।"

मां रोने लगी, मगर पिता ने कहा:

"सेब को तश्तरी में घुमाओ और तब शायद सेब यह दिखा दे कि हमारी माशा कहां है।"

दोनों बहनों का दम निकल गया, मगर इन्कार कैसे करतीं। उन्होंने सेब को तश्तरी में घुमाया – लेकिन तश्तरी अब चमकती-दमकती नहीं थी, सेब नहीं घूमता

सुखदायी दिखाई देने लगी। दूज के चांद के पीछे-पीछे सूरज चमकता था, सितारे झूमर नृत्य कर रहे थे और झीलों पर हंस कलकल की ध्वनि कर रहे थे।

बहनों ने यह देखा और दिल में जल-भुन गयीं। दोनों सोचने लगीं कि कैसे माशा को कोई प्रलोभन देकर उससे तश्तरी और सेब हासिल कर लें। किन्तु माशा कुछ भी नहीं चाहती थी, कुछ भी लेने को तैयार नहीं थी, हर शाम को तश्तरी से ही अपना मन बहलाती थी।

दोनों बड़ी बहनें माशा को जंगल में चलने के लिए प्रेरित करने लगीं:

"प्यारी बहन, आओ जंगली फल चुनने को जंगल में चलें, हम माता-पिता के लिए जंगली स्ट्राबेरियां बटोरकर लायेंगी।"

तीनों बहनें जंगल में गयीं। कहीं भी जंगली फल नहीं थे, कहीं भी जंगली स्ट्राबेरि-यां नहीं थीं।

माशा ने तश्तरी निकाली, सेब को उसमें घुमाया और लगी करामाती शब्द मुंह से निकालने:

"पके सेब, चांदी की तश्तरी में घूमो-लुढ़को, यह दिखाओ कि कहां जंगली स्ट्राबेरियां उगी हुई हैं, कहां आसमानी फूल खिले हुए हैं।"

अचानक बहुत ज़ोर से चांदी की छनक हुई, पका हुआ सेब चांदी की तश्तरी में लुढ़का और तश्तरी में सभी जंगल नज़र आने लगे। यह भी दिखाई देने लगा कि जंगली स्ट्राबेरियां कहां उगी हुई हैं, आसमानी फूल कहां हैं, खुम्मियां कहां छिपी हुई हैं, कहां चश्मे बहते हैं और कहां हंस झीलों पर कलकल का राग अलापते हैं।

कमीनी बहनों ने जब यह देखा तो उनकी आंखें ईर्ष्या से जलने लगीं। उन्होंने एक डंडा लिया, माशा को मार डाला, भोज-वृक्ष के नीचे क़ब्र खोदकर दबा दिया और तश्तरी तथा सेब को ले लिया। शाम होने पर ही दोनों घर लौटीं। वे खुम्मियों से भरी हुई टोकरियां घर लायीं और मां-बाप से बोलीं:

"माशा हमें छोड़कर भाग गयी। हमने सारा जंगल छान मारा, लेकिन वह कहीं नहीं मिली। लगता है कि भेड़िये ही उसे जंगल में खा गये।"

मां रोने लगी, मगर पिता ने कहा:

"सेब को तश्तरी में घुमाओ और तब शायद सेब यह दिखा दे कि हमारी माशा कहां है।"

दोनों बहनों का दम निकल गया, मगर इन्कार कैसे करतीं। उन्होंने सेब को तश्तरी में घुमाया – लेकिन तश्तरी अब चमकती-दमकती नहीं थी, सेब नहीं घूमता

था, तश्तरी में न जंगल, न मैदान, न पर्वत-चोटियों की शान, न आकाश की शानबान – कुछ भी नज़र नहीं आया।

इसी वक़्त एक गड़रिया जंगल में अपनी भेड़ ढूंढ़ रहा था। उसने देखा कि एक सफ़ेद भोज-वृक्ष खड़ा है, उसके नीचे मिट्टी का बड़ा-सा ढेर है और उनके चारों ओर आसमानी रंग के फूल खिले हुए हैं। फूलों के बीच एक बांस उगा हुआ है। नौजवान गड़रिये ने बांस को काटकर उसकी मुरली बना ली। उसने मुरली होंठों से छुआयी ही थी कि वह अपने आप बजने और यह कहने लगी:

"बांस की मुरली बजो, बजो, नौजवान गड़रिये का दिल ख़ुश करो। मुझ बेचारी जवान को तो मार डाला, चांदी की तश्तरी और पके सेब के लिए मिटा डाला।"

गड़रिया यह सुनकर डर गया, भागकर गांव में पहुंचा और लोगों को सब कुछ बताया। लोग जमा हो गये, हाय-वाय करने लगे।

माशा का बापू भी भागता हुआ यहां पहुंचा। उसने ज्योंही मुरली हाथ में ली, वह अपने आप ही गाने और यह बताने लगी:

"बांस की मरली बजो, बजो, मेरे प्यारे बापू का दिल ख़ुश करो।



मुझ बेचारी जवान को तो मार डाला, चांदी की तश्तरी और पके सेब के लिए मिटा डाला।"

बापू फूट-फूटकर रोने लगा:

"नौजवान गड़रिये, हमें वहां ले चलो जहां तुमने यह बांस काटा था।"

गड़रिया उन्हें जंगल में मिट्टी के उस टीले के पास ले गया। भोज-वृक्ष के नीचे आसमानी रंग के फूल खिले हुए थे और वृक्ष की टहनियों पर पक्षी चहचहा रहे थे।

टीले को खोदा गया और वहां माशा थी। मरी हुई, लेकिन ज़िन्दा से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत – गालों पर गुलाब खिले हुए मानो गहरी नींद में सो रही हो।

मुरली गा रही थी, बता रही थी:

"बांस की मुरली बजो, बजो। मेरी बहनें मुझे बहकाकर जंगल में ले आयीं, चांदी की तश्तरी और पके सेब के लिए मार डाला, मिटा डाला। बजो, बजो, बांस की मुरली बजो। मेरे प्यारे बापू, ज़ार के कुएं से निर्मल-बिल्लौरी पानी ले आओ।"

दोनों ईर्षालु बहनें थर-थर कांपने लगीं, उनके चेहरे पीले पड़ गये, वे बापू के पैरों पर गिर पड़ीं और उन्होंने अपना क़ुसूर मान लिया। इन दोनों बहनों को बादशाह का, ज़ार का हुक्म जारी होने तक कोठरी में बन्द कर दिया गया।

और बूढ़ा बाप ज़ार के कुएं से अमृत जल लाने के लिए उसके शहर की तरफ़ चल दिया।

जल्दी या बहुत देर से वह उस शहर में, ज़ार के महल तक पहुंचा, यह कहना मुश्किल है। सोने के ओसारे से ज़ार नीचे उतरा।

बूढ़े ने झुककर उसे प्रणाम किया और सारा क़िस्सा कह सुनाया।

ज़ार बोला:

"बूढ़े, मेरे कुएं से अमृत जल ले लो। जब तुम्हारी बेटी ज़िन्दा हो जाये तो उसकी तश्तरी, सेब और दुष्ट बहनों के साथ उसे मेरे सामने लाकर पेश करो।"

बूढ़ा बहुत ख़ुश हुआ, उसने ज़मीन तक झुककर ज़ार को प्रणाम किया और अमृत जल से भरी शीशी लेकर घर को चल दिया।

पिता ने जैसे ही माशा पर अमृत जल छिड़का, वह ज़िन्दा होकर उठ बैठी और उसने पिता के गले में बाहें डाल दीं।

लोग-बाग भागकर आये, बहुत ख़ुश हुए।

बूढ़ा अपनी बेटियों को लेकर शहर गया। उसे ज़ार के महल में ले जाया गया।



ज़ार सामने आया। उसने माशा को देखा। वसन्त के फूल जैसी लड़की उसके सामने थी, आंखों में सूरज की किरणों जैसी चमक थी, चेहरे पर उषा की लालिमा थी और गालों पर ऐसे आंसू बह रहे थे मानो मोती हों।

ज़ार ने माशा से पूछा :

"तुम्हारी तश्तरी और पका हुआ सेब कहां है?"

माशा ने तश्तरी और सेब लिया, पके सेब को चांदी की तश्तरी में घुमाया।

अचानक बहुत जोर की आवाज़ हुई और तश्तरी में एक के बाद एक रूसी शहर नजर आने लगे, उनमें झण्डों के साथ पलटनें जमा हो रही थीं, क़तारों में खड़ी होती थीं, उनके अफ़सर आगे-आगे थे, सेनापति उनसे भी आगे चल रहे थे। गोले-गोलियां चलते थे, धुएं के बादल चक्कर काटते थे और आंखों से सब कुछ ओझल हो रहा था।

पका हुआ सेब चांदी की तश्तरी में घूम रहा था। तश्तरी में सागर लहरा रहा था, हंसों की तरह जहाज़ तैर रहे थे, झण्डे लहराते थे और तोपें दनदनाती थीं। गोले-गोलियां चलते थे, धुएं के बादल चक्कर काटते थे और आंखों से सब कुछ ओझल हो रहा था।

पका हुआ सेब चांदी की तश्तरी में घूम रहा था और तश्तरी में सारा आकाश ही अपनी छटा दिखा रहा था – दूज के चांद के पीछे सूरज चमक रहा था, सितारे झूमर नाच की तैयारी कर रहे थे और हंस आकाश में गा रहे थे।

ज़ार अजूबे देखकर हैरान हो रहा था और लड़की आंसू बहा रही थी। उसने ज़ार के क़दमों पर गिरकर कहा :

"ज़ार, मेरा यह पका हुआ सेब और चांदी की तश्तरी ले लो, लेकिन मेरी बहनों को माफ़ कर दो, मेरे कारण उनकी जान नहीं लो।"

ज़ार ने उसे उठाया और बोला :

"तश्तरी तुम्हारी चांदी की है, मगर दिल सोने का। तुम मेरी बीवी बनना चाहोगी, मेरे राज्य की अच्छी रानी बनना पसन्द करोगी? और तुम्हारी बहनों को मैं तुम्हारे अनुरोध पर क्षमा कर दूंगा।"

ज़ार के यहां न तो बियर बनाने की ज़रूरत होती है और न शराब तैयार करने की – बढ़िया दावतों और शादियों के लिए तहखाने भरे रहते हैं। तो ऐसी बढ़िया दावत

हुई कि सारा शहर ही उसमें शामिल हुआ – इतने ज़ोर से बाजे-गाजे बजे कि आकाश से सितारे नीचे आ गिरे, इतने जोश से लोग नाचे कि फ़र्श ही टूट गये। बस, इतना ही क़िस्सा है...



येमेला और मछली

एक समय की बात है कि एक बूढ़ा आदमी कहीं रहता था। उसके तीन बेटे थे, जिनमें दो होशियार नौजवान थे और तीसरा, जिसका नाम येमेला था, बेवक़ूफ़ था।

दोनों बड़े भाई सदा काम में लगे रहते थे, जबकि येमेला दिन भर अलावघर पर पड़ा रहता था। वह किसी भी बात की फ़िक्र नहीं करता था।

एक दिन उसके दोनों भाई घोड़ों पर सवार होकर बाज़ार चले गये और उनकी बीवियों ने येमेला से कहा:

"जाओ, थोड़ा पानी ले लाओ, येमेला!"

येमेला ने अलावघर पर लेटे-लेटे ही जवाब दिया:

"मैं नहीं जाना चाहता..."

"जाओ, येमेला, वरना तुम्हारे भाई तुम्हारे लिए बाज़ार से कोई उपहार नहीं लायेंगे।"

"अच्छा तो जाता हूं।"

तो येमेला अलावघर से नीचे उतरा, उसने कपड़े-जूते पहने और दो डोल और एक कुल्हाड़ी हाथ में लेकर नदी की ओर चल दिया।

नदी पर बर्फ़ जमी हुई थी। येमेला ने अपनी कुल्हाड़ी से उसमें एक बड़ा सूराख़ किया और पानी के दो डोल भर लिये। फिर डोलों को बर्फ़ पर रखकर उसने झुककर सूराख़ में झांका। वह झांकता रहा, झांकता रहा और उसने एक श्चूका-मछली को पानी में तैरते देखा।

झट से उसने अपनी बांह पानी में डाल दी और लो, श्चूका उसके हाथ में थी। "आज तो मछली के शोरबे का मज़ा आयेगा!" उसने ख़ुश होकर अपने आपसे कहा। पर तभी यह मछली मनुष्य की आवाज़ में बोल उठी:

"मुझे छोड़ दो, येमेला। मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर दूंगी।"

"अच्छा," येमेला ने जवाब दिया, "लेकिन पहले यह साबित करो कि तुम मुझे धोखा नहीं दे रही हो।"

मछली बोली:

"अच्छा बताओ, तुम अभी क्या चाहते हो?"

"मैं यह चाहता हूं कि मेरे डोल अपने आप घर पहुंचे जायें और रास्ते में एक बूंद पानी भी न गिरने पाये।"

"ऐसा ही हो जायेगा, येमेला," श्चूका ने कहा, "जब कभी तुम्हें किसी चीज़ की इच्छा हो, बस यह कह देना:

'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

और फ़ौरन वैसा ही हो जायेगा।"

येमेला झट से बोला:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"डोल, अपने आप घर पहुंच जायें..."

तभी उसने देखा कि डोल मुड़कर घर वापस जाने लगे हैं। येमेला ने श्चूका को फिर से पानी में छोड़ दिया और ख़ुद डोलों के पीछे-पीछे घर की ओर चल दिया।

डोल गांव की सड़क पर चले जा रहे थे और गांववाले उन्हें देख-देखकर अचम्भे में डूब रहे थे। येमेला हंसता हुआ डोलों के पीछे-पीछे चल रहा था। डोल चलते-चलते सीधे येमेला के झोंपड़े में घुस गये और कूदकर बेंच पर जा टिके। और येमेला फिर से अलावघर पर चढ़कर लेट गया।

इसी तरह बहुत समय बीता या थोड़ा समय बीता और तब येमेला की भाभियों ने उससे फिर कहा:

"वहां क्यों पड़े हो, येमेला? नीचे उतरकर हमारे लिए थोड़ी-सी लकड़ी चीर दो!"

येमेला का अलावघर से उतरने को मन नहीं हो रहा था। तभी उसको उस श्चूका की याद आयी और उसने धीरे से कहा :

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"चल री कुल्हाड़ी उठ और जाकर कुछ लकड़ी चीर दे। लकड़ियो, घर के अन्दर चली आओ, कूदकर अलावघर में बैठ जाओ..."

तभी उसने देखा कि कुल्हाड़ी बेंच से नीचे कूदी और आंगन में जाकर लकड़ी चीरने लगी और लकड़ियां अपने आप झोंपड़े के अन्दर आयीं और कूदकर अलावघर में चली गयीं।



इस तरह बहुत समय बीता या थोड़ा समय बीता और तब येमेला की भाभियों ने उससे फिर कहा :

"लकड़ियां ख़त्म हो गयी हैं, येमेला। जाओ, जंगल से कुछ लकड़ी काट लाओ!"

येमेला ने अलावघर पर पड़े-पड़े अंगड़ाई लेते हुए जवाब दिया :

"मेरा मन नहीं चाहता..."

"अच्छा, तो फिर तुम्हें कोई तोहफ़ा नहीं मिलेगा," उसकी भाभियों ने कहा।

अब येमेला क्या करता? वह अलावघर से नीचे उतरा, उसने कपड़े-जूते पहने और रस्सी तथा कुल्हाड़ी लेकर आंगन में गया, स्लेज में बैठा और चिल्लाकर बोला :

"औरतो, फाटक खोलो!"

उसकी भाभियों ने उससे कहा :

"मूर्ख कहीं के! स्लेज में बैठे क्या कर रहे हो? उसमें अभी तुमने घोड़े तो जोते नहीं।"

"मुझे घोड़ों की कोई ज़रूरत नहीं।"

उसकी भाभियों ने फाटक खोल दिया। तब येमेला ने धीरे से कहा :

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"चल री स्लेज, ज़रा जंगल की तरफ़..."

स्लेज सचमुच ऐसे सनसनाती हुई फाटक के बाहर निकलकर दौड़ चली कि कोई घुड़सवार भी उसका पीछे नहीं कर सकता था।

जंगल का रास्ता शहर में से होकर जाता था। स्लेज ने रास्ते में बहुत-से लोगों को गिरा दिया और कुचल दिया। शहर के लोग चिल्लाते: "पकड़ो उसे, रोको उसे!" लेकिन येमेला ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह तो बस स्लेज से और तेज़ चलने के लिए ही कहता रहा।

जंगल में पहुंचकर उसने स्लेज को रोक दिया और बोला:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!"

"चल री कुल्हाड़ी उठ और कुछ सूखी लकड़ी काट दे, लकड़ियों के गट्ठो, तुम स्लेज-गाड़ी में चढ़ जाओ और अपने चारों ओर रस्सी लपेट लो..."

तभी उसने देखा कि कुल्हाड़ी सूखी लकड़ियां काटने और चीरने लगी है और लकड़ियों के गट्ठे एक-एक करके स्लेज-गाड़ी में चढ़ते और रस्सी से बंधते जा रहे हैं। फिर येमेला ने कुल्हाड़ी को हुक्म दिया कि वह उसके लिए एक इतना भारी सोंटा बना दे जिसे उठाना भी मुश्किल हो। इस सब के बाद वह स्लेज पर सवार हो गया और बोला:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"चल री स्लेज, घर की तरफ़..."

स्लेज सचमुच बहुत तेज़ रफ़्तार से चल पड़ी। येमेला फिर उस शहर के बीच से गुज़रा जहां उसने आते समय बहुत-से लोगों को अपनी गाड़ी के नीचे कुचल दिया



था और जहां लोगों की भीड़ उसका इन्तज़ार कर रही थी। उसके आते ही शहर के लोगों ने येमेला को पकड़ लिया और लगे उसको गालियां देने और पीटने।

यह देखकर कि वह बड़ी मुसीबत में फंस गया है, येमेला ने धीरे से कहा:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"चल रे सोंटे इन लोगों को धुन।"

और सोंटा स्लेज से बाहर निकलकर लगा उन लोगों को पीटने। शहर के लोग भागने नज़र आये और येमेला घर लौट आया और फिर से अलावघर पर चढ़कर लेट गया।



इस तरह बहुत समय बीता या थोड़ा समय बीता और ज़ार को भी येमेला की करतूतों की खबर मिली। उसने अपने एक अफ़सर को भेजा कि येमेला का पता लगाकर उसे महल में लाये।

अफ़सर येमेला के गांव में पहुंचा और उसके झोंपड़े में दाखिल होकर बोला:

"तू ही है मूर्ख येमेला? जल्दी से कपड़े पहनकर तैयार हो जा, मैं तुझे ज़ार के पास लिवाने आया हूं।"

"मैं नहीं जाना चाहता..." येमेला ने जवाब दिया।

अफ़सर को यह सुनकर बहुत गुस्सा आया। उसने येमेला को एक चांटा मार दिया। तब येमेला ने धीरे से कहा:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"निकल रे सोंटे, ज़रा धुन इसको!"

सोंटा निकलकर अफ़सर को पीटने लगा। उसने उसे इतना पीटा, इतना पीटा कि अफ़सर का दम निकलते-निकलते बचा।



ज़ार को यह जानकर बड़ा ताज्जुब हुआ कि येमेला उसके अफ़सर के क़ाबू में नहीं आया और इस बार उसने अपना सबसे बड़ा मंसबदार भेजा।

"येमेला का पता लगाओ और उसे मेरे महल में लेकर आओ, वरना मैं तुम्हारी गर्दन कटटव दूंगा," ज़ार ने कहा।

उस बड़े मंसबदार ने बहुत-सी किशमिश, आलूबुख़ारे और मीठी रोटी ख़रीदी, फिर वह उसी गांव में पहुंचा और उसी झोंपड़े में दाख़िल हुआ। वहां उसने येमेला की भाभियों से पूछा कि येमेला को सबसे ज़्यादा क्या पसन्द है।

"येमेला को सबसे ज़्यादा तो यह पसन्द है कि लोग उससे मीठे बोल बोलें," उन्होंने कहा, "तुम अगर उससे हलीमी से बात करोगे और एक लाल चोग़ा तोहफ़े के तौर पर देने का वादा करोगे तो वह कुछ भी करने को तैयार हो जायेगा।"

बड़े मंसबदार ने तब वह सारी किशमिश, आलूबुख़ारे और मीठी रोटी, जो वह अपने साथ लाया था, येमेला को उपहारस्वरूप दिये और उससे कहा:

"भाई येमेला, यहां अलावघर पर क्यों पड़े हो? मेरे साथ ज़ार के महल में चलो! ज़ार तुम्हें ख़ूब खिलायेगा-पिलायेगा, चलो ज़ार के महल में चलें।"

"मैं नहीं जाना चाहता..."

"येमेला, ज़ार तुम्हें एक सुन्दर लाल चोग़ा, टोपी और जूतों का जोड़ा भी तोहफ़े के तौर पर देगा।"

येमेला ने कुछ देर तक सोचा और फिर बोला:

"अच्छा, तुम जाओ, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आता हूं।"

मंसबदार अपने घोड़े पर सवार होकर चला गया। येमेला कुछ देर और अलावघर पर लेटा रहा, फिर उसने कहा:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'
"चल रे अलावघर ज़ार के महल की तरफ़..."

और सचमुच झोंपड़े के चारों छोर डगमगाने लगे, छत हिलने लगी, एक दीवार भरभराकर नीचे गिर पड़ी और अलावघर ख़ुद-ब-ख़ुद बाहर निकलकर सड़क पर चलने लगा। वह सीधे ज़ार के महल की तरफ़ रवाना हो गया।

ज़ार ने खिड़की से देखा तो अचरज में डूब गया।

"यह क्या है?" उसने पूछा।

बड़े मंसबदार ने जवाब दिया:

"यह येमेला है जो अपने अलावघर पर सवार होकर आपके महल की तरफ़ आ रहा है।"

ज़ार अपने महल के छज्जे में आया और बोला:

"येमेला, मेरे पास तुम्हारी बहुत शिकायतें आई हैं। मालूम हुआ है कि तुमने बहुत-से लोगों को अपनी स्लेज के नीचे कुचल दिया है।"

"वे लोग मेरी स्लेज-गाड़ी के रास्ते में क्यों आये थे?" येमेला ने पूछा।

अब, उसी समय ज़ार की बेटी राजकुमारी मारिया महल की खिड़की से बाहर झांक रही थी। येमेला की उस पर नज़र पड़ी तो उसने धीरे से कहा:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'
"ज़ार की बेटी मुझसे प्रेम करने लगे..."

फिर उसने कहा:

"चल रे अलावघर, वापस घर को!"

अलावघर मुड़ा और सीधे येमेला के गांव में पहुंच गया। वह झोंपड़े में दाख़िल हुआ और फिर अपनी पहलेवाली जगह पर जाकर जम गया। येमेला पहले की तरह ही अलावघर पर जा लेटा।

इसी बीच महल में रोना-धोना और चीख़-पुकार मची हुई थी। राजकुमारी मारिया येमेला के लिए रो-रोकर अपना बुरा हाल कर रही थी। उसने अपने बाप से कह दिया कि वह येमेला के बिना ज़िन्दा नहीं रह सकती औरं अनुरोध किया कि उसे येमेला से विवाह करने की इजाज़त दे दी जाये। ज़ार बहुत परेशान और दुखी हुआ। उसने फिर अपने बड़े मंसबदार से कहा:

"जाओ और येमेला को ज़िन्दा या मुर्दा यहां पकड़कर ले आओ। अगर इस काम को पूरा किये बग़ैर लौटोगे तो तुम्हारी गर्दन उड़ा दी जायेगी।"

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"चल रे अलावघर ज़ार के महल की तरफ़..."

और सचमुच झोंपड़े के चारों छोर डगमगाने लगे, छत हिलने लगी, एक दीवार भरभराकर नीचे गिर पड़ी और अलावघर ख़ुद-ब-ख़ुद बाहर निकलकर सड़क पर चलने लगा। वह सीधे ज़ार के महल की तरफ़ रवाना हो गया।

ज़ार ने खिड़की से देखा तो अचरज में डूब गया।

"यह क्या है?" उसने पूछा।

बड़े मंसबदार ने जवाब दिया:

"यह येमेला है जो अपने अलावघर पर सवार होकर आपके महल की तरफ़ आ रहा है।"

ज़ार अपने महल के छज्जे में आया और बोला:

"येमेला, मेरे पास तुम्हारी बहुत शिकायतें आई हैं। मालूम हुआ है कि तुमने बहुत-से लोगों को अपनी स्लेज के नीचे कुचल दिया है।"

"वे लोग मेरी स्लेज-गाड़ी के रास्ते में क्यों आये थे?" येमेला ने पूछा।

अब, उसी समय ज़ार की बेटी राजकुमारी मारिया महल की खिड़की से बाहर झांक रही थी। येमेला की उस पर नज़र पड़ी तो उसने धीरे से कहा:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"ज़ार की बेटी मुझसे प्रेम करने लगे..."

फिर उसने कहा:

"चल रे अलावघर, वापस घर को!"

अलावघर मुड़ा और सीधे येमेला के गांव में पहुंच गया। वह झोंपड़े में दाखिल हुआ और फिर अपनी पहलेवाली जगह पर जाकर जम गया। येमेला पहले की तरह ही अलावघर पर जा लेटा।

इसी बीच महल में रोना-धोना और चीख़-पुकार मची हुई थी। राजकुमारी मारिया येमेला के लिए रो-रोकर अपना बुरा हाल कर रही थी। उसने अपने बाप से कह दिया कि वह येमेला के बिना ज़िन्दा नहीं रह सकती और अनुरोध किया कि उसे येमेला से विवाह करने की इजाज़त दे दी जाये। ज़ार बहुत परेशान और दुखी हुआ। उसने फिर अपने बड़े मंसबदार से कहा:

"जाओ और येमेला को ज़िन्दा या मुर्दा यहां पकड़कर ले आओ। अगर इस काम को पूरा किये बग़ैर लौटोगे तो तुम्हारी गर्दन उड़ा दी जायेगी।"

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"चल रे अलावघर ज़ार के महल की तरफ़..."

और सचमुच भोंपड़े के चारों छोर डगमगाने लगे, छत हिलने लगी, एक दीवार भरभराकर नीचे गिर पड़ी और अलावघर खुद-ब-खुद बाहर निकलकर सड़क पर चलने लगा। वह सीधे ज़ार के महल की तरफ़ रवाना हो गया।

ज़ार ने खिड़की से देखा तो अचरज में डूब गया।

"यह क्या है?" उसने पूछा।

बड़े मंसबदार ने जवाब दिया:

"यह येमेला है जो अपने अलावघर पर सवार होकर आपके महल की तरफ़ आ रहा है।"

ज़ार अपने महल के छज्जे में आया और बोला:

"येमेला, मेरे पास तुम्हारी बहुत शिकायतें आई हैं। मालूम हुआ है कि तुमने बहुत-से लोगों को अपनी स्लेज के नीचे कुचल दिया है।"

"वे लोग मेरी स्लेज-गाड़ी के रास्ते में क्यों आये थे?" येमेला ने पूछा।

अब, उसी समय ज़ार की बेटी राजकुमारी मारिया महल की खिड़की से बाहर भांक रही थी। येमेला की उस पर नज़र पड़ी तो उसने धीरे से कहा:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"ज़ार की बेटी मुभसे प्रेम करने लगे..."

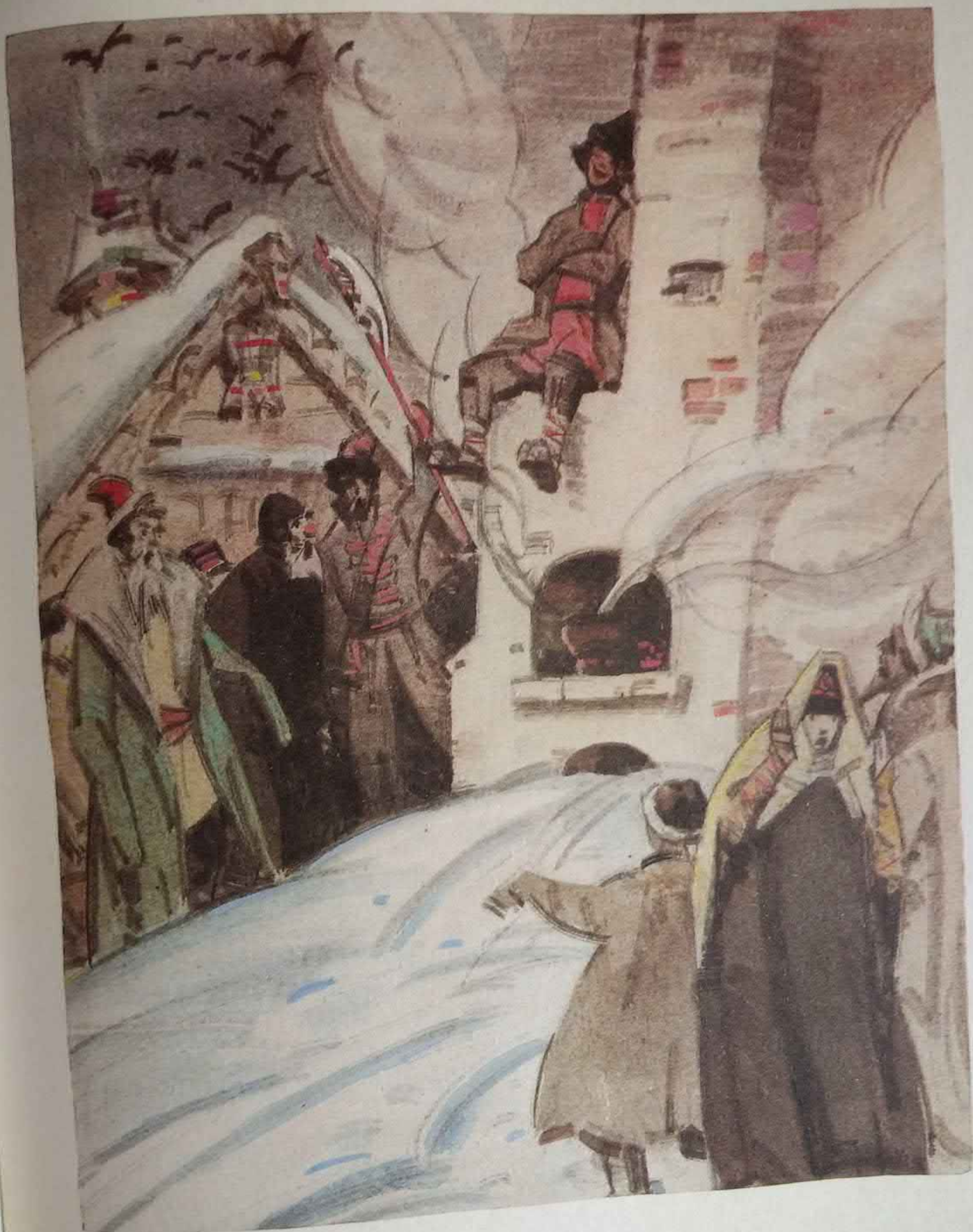
फिर उसने कहा:

"चल रे अलावघर, वापस घर को!"

अलावघर मुड़ा और सीधे येमेला के गांव में पहुंच गया। वह भोंपड़े में दाख़िल हुआ और फिर अपनी पहलेवाली जगह पर जाकर जम गया। येमेला पहले की तरह ही अलावघर पर जा लेटा।

इसी बीच महल में रोना-धोना और चीख़-पुकार मची हुई थी। राजकुमारी मारिया येमेला के लिए रो-रोकर अपना बुरा हाल कर रही थी। उसने अपने बाप से कह दिया कि वह येमेला के बिना ज़िन्दा नहीं रह सकती और अनुरोध किया कि उसे येमेला से विवाह करने की इजाज़त दे दी जाये। ज़ार बहुत परेशान और दुखी हुआ। उसने फिर अपने बड़े मंसबदार से कहा:

"जाओ और येमेला को ज़िन्दा या मुर्दा यहां पकड़कर ले आओ। अगर इस काम को पूरा किये बग़ैर लौटोगे तो तुम्हारी गर्दन उड़ा दी जायेगी।"



बड़े मंसबदार ने खाने की बहुत-सी बढ़िया-बढ़िया चीज़ें और मीठी शराबें ख़रीदीं और सब सामान लेकर फिर येमेला के गांव के लिए रवाना हो गया। वह उसी झोंपड़े में पहुंचा और येमेला की बढ़िया दावत करने लगा। येमेला ने पेट भरकर बढ़िया खाना खाया और ख़ूब शराब पी। आख़िर उसका सिर घूमने लगा और वह पड़कर सो गया। तब मंसबदार ने सोते हुए येमेला को गाड़ी में डाला और घोड़े पर सवार होकर ज़ार के महल की ओर चल दिया। ज़ार ने हुक्म दिया कि फ़ौरन एक बहुत बड़ा पीपा लाया जाये जिसके गिर्द लोहे के पतरे लगे हों। येमेला और राजकुमारी मारिया को इस पीपे में बन्द कर दिया गया और पीपे पर राल का लेप करके उसे समुद्र में छोड़ दिया गया। इस तरह बहुत समय बीता या थोड़ा समय बीता और जब येमेला जागा तो उसने अपने चारों तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा पाया। उसे यह भी लगा कि वह किसी संकरी-सी चीज़ में बन्द है। तब उसने कहा:

"मैं कहां हूं?"

जवाब मिला:

"क़िस्मत के मारे हैं हम लोग, येमेला, मेरे प्यारे! उन लोगों ने हमें राल से पुते हुए एक पीपे में बन्द करके नीले सागर में छोड़ दिया है।"

"और तुम कौन हो?" येमेला ने पूछा।

"मैं राजकुमारी मारिया हूं।"

तब येमेला ने कहा:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"चलो री तेज़ हवाओ, इस पीपे को सूखी ज़मीन पर पहुंचा दो और उसे पीली रेत पर टिक जाने दो!"

सचमुच, तभी बड़ी तेज़ हवाएं चलने लगीं, समुद्र खौलने लगा, पीपा सूखी ज़मीन पर पहुंच गया और पीली रेत पर टिक गया। राजकुमारी मारिया और येमेला उसमें से बाहर निकले और तब राजकुमारी मारिया ने कहा:

"येमेला, मेरे प्यारे, अब हम लोग कहां रहेंगे? हम लोगों को एक झोंपड़ा तो ज़रूर बनाना चाहिए।"

"मैं नहीं बनाना चाहता..."

लेकिन राजकुमारी बहुत गिड़गिड़ायी, बहुत गिड़गिड़ायी और आख़िर येमेला ने कहा:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"फ़ौरन पत्थरों का एक महल बन जाये जिसकी छत सोने की हो!"

उसके मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि सोने की छतवाला पत्थरों का एक महल बनकर खड़ा हो गया। उसके चारों ओर हरा-भरा बाग़ था, जिसमें फूल खिले हुए थे और चिड़ियां चहचहा रही थीं। राजकुमारी मारिया और येमेला महल में दाख़िल हुए और खिड़की के पास जाकर बैठ गये।

राजकुमारी ने कहा:

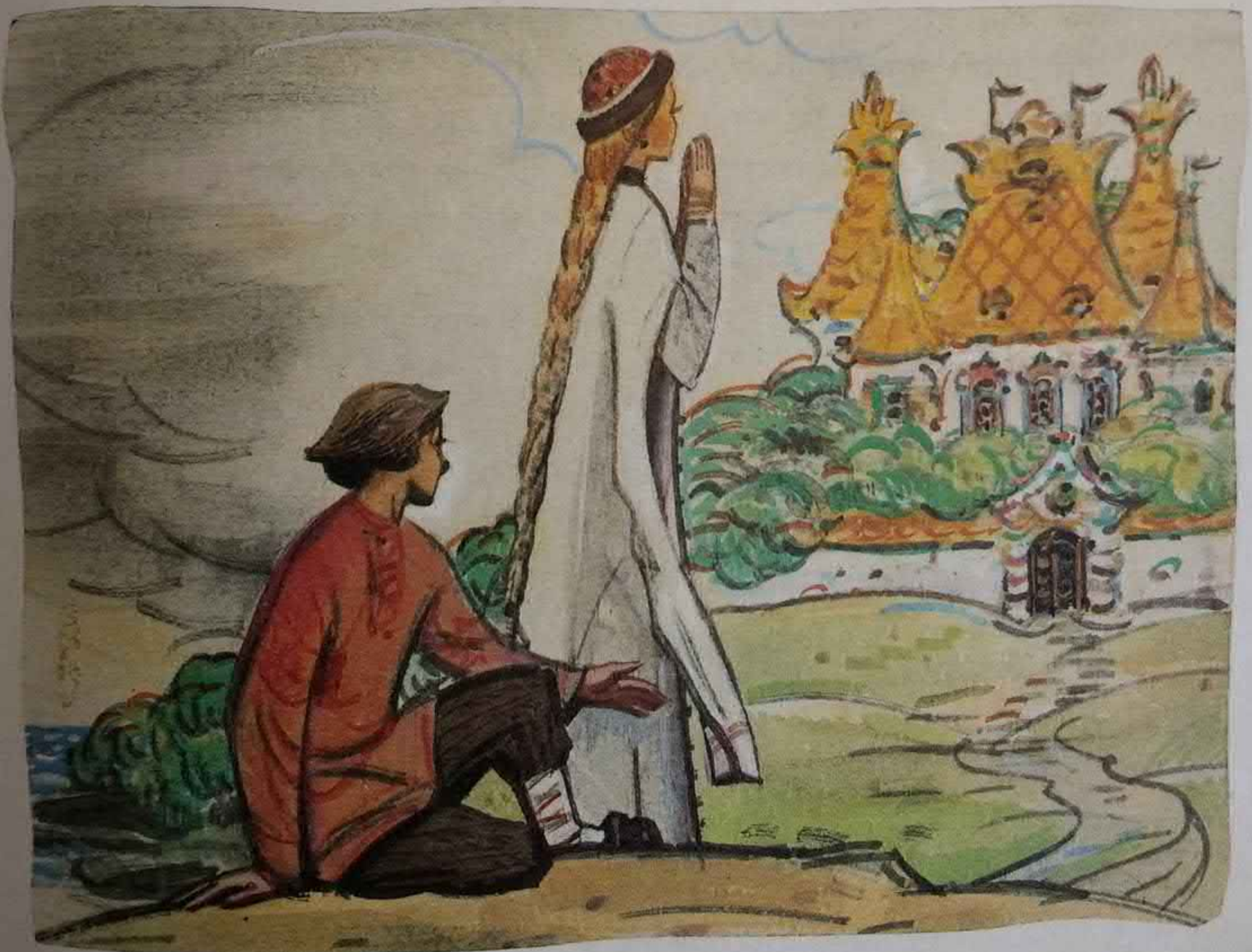
"येमेला, मेरे प्यारे, तुम सुन्दर नहीं बन सकते क्या?"

येमेला ने बहुत सोच-विचार न किया और फ़ौरन कहा:

"'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'

"मैं बहुत सुन्दर वीर युवक बन जाऊं..."

देखते ही देखते येमेला उषा जैसा सुन्दर युवक बन गया।



इसी समय ज़ार शिकार खेलता हुआ वहां आ निकला और उसने एक ऐसा शानदार महल देखा जैसा पहले कभी नहीं देखा था।

"यह किस मूर्ख ने मेरी ज़मीन पर महल बनाने की जुर्रत की है?" उसने कहा और अपने दूतों को पता लगाने के लिए भेजा कि यह बड़ा जुर्म किसने किया है।

ज़ार के दूत दौड़ते हुए महल के सामने पहुंचे, खिड़की के नीचे जा खड़े हुए और पूछने लगे: "तुम कौन हो?"

"ज़ार से जाकर कहो कि वह ख़ुद यहां आये, मैं उसे ही बताऊंगा कि मैं कौन हूं," येमेला ने जवाब दिया।

तो ज़ार वहां पहुंचा। येमेला महल के फाटक पर उससे मिला, उसे महल के अन्दर ले गया और उसने उसकी शाही दावत की। ज़ार खाता जाता था, पीता जाता था और अचरज में डूबता जाता था।

"तुम कौन हो, वीर युवक?" आख़िर उसने पूछा।

"क्या आपको उस मूर्ख येमेला की याद है जो एक अलावघर पर चढ़कर आपसे मिलने आया था?" येमेला ने कहा। "क्या आपको याद है कि आपने किस तरह उसे अपनी बेटी राजकुमारी मारिया के साथ राल पुते एक पीपे में बन्द कराकर समुद्र में फिंकवा दिया था? मैं वही येमेला हूं। अगर मैं चाहूं तो आपके पूरे राज्य में आग लगाकर उसे मटियामेट कर सकता हूं।"

ज़ार का दम निकल गया और वह येमेला से माफ़ी मांगने लगा।

"मुझ पर दया करो, येमेला!" उसने कहा, "तुम मेरी बेटी से ब्याह कर लो और मेरा राज-पाट ले लो।"

तब ऐसी शानदार दावत हुई कि दुनिया दंग रह गयी। येमेला का राजकुमारी मारिया के साथ बड़ी धूम-धाम से विवाह हो गया और वह राज करने लगा।

इस तरह ख़त्म होता है मेरा क़िस्सा, जिसने सुना उसका हो भला।



मेंढकी रानी

बहुत पहले की बात है कि एक ज़ार था जिसके तीन बेटे थे। जब बेटे बड़े हो गये तो ज़ार ने उन्हें बुलाकर कहा :

"मेरे प्यारे बेटो, मैं चाहता हूं कि तुम लोगों की शादी हो जाये, ताकि मरने से पहले मैं तुम्हारे बच्चों यानी अपने पोतों को भी देख लूं।"

उसके बेटों ने जवाब दिया :

"बहुत अच्छा, पिताजी, हमें आशीर्वाद दीजिये। बताइये, हम किससे शादी करें?"

"तुम तीनों कमान और एक-एक तीर लेकर खुले मैदान में जाओ और वहां पहुंचकर तीर छोड़ो। जहां तुम्हारा तीर गिरेगा, वहीं तुम्हारी शादी होगी।"

सो तीनों लड़कों ने बाप को प्रणाम किया, कमान और एक-एक तीर लिया और खुले मैदान में चले गये। वहां उन्होंने अपना-अपना तीर धनुष पर चढ़ाकर छोड़ दिया।

सबसे बड़े लड़के का तीर एक जागीरदार के अहाते में जाकर गिरा और उसे जागीरदार की लड़की ने उठा लिया। मंझले लड़के का तीर एक सौदागर के अहाते में जाकर गिरा और उसे सौदागर की लड़की ने उठा लिया।

लेकिन सबसे छोटे लड़के, राजकुमार इवान का तीर आसमान की तरफ़ दूर उड़ गया और वह यह नहीं देख सका कि वह कहां जाकर गिरा है। वह अपने तीर की तलाश में चला और चलता ही गया। आख़िर वह एक दलदल के पास पहुंचा, जहां उसने क्या देखा कि एक मेंढकी उसके तीर को मुंह में दबाये हुए एक पत्ते पर बैठी है। राजकुमार इवान ने उससे कहा:

"मेंढकी, मेंढकी, मुझे मेरा तीर लौटा दे!"

मेंढकी ने जवाब दिया:

"मुझसे शादी करनी पड़ेगी!"

"यह तुम क्या कहती हो? मेंढकी से मैं कैसे शादी कर सकता हूं?"

"मुझसे ही शादी करनी पड़ेगी। तुम्हारे भाग्य में यही लिखा है।"

राजकुमार इवान बहुत दुखी और निराश हुआ, मगर क्या कर सकता था बेचारा? वह मेंढकी को उठाकर अपने घर ले आया। ज़ार ने तीन शादियां रचायीं। सबसे बड़े लड़के की शादी जागीरदार की बेटी से हुई, मंझले की सौदागर की बेटी से और बेचारा इवान मेंढकी से ब्याह गया।

एक दिन ज़ार ने अपने बेटों को बुलाकर कहा:

"मैं यह देखना चाहता हूं कि तुम तीनों की बीवियों में से कौन सबसे अच्छा सीना-पिरोना जानती है। जाओ, उनसे कहो कि उनमें से प्रत्येक कल सुबह तक एक-एक क़मीज़ सीकर मुझे दे।"

तीनों बेटों ने बाप को प्रणाम किया और चले आये।

राजकुमार इवान घर लौटा तो बहुत दुखी था। मेंढकी फ़र्श पर फुदकती हुई उसके पास आयी और बोली:

"राजकुमार इवान, इतने दुखी क्यों हो? क्या कोई मुश्किल आ पड़ी है?"

"मेरे पिता जी चाहते हैं कि तुम कल सुबह तक उनके लिए एक क़मीज़ सीकर दो!"

मेंढकी ने जवाब दिया:

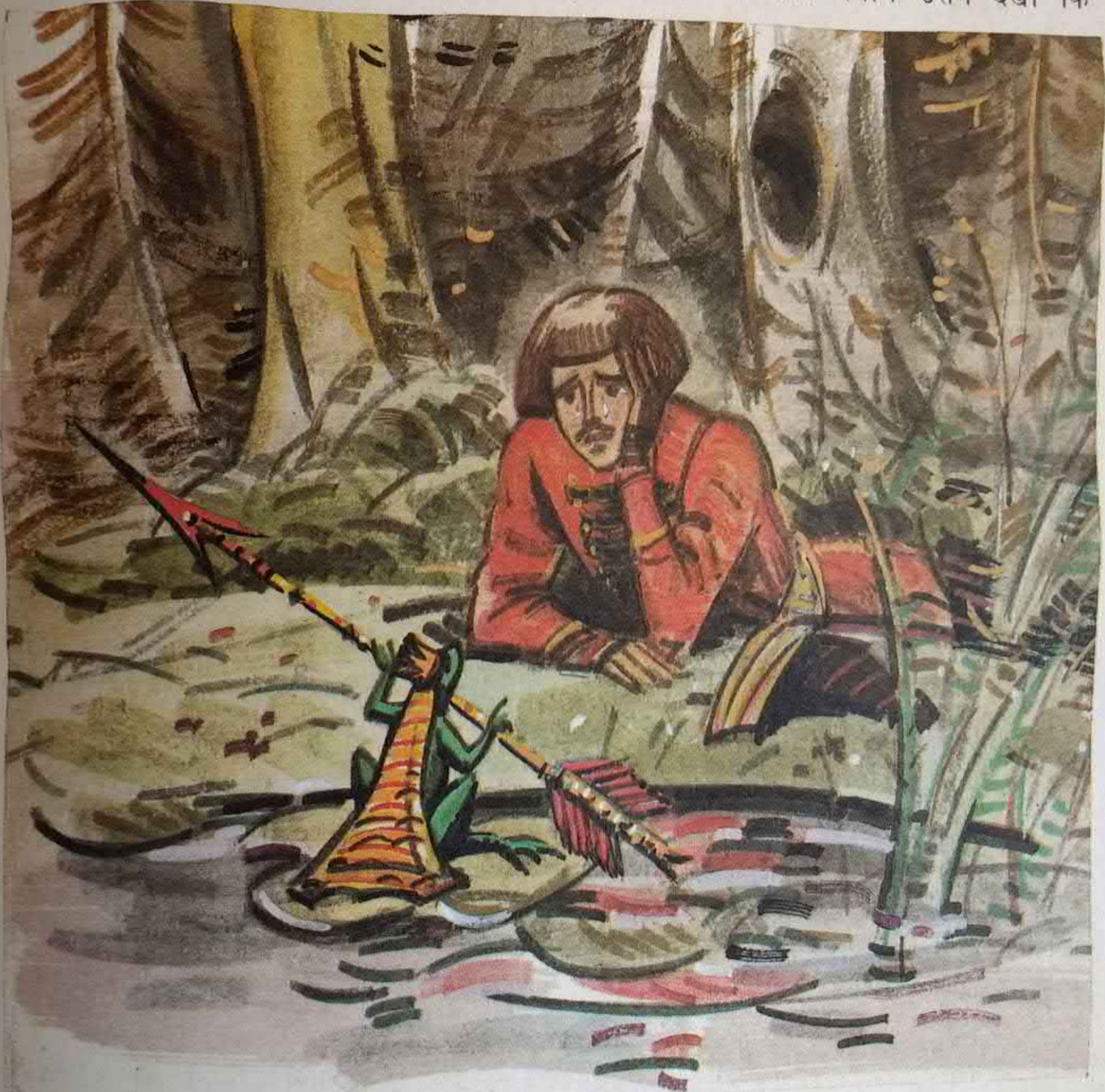
"तो इसमें परेशान होने की क्या बात है, राजकुमार इवान! जाओ, जाकर सो जाओ! रात से प्रभात भला। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

सो राजकुमार इवान सोने चला गया और मेंढकी फुदकती-फुदकती बाहर ओसारे में आयी। वहां उसने मेंढकी की खाल उतार डाली और इतनी सुन्दर और बुद्धिमती वासिलीसा बन गयी कि बयान से बाहर।

उसने ताली बजाकर ज़ोर से कहा :

"मेरी दासियो और दाइयो, तैयार हो जाओ और संभलकर काम करो! कल सुबह तक तुम्हें ठीक वैसी ही एक क़मीज़ सीकर मुझे देनी है जैसी मेरे पिताजी पहना करते थे!"

राजकुमार इवान जब सुबह सोकर उठा तो मेंढकी फिर फ़र्श पर फुदक रही थी और मेज़ पर एक तौलिये में लिपटी हुई क़मीज़ रखी थी। राजकुमार इवान उसे देखकर बहुत खुश हुआ। वह क़मीज़ लेकर अपने बाप के पास गया। उसने देखा कि



उसके दो भाई भी एक-एक कमीज़ लेकर आये हैं। जब सबसे बड़े लड़के ने अपनी कमीज़ ज़ार के सामने फैलाकर रखी तो ज़ार ने कहा :

"यह क़मीज़ तो मेरे किसी नौकर के लिए ठीक रहेगी।"

जब मंझले लड़के ने अपनी क़मीज़ फैलाकर रखी तो ज़ार ने कहा :

"यह सिर्फ़ ग़ुसलख़ाने में काम आ सकती है।"

अब राजकुमार इवान ने अपनी क़मीज़ ज़ार के सामने फैलायी। उस पर सुनहरा और रुपहला सुन्दर क़सीदा कढ़ा हुआ था। ज़ार ने उस पर एक नज़र डालते ही कहा :

"हां, यह है क़मीज़ – पर्व-त्योहार के दिन पहनने लायक़!"

बड़ा और मंझला भाई घर लौट गये। उन्होंने एक-दूसरे से कहा :

"हम लोग राजकुमार इवान की बीवी पर व्यर्थ ही हंसते थे – मालूम होता है, वह मेंढकी नहीं, जादूगरनी है..."

ज़ार ने एक रोज़ फिर अपने बेटों को बुलाया।

"अपनी बीवियों से कहो कि कल सुबह तक मेरे लिए रोटी पकाकर तैयार करें," उसने कहा। "मैं देखना चाहता हूं कि कौन-सी बहू सबसे अच्छा खाना पकाती है।"

राजकुमार इवान घर लौटा तो फिर बहुत उदास था। मेंढकी ने पूछा :

"इतने उदास क्यों हो, राजकुमार?"

"ज़ार चाहते हैं कि कल सुबह तक तुम उनके लिए रोटी पकाकर तैयार कर दो," राजकुमार ने जवाब दिया।

"तो इसमें परेशान होने की क्या बात है, राजकुमार इवान! जाओ, जाकर सो जाओ! रात से प्रभात भला। सुबह ज़रूर कोई तरकीब निकल आयेगी।"

अब ज़ार की जो दूसरी दो बहुएं थीं, उन्होंने पहले तो मेंढकी का मज़ाक़ उड़ाया था, पर इस बार उन्होंने एक बुढ़िया को यह देखने के लिए भेजा कि मेंढकी रोटी किस तरह पकाती है।

लेकिन मेंढकी भी चालाक थी। वह उनकी चाल समझ गयी। उसने आटा गूंधा और तन्दूर का ऊपरवाला सिरा तोड़कर सारा आटा सीधे उस सूराख़ में डाल दिया। बुढ़िया दौड़ती हुई गयी और उसने जो कुछ देखा था सब ज़ार की बहुओं से कह सुनाया। और उन दोनों ने भी वही किया जो मेंढकी ने किया था।

उधर मेंढकी फिर फुदकती हुई बाहर ओसारे में आयी। वहां वह बुद्धिमती वासिलीसा बन गयी और उसने ताली बजाकर हुक्म दिया :

"मेरी दासियो और दाइयो, तैयार हो जाओ और होशियारी से काम करो!



कल सुबह तक तुम्हें वैसी ही एक सफ़ेद और मुलायम रोटी पकाकर मुझे देनी है जैसी मैं घर पर खाया करती थी।"

राजकुमार इवान सुबह सोकर उठा तो उसने देखा कि मेज़ पर एक बढ़िया रोटी रखी हुई है। उस पर तरह-तरह के सुन्दर चित्र बने हुए हैं, दोनों तरफ़ कुछ विचित्र-सी आकृतियां हैं और ऊपर दीवारों और फाटकों समेत नगरों का चित्र अंकित है।

राजकुमार इवान की ख़ुशी का ठिकाना न था। उसने रोटी को एक तौलिये में लपेट लिया और अपने बाप के पास ले गया। उसके दोनों बड़े भाई भी उसी वक़्त अपनी-अपनी रोटी लेकर ज़ार के पास पहुंचे थे। उनकी बीवियों ने, जैसा उस बुढ़िया ने उन्हें बताया था, ठीक वैसे ही अपना आटा तन्दूर में डाल दिया था और वह उसी शक्ल में जला-भुना हुआ बाहर निकल आया था। ज़ार ने पहले अपने सबसे बड़े लड़के की रोटी हाथ में ली, उसे देखा और देखकर नौकरों के यहां भिजवा दिया। फिर उसने

अपने मंझले लड़के की रोटी हाथ में ली, उसे देखा और देखकर उसे भी वहीं भिजवा दिया। मगर जब राजकुमार इवान ने अपनी रोटी ज़ार के हाथ में दी तो उसने कहा:

"यह है जिसे सचमुच रोटी कहा जा सकता है। यह केवल पर्व-त्योहार के दिन खाने के लायक़ है।"

तभी ज़ार ने अपने तीनों बेटों से कहा कि कल उसके यहां दावत है और वे उसमें अपने बीवियों को साथ लेकर आयें।

राजकुमार इवान घर पहुंचा तो फिर शोक में डूबा हुआ था। मेंढकी फुदकती हुई आयी और बोली:

"टर्र, टर्र, तुम इतने दुखी क्यों हो, राजकुमार इवान? क्या तुम्हारे पिता ने कोई सख़्त-सुस्त बात कह दी है?"

"मेंढकी, मेंढकी, मैं उदास कैसे न होऊं? पिताजी चाहते हैं कि मैं तुम्हें साथ लेकर दावत में जाऊं, लेकिन बताओ तो, तुम कैसे मेरी पत्नी के रूप में सबके सामने जा सकती हो?"

"परेशान न होओ, राजकुमार इवान," मेंढकी ने कहा। "तुम अकेले ही दावत में जाना। मैं बाद में आऊंगी। जब तुम खटखट-फटफट का शोर सुनो तो डरना नहीं। कोई पूछे तो कह देना कि मेरी मेंढकी अपने बक्से में बैठकर आयी होगी।"

सो राजकुमार इवान अकेला ही दावत में चला गया। उसके दोनों भाई अपनी बीवियों को साथ लेकर आये थे। उनकी बीवियों ने अपने चेहरे खूब रंग-चुन रखे थे और वे बड़े सुन्दर कपड़े पहनकर आयी थीं। दोनों भाई राजकुमार इवान का मज़ाक़ उड़ाने लगे:

"कहो, अपनी बीवी को क्यों नहीं लाये? अरे, अपने रूमाल में बांध लाते उसे! भई, सचमुच यह सुन्दरी तुम्हें मिली कहां? शायद सारी दुनिया के दलदल खोज मारे होंगे तुमने उसके लिए।"

ज़ार, उसके लड़के, उसकी बहुएं और सभी मेहमान खाने-पीने की चीज़ों से अटी हुई बलूत की मेज़ों पर दावत उड़ाने के लिए बैठ गये। इतने में यकायक खटखट-फटफट का ऐसा शोर हुआ कि पूरा महल हिल उठा। मेहमान डर के मारे खाना छोड़कर खड़े हो गये। लेकिन राजकुमार इवान ने सबको समझाया:

"डरो मत, दोस्तो, वह तो मेरी मेंढकी है जो अपने बक्से में बैठकर आ रही है।"

इतने में सोने का पत्तर चढ़ी एक गाड़ी, जिसमें छः सफ़ेद घोड़े जुते हुए थे,

बड़ी तेज़ी से आई और महल के फाटक के सामने आकर खड़ी हो गयी। उसमें से उतरी बुद्धिमती वासिलीसा। उसने आकाश जैसे नीले रेशम की पोशाक पहन रखी थी जिस पर जगह-जगह तारे जड़े हुए थे और उसके माथे पर चांद चमक रहा था। वह उषा जैसी सुन्दर थी, बल्कि कहना चाहिए कि ऐसी सुन्दरी संसार में कभी पैदा ही नहीं हुई थी। उसने राजकुमार इवान का हाथ थाम लिया और उसे खाने-पीने की चीज़ों से अटी हुई बलूत की मेज़ों की तरफ़ ले गयी।

मेहमान मज़े से खाने-पीने लगे। बुद्धिमती वासिलीसा ने अपने गिलास से मदिरा पी थी और जो बच गयी उसे अपनी बायीं आस्तीन में उंडेल दिया। फिर उसने हंस का थोड़ा-सा गोश्त खाया और हड्डियां अपनी दायीं आस्तीन में डाल दीं।

बड़े और मंझले राजकुमारों की बीवियों ने उसे यह करते देखा तो उन्होंने भी उसकी नक़ल की।

जब खाना-पीना समाप्त हो गया तो नृत्य करने का समय आया। बुद्धिमती वासिलीसा राजकुमार इवान का हाथ थामकर नाचने लगी। वह फिरकी की तरह चक्कर खाती हुई नाच रही थी और हर आदमी उसे देख-देखकर दांतों तले उंगली दबा रहा था। इतने में उसने बायीं आस्तीन हिलायी, और वाह! एक झील दिखाई देने लगी। फिर उसने अपनी दायीं आस्तीन हिलायी और झील में सफ़ेद हंस तैरते हुए नज़र लगे। ज़ार और सारे मेहमान आश्चर्यचकित रह गये।

फिर ज़ार की दूसरी बहुओं ने नृत्य आरम्भ किया। उन्होंने अपनी एक आस्तीन हिलायी तो मेहमानों पर शराब के छींटे जा गिरे। फिर उन्होंने दूसरी आस्तीन हिलायी तो पूरे हाल में हड्डियां बिखर गयीं और एक हड्डी सीधे ज़ार की आंख में जाकर लगी। ज़ार गुस्से से आग-बबूला हो गया और उसने दोनों बहुओं को डांट-डपटकर वहां से भगा दिया।

इसी बीच, राजकुमार इवान चुप-चाप महल से निकलकर अपने घर दौड़ गया था। वहां उसने मेंढकी की खाल पड़ी हुई देखी तो उसे उठाकर आग में फेंक दिया।

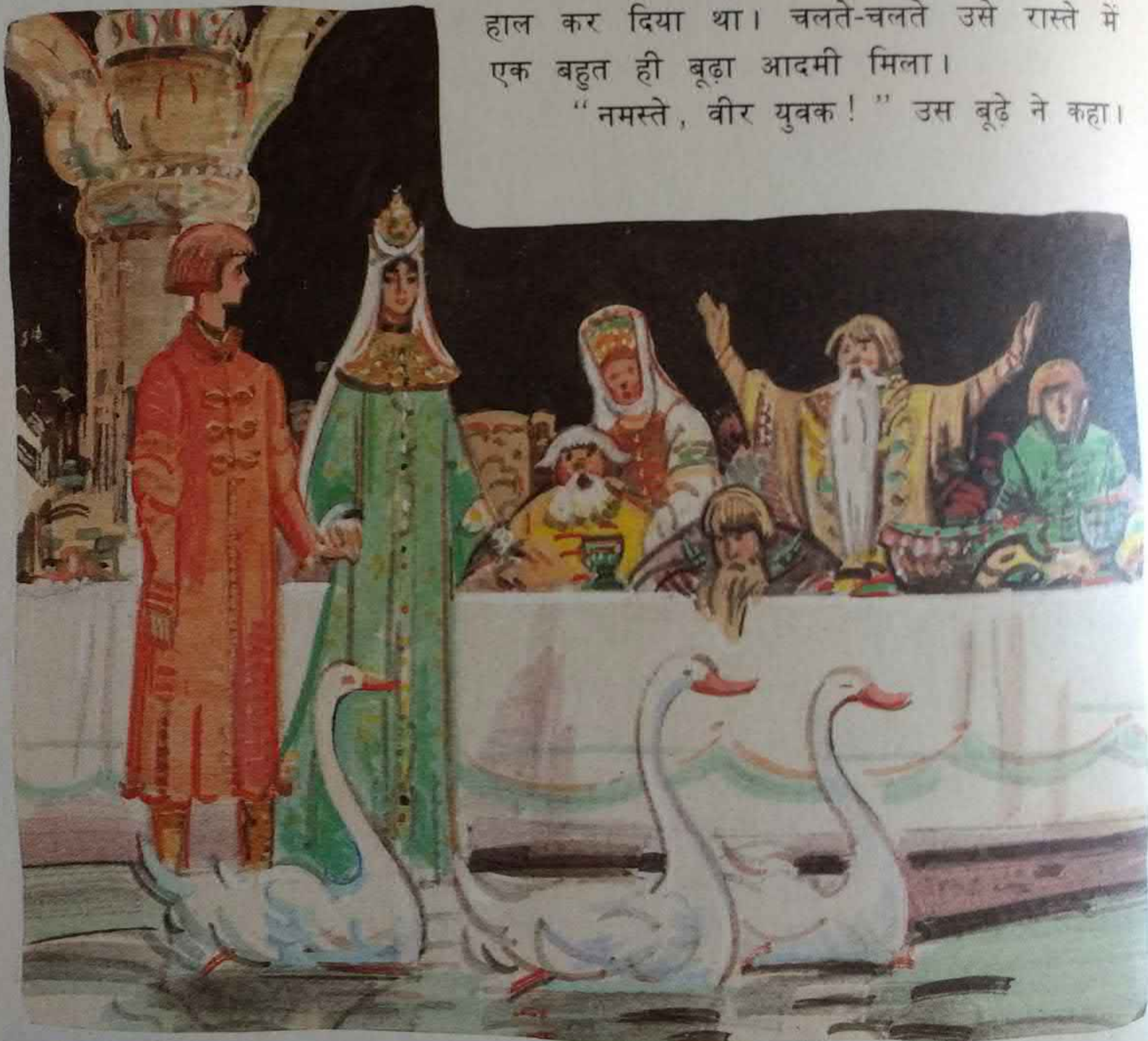
जब बुद्धिमती वासिलीसा घर लौटी तो मेंढकी की खाल खोजने लगी, मगर वह होती तो कहीं मिलती। वह बेंच पर बैठ गयी और बहुत दुखी होकर राजकुमार इवान से बोली:

"ओह राजकुमार इवान, यह क्या किया तुमने! तुम बस, तीन दिन और इन्तज़ार कर लेते तो मैं सदा-सदा के लिए तुम्हारी हो जाती। पर अब तो मुझे तुमसे विदा लेनी पड़ेगी। मुझे पाना चाहते हो तो नौ-तिया-सत्ताईस देश के परे दस-तिया-तीस

राज्य में मेरी तलाश करना जहां चिर कंकाल कोश्चेई रहता है..."

यह कहकर बुद्धिमती वासिलीसा ने एक भूरी कोयल का रूप धारण किया और खिड़की से बाहर उड़ गयी।

राजकुमार इवान बहुत देर तक रोता रहा, फिर उसने चारों दिशाओं को प्रणाम किया और अपनी पत्नी, बुद्धिमती वासिलीसा की तलाश में चल दिया। वह दूर तक चलता रहा या नज़दीक तक, बहुत देर तक चलता रहा या कम देर तक – यह कहना मुश्किल है, मगर चलते-चलते उसके जूते फट गये थे, उसका चोग़ा चिथड़े-चिथड़े हो गया था और बारिश ने उसकी टोपी का बुरा हाल कर दिया था। चलते-चलते उसे रास्ते में एक बहुत ही बूढ़ा आदमी मिला।



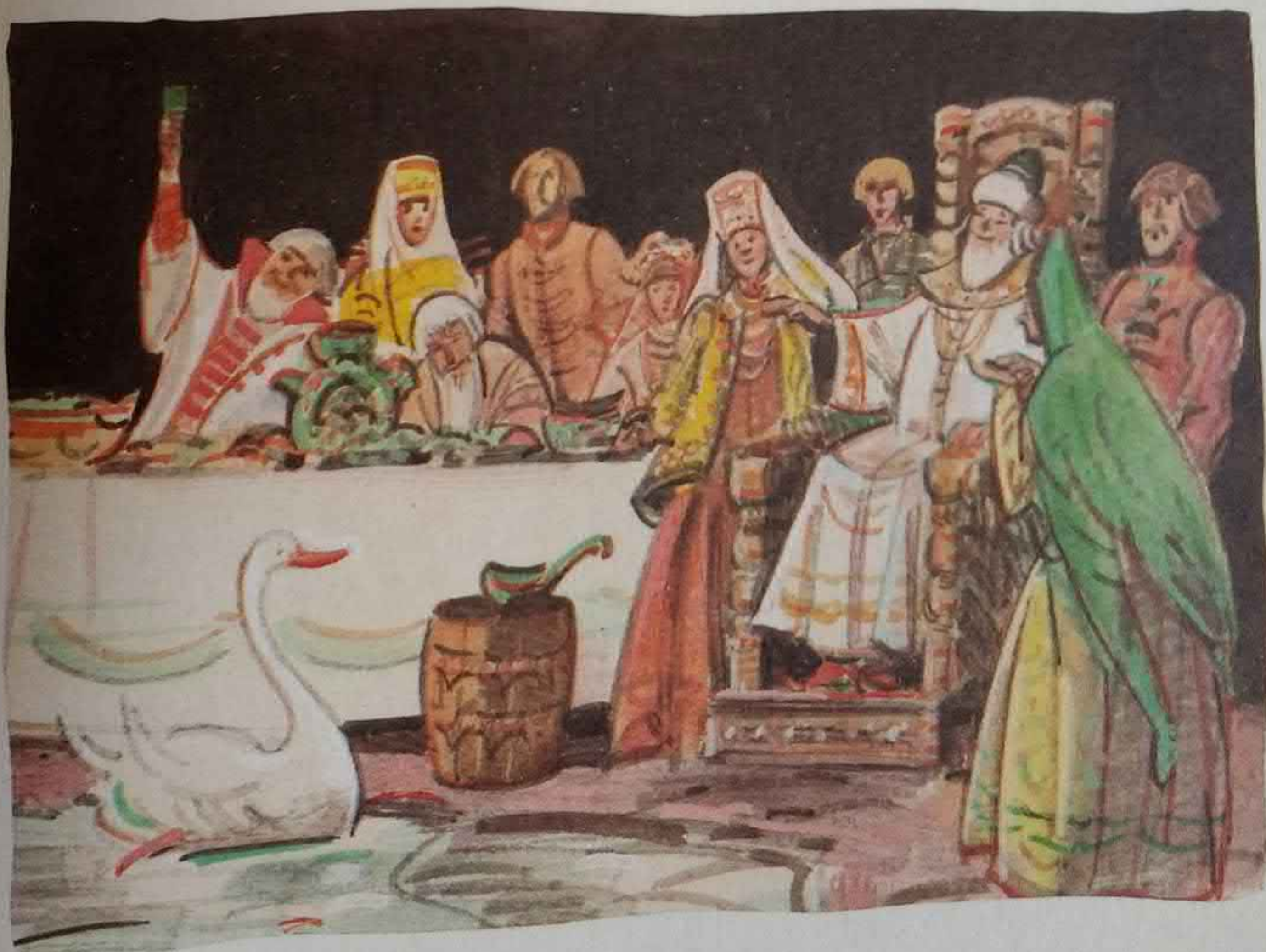
"नमस्ते, वीर युवक!" उस बूढ़े ने कहा।

"तुम कहां जा रहे हो और किस इरादे से निकले हो?"

राजकुमार इवान ने उसे अपनी मुसीबत सुनाई।

"हाय, पर वह मेंढकी की खाल तुमने क्यों जला दी थी, राजकुमार?" बूढ़े ने कहा। "न तो तुमने उसे पहनाया था न तुम्हें उतारना चाहिए था। बुद्धिमती वासिलीसा जन्म से ही अपने पिता से भी अधिक समझदार थी। इसलिए उसके पिता को इतना गुस्सा आया कि तीन बरस के लिए उसने उसे मेंढकी बना दिया। पर अब क्या हो सकता है! ख़ैर, यह सूत का गोला लो और जिधर भी यह लुढ़कता जाये, तुम उधर ही बेख़ौफ़ चलते जाना!"

राजकुमार इवान ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और फिर सूत के उस गोले के पीछे-पीछे चलने लगा। गोला आगे-आगे लुढ़कता जाता था और राजकुमार उसके पीछे चलता जाता था। खुले मैदान में एक रीछ मिला। राजकुमार इवान निशाना साधकर



उसे मारने ही वाला था कि रीछ मनुष्य की आवाज़ में बोला:

"मुझे मारो नहीं, राजकुमार इवान। हो सकता है, किसी रोज़ तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़े।"

राजकुमार इवान ने रीछ की जान बख़्श दी और आगे बढ़ा। यकायक उसने अपने सिर के ऊपर आसमान में एक बत्तख़ उड़ती देखी। उसने निशाना बांधा, पर इतने में बत्तख़ मनुष्य की आवाज़ में बोली:

"मुझे मारो नहीं, राजकुमार इवान। हो सकता है, किसी रोज़ तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़े।"

उसने बत्तख़ की भी जान बख़्श दी और वह आगे बढ़ा। रास्ते में एक ख़रगोश दौड़ता हुआ आ रहा था। राजकुमार इवान ने जल्दी से अपना धनुष कंधे से उतारा और फिर निशाना साधना चाहा। मगर इतने में ख़रगोश मनुष्य की आवाज़ में बोला:

"मुझे मारो नहीं, राजकुमार इवान। हो सकता है, किसी रोज़ तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़े।"

सो उसने ख़रगोश की जान भी बख़्श दी और वह आगे बढ़ा। रास्ते में एक नीला समुद्र आया। राजकुमार ने देखा कि एक मछली समुद्र के किनारे पर पड़ी तड़प रही है।

"राजकुमार इवान," मछली ने कहा, "मुझ पर दया करो और मुझे उठाकर फिर नीले समुद्र में फेंक दो!"

सो राजकुमार ने मछली को उठकर नीले समुद्र में फेंक दिया और वह समुद्र के किनारे-किनारे आगे बढ़ने लगा। सूत का गोला लुढ़कते-लुढ़कते एक जंगल के पास पहुंचा। वहां एक झोंपड़ी लट्टू की तरह घूम रही थी और उसके पैर मुर्ग़ी के पंजों जैसे थे।

"झोंपड़ी, झोंपड़ी, अपनी पीठ जंगल की ओर कर ले और मुंह मेरी ओर!"

झोंपड़ी ने अपना मुंह राजकुमार की ओर कर लिया और पीठ जंगल की ओर। राजकुमार इवान झोंपड़ी के अन्दर चला गया। वहां अलावघर पर चुड़ैल बाबा-यगा लेटी थी। वह थी बुढ़िया ढड्ढो और उसकी नाक ऐसी थी जैसी पेड़ की गांठ। उसने राजकुमार को देखा तो बोली:

"वीर युवक, तू किसलिए मेरे पास आया है? तू किसी काम के लिए जा रहा है या किसी काम से जी चुराकर भागा है?"

"शैतान बुढ़िया!" राजकुमार इवान ने पलटकर जवाब दिया। "पहले मुझे

उसे मारने ही वाला था कि रीछ मनुष्य की आवाज़ में बोला :

"मुझे मारो नहीं, राजकुमार इवान। हो सकता है, किसी रोज़ तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़े।"

राजकुमार इवान ने रीछ की जान बख़्श दी और आगे बढ़ा। यकायक उसने अपने सिर के ऊपर आसमान में एक बत्तख़ उड़ती देखी। उसने निशाना बांधा, पर इतने में बत्तख़ मनुष्य की आवाज़ में बोली :

"मुझे मारो नहीं, राजकुमार इवान। हो सकता है, किसी रोज़ तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़े।"

उसने बत्तख़ की भी जान बख़्श दी और वह आगे बढ़ा। रास्ते में एक ख़रगोश दौड़ता हुआ आ रहा था। राजकुमार इवान ने जल्दी से अपना धनुष कंधे से उतारा और फिर निशाना साधना चाहा। मगर इतने में ख़रगोश मनुष्य की आवाज़ में बोला :

"मुझे मारो नहीं, राजकुमार इवान। हो सकता है, किसी रोज़ तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़े।"

सो उसने ख़रगोश की जान भी बख़्श दी और वह आगे बढ़ा। रास्ते में एक नीला समुद्र आया। राजकुमार ने देखा कि एक मछली समुद्र के किनारे पर पड़ी तड़प रही है।

"राजकुमार इवान," मछली ने कहा, "मुझ पर दया करो और मुझे उठाकर फिर नीले समुद्र में फेंक दो!"

सो राजकुमार ने मछली को उठकर नीले समुद्र में फेंक दिया और वह समुद्र के किनारे-किनारे आगे बढ़ने लगा। सूत का गोला लुढ़कते-लुढ़कते एक जंगल के पास पहुंचा। वहां एक झोंपड़ी लट्टू की तरह घूम रही थी और उसके पैर मुर्गी के पंजों जैसे थे।

"झोंपड़ी, झोंपड़ी, अपनी पीठ जंगल की ओर कर ले और मुंह मेरी ओर!"

झोंपड़ी ने अपना मुंह राजकुमार की ओर कर लिया और पीठ जंगल की ओर। राजकुमार इवान झोंपड़ी के अन्दर चला गया। वहां अलावघर पर चुड़ैल बाबा-यगा लेटी थी। वह थी बुढ़िया ढड्ढो और उसकी नाक ऐसी थी जैसी पेड़ की गांठ। उसने राजकुमार को देखा तो बोली :

"वीर युवक, तू किसलिए मेरे पास आया है? तू किसी काम के लिए जा रहा है या किसी काम से जी चुराकर भागा है?"

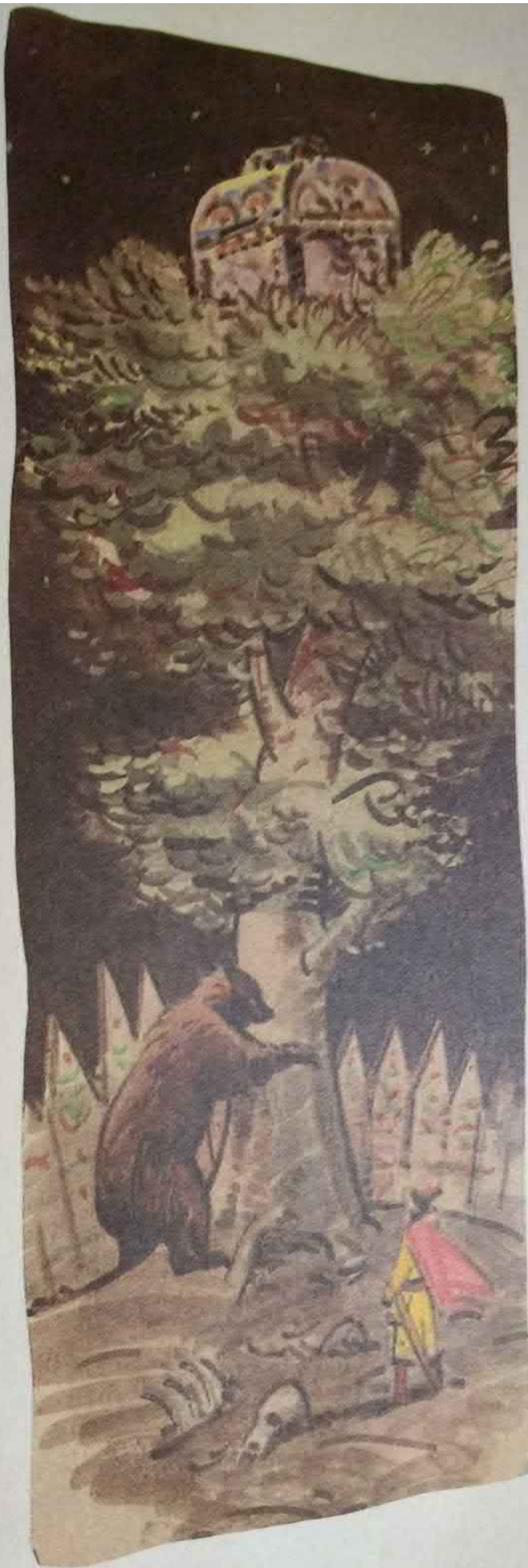
"शैतान बुढ़िया!" राजकुमार इवान ने पलटकर जवाब दिया। "पहले मुझे

कुछ खाने-पाने को दे, नहला-धुला और फिर पूछना अपने सवाल!"

सो चुड़ैल ने उसे नहलाया-धुलाया, खाने को गोश्त और पीने को शराब दी और सोने के लिए बिस्तर लगा दिया। तब राजकुमार इवान ने उसे बताया कि वह अपनी बीवी, बुद्धिमती वासिलीसा की तलाश में निकला है।

"मैं जानती हूं, मैं जानती हूं," चुड़ैल ने कहा। "तुम्हारी बीवी अब चिर कंकाल कोश्चेई के क़ब्ज़े में है। उसे फिर से पाना बहुत मुश्किल है। कोश्चेई का मुक़ाबला करना बहुत कठिन है। उसकी जान एक सुई की नोक में रहती है, वह सुई एक अण्डे में बन्द है, वह अण्डा एक बत्तख़ के पेट में है, बत्तख़ एक ख़रगोश के पेट में है, ख़रगोश पत्थर के एक सन्दूक़ में बन्द है और सन्दूक़ बलूत के एक ऊंचे पेड़ पर रखा है। कोश्चेई अपनी आंख की पुतली की तरह उस सन्दूक़ की हिफ़ाज़त करता है।"

राजकुमार इवान ने रात चुड़ैल के यहां बितायी और सुबह चुड़ैल ने उसे बलूत के उस ऊंचे पेड़ तक पहुंचने का रास्ता बता दिया। राजकुमार कितनी देर तक चलता रहा, यह बताना तो मुश्किल है, मगर चलते-चलते आख़िर वह बलूत के उस ऊंचे पेड़ के पास पहुंच गया। उस पर पत्थर का सन्दूक़ रखा

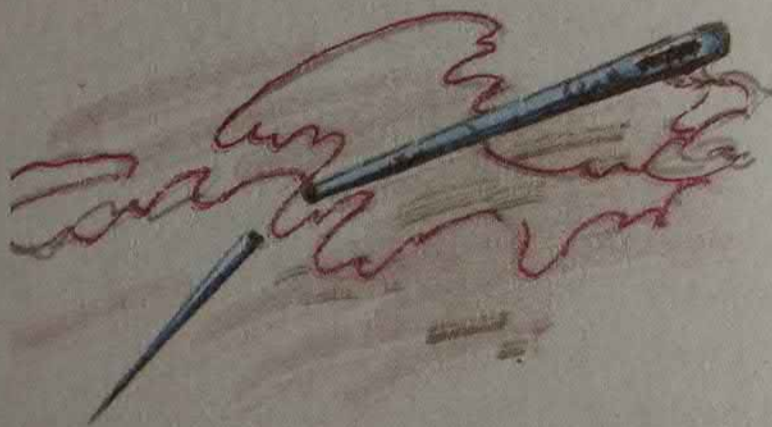


था। मगर वह इतनी ऊंचाई पर था कि उस तक पहुंचना नामुमकिन था।

इतने में रीछ दौड़ा-दौड़ा आया और उसने पेड़ को जड़ को जड़ समेत उखाड़कर नीचे गिरा दिया। सन्दूक़ धड़ाम से ज़मीन पर गिरा और गिरकर टूट गया। उसके अन्दर से एक ख़रगोश उछलकर बाहर आया और बड़ी तेज़ी से एक तरफ़ को भाग गया। मगर दूसरे ख़रगोश ने उसका पीछा किया और उसे पकड़कर चीर डाला। ख़रगोश के पेट में से एक बत्तख़ निकली और आसमान में उड़ गयी। पर तभी दूसरी बत्तख़ उसके सिर पर जा पहुंची और उसने एक ही झपट्टे में उसे नीचे गिरा दिया। बत्तख़ के पेट से अण्डा गिरा और गिरकर नीले समुद्र में डूब गया...

यह देखकर राजकुमार इवान फूट-फूटकर रोने लगा। अब समुद्र में अण्डे का कहां पता चलेगा? पर यकायक मछली अण्डे को मुंह में लिये हुए आती दिखाई दी। राजकुमार इवान ने अण्डे को तोड़ डाला, उसमें से सुई निकाल ली और फिर वह सुई की नोक को तोड़ने लगा। जितना ही वह उसे तोड़ता जाता था, चिर कंकाल कोश्चेई दर्द से उतना ही अधिक तड़पता और चिल्लाता था। लेकिन उसका तड़पना और चिल्लाना सब बेकार साबित हुआ। राजकुमार इवान ने सुई की नोक तोड़ डाली और उसके टूटते ही कोश्चेई भी ज़मीन पर गिरकर मर गया।

राजकुमार इवान कोश्चेई के सफ़ेद पत्थर के महल में गया। बुद्धिमती वासिलीसा दौड़ती हुई उससे मिलने को आयी और उसने राजकुमार के शहद जैसे ओंठों को चूम लिया। तब राजकुमार इवान और बुद्धिमती वासिलीसा अपने घर लौट गये और उनका बाक़ी जीवन बहुत सुख-चैन से बीता।

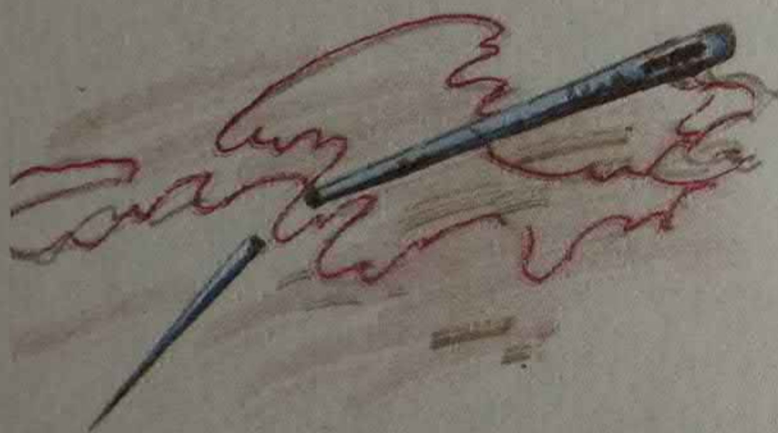


था। मगर वह इतनी ऊंचाई पर था कि उस तक पहुंचना नामुमकिन था।

इतने में रीछ दौड़ा-दौड़ा आया और उसने पेड़ को जड़ को जड़ समेत उखाड़-कर नीचे गिरा दिया। सन्दूक़ धड़ाम से ज़मीन पर गिरा और गिरकर टूट गया। उसके अन्दर से एक ख़रगोश उछलकर बाहर आया और बड़ी तेज़ी से एक तरफ़ को भाग गया। मगर दूसरे ख़रगोश ने उसका पीछा किया और उसे पकड़कर चीर डाला। ख़र-गोश के पेट में से एक बत्तख़ निकली और आसमान में उड़ गयी। पर तभी दूसरी बत्तख़ उसके सिर पर जा पहुंची और उसने एक ही झपट्टे में उसे नीचे गिरा दिया। बत्तख़ के पेट से अण्डा गिरा और गिरकर नीले समुद्र में डूब गया ...

यह देखकर राजकुमार इवान फूट-फूटकर रोने लगा। अब समुद्र में अण्डे का कहां पता चलेगा? पर यकायक मछली अण्डे को मुंह में लिये हुए आती दिखाई दी। राज-कुमार इवान ने अण्डे को तोड़ डाला, उसमें से सुई निकाल ली और फिर वह सुई की नोक को तोड़ने लगा। जितना ही वह उसे तोड़ता जाता था, चिर कंकाल कोश्चेई दर्द से उतना ही अधिक तड़पता और चिल्लाता था। लेकिन उसका तड़पना और चिल्लाना सब बेकार साबित हुआ। राजकुमार इवान ने सुई की नोक तोड़ डाली और उसके टूटते ही कोश्चेई भी ज़मीन पर गिरकर मर गया।

राजकुमार इवान कोश्चेई के सफ़ेद पत्थर के महल में गया। बुद्धिमती वासि-लीसा दौड़ती हुई उससे मिलने को आयी और उसने राजकुमार के शहद जैसे ओंठों को चूम लिया। तब राजकुमार इवान और बुद्धिमती वासिलीसा अपने घर लौट गये और उनका बाक़ी जीवन बहुत सुख-चैन से बीता।



हव्रोशेचका

दुनिया में भले लोग हैं और बुरे भी। कुछ ऐसे ढीठ भी हैं जिन्हें अपनी दुष्टता के लिए भी कभी शर्म नहीं आती।

दुर्भाग्यवश छोटी हव्रोशेचका ऐसे ही लोगों के बीच जा फंसी। वह यतीम थी और उन्होंने काम लेने ग़र्ज़ से उसे अपने घर में रख लिया। काम कर-करके उसकी बुरी हालत हो गयी। वह सूत कातती, बुनती और घर का सारा काम-काज करती। हर चीज़ के लिए वही जिम्मेदार थी।

अब, घर की मालकिन की तीन बेटियां थीं। सबसे बड़ी एक आंखवाली, दूसरी दो आंखोंवाली और तीसरी, सबसे छोटी, तीन आंखोंवाली।

तीनों बहनें दिन भर कुछ काम न करके फाटक पर बैठी रहतीं और गली की रौनक़ देखा करतीं। दूसरी ओर हव्रोशेचका उनके लिए सिलाई करती, सूत कातती तथा कपड़ा बुनती और बदले में उसे कभी दो मीठे शब्द भी सुनने को न मिलते।

कभी-कभी हव्रोशेचका बाहर खेत में जाती और अपनी चितकबरी गाय के गले में बांहें डालकर उसे अपना दुख-दर्द कह सुनाती।

"मेरी प्यारी चितकबरी!" वह कहती, "वे मुझे पीटते और डांटते हैं, मुझे

भूखों मारते हैं और फिर रोने भी नहीं देते। मुझे कल तक दो मन सन कातना, बुनना, धोना और लपेट कर देना है।"

और गाय जवाब में कहती :

"मेरी नन्ही गुड़िया, तुम मेरे एक कान में दाखिल होकर दूसरे से बाहर निकल जाओ और बस, तुम्हारा सब काम हो जायेगा।"

गाय जैसा कहती थी, वैसा ही हो जाता। ह्व्रोशेचका एक कान में दाखिल होकर दूसरे में से बाहर निकल आती। और लो! कपड़ा सामने होता – कता, बुना, धुला और लिपटा हुआ।

ह्व्रोशेचका तब कपड़े के थानों को अपनी मालकिन के पास ले जाती। मालकिन उन्हें देखकर बड़बड़ाती और सन्दूक़ में बन्द करके ह्व्रोशेचका को पहले से भी अधिक काम दे देती।

ह्व्रोशेचका फिर चितकबरी गाय के पास जाती, उसके गले में बांहें डालकर उसे थपथपाती, एक कान में दाखिल होकर दूसरे से बाहर निकल आती और फिर तैयार कपड़ा लेकर मालकिन के पास पहुंच जाती।



एक दिन मालकिन ने अपनी एक आंखवाली बेटी को अपने पास बुलाया और कहा :

"मेरी अच्छी बेटी, मेरी सुन्दर बेटी, जाओ और जाकर देखो कि कौन इस यतीम लड़की की इसके काम में मदद करता है। यह पता लगाओ कि कौन कातता और कपड़ा बुनकर लपेटता है?"

एक आंखवाली लड़की ह्व्रोशेचका के साथ जंगल में गयी और उसके साथ-साथ खेत में पहुंची। मगर वह अपनी मां का आदेश भूल गयी और धूप का मज़ा लेने के लिए घास पर लेट रही। ह्व्रोशेचका बड़बड़ायी :

"सोओ, आंख, सोओ!"

लड़की ने अपनी आंख बन्द की और

सो गयी। जब वह सो रही थी, तभी गाय ने कपड़ा बुना, धोया और लपेट दिया।

मालकिन को कुछ भी मालूम न हो सका, इसलिए उसने अपनी दूसरी, दो आंखोंवाली बेटी को बुलाकर कहा:

"मेरी अच्छी बेटी, मेरी प्यारी सुन्दर बिटिया, जाओ और जाकर देखो कि कौन इस यतीम लड़की की इसके काम में मदद करता है।"

दो आंखोंवाली हव्रोशेचका के साथ गयी, मगर वह अपनी मां की बात भूल गयी और धूप का मज़ा लेती हुई घास पर लेट गयी। हव्रोशेचका ने लोरी गायी:

"सोओ, आंख! सोओ दूसरी आंख, सोओ!"

दो आंखोंवाली ने अपनी आंखें बन्द कीं और सो गयी। जब वह सो गयी तो गाय ने कपड़ा बुना, धोया और लपेटकर तैयार कर दिया।

बूढ़ी मालकिन बेहद नाराज़ हुई और तीसरे दिन उसने तीन आंखोंवाली अपनी तीसरी बेटी को हव्रोशेचका के साथ जाने को कहा। उस दिन उसने हव्रोशेचका को पहले से अधिक काम करने के लिए दिया।

तीन आंखोंवाली देर तक धूप में खेलती और कूदती-फांदती रही। अन्त में वह आराम करने के लिए घास पर लेट गयी। तब हव्रोशेचका ने गाया:

"सोओ, आंख! सोओ, दूसरी आंख, सोओ।"

मगर वह तीसरी आंख के बारे में बिल्कुल भूल गयी। तीन में से दो आंखें सो गयीं, मगर तीसरी देखती रही और उसने सब कुछ देख लिया। उसने देखा कि हव्रोशेचका गाय के एक कान में प्रवेश करके दूसरे में से बाहर निकली और तैयार कपड़ा लेकर घर को चल दी।

तीन आंखोंवाली ने घर आकर मां को वह सब कुछ बताया जो उसने देखा था।

बुढ़िया बेहद ख़ुश हुई और अगले दिन ही उसने अपने पति से कहा:

"जाओ, जाकर चितकबरी गाय को मार डालो!"

बूढ़ा बहुत हैरान हुआ और उससे तर्क करने की कोशिश करने लगा।

"क्या तुम्हारा सिर फिर गया है, बुढ़िया?" उसने कहा। "गाय बहुत अच्छी और जवान है।"

"बहस की ज़रूरत नहीं, बस, उसे मार डालो!" बीवी ने ज़ोर देकर कहा।

बूढ़े के लिए इसके सिवा कोई चारा न था और उसने अपनी छुरी तेज़ करनी शुरू की।

हव्रोशेचका ने यह देखा तो दौड़ी खेत की तरफ़। वहां पहुंचकर उसने अपनी



बांहें चितकबरी के गले में डाल दीं।

"मेरी चितकबरी, प्यारी चितकबरी!" उसने कहा, "वे तुम्हें मारने की तैयारी कर रहे हैं।"

गाय ने जवाब दिया:

"दुखी मत होओ, मेरी प्यारी गुड़िया! जैसे मैं कहती हूं तुम वैसे ही करना। तुम मेरा मांस मत खाना, मेरी हड्डियां लेकर रूमाल में बांध लेना, उन्हें बगीचे में दबा देना, मुझे कभी मत भूलना – हर रोज़ पानी से सींचना।"

बूढ़े ने गाय को मार डाला और ह्व्रोशेचका ने वही कुछ किया जो गाय ने उसे करने के लिए कहा था। वह भूखी रही, मगर उसने मांस नहीं छुआ। उसने हड्डियां बगीचे में दबा दीं और उन्हें हर रोज़ सींचती रही।

कुछ समय बाद उन हड्डियों में से सेब का एक पेड़ उग आया। वह एक अद्भुत पेड़ था। इसके सेब गोल और रसीले थे। इसकी टहनियां चांदी की और सरसराते हुए पत्ते सोने के थे। जो कोई सवारी करता हुआ उधर से गुज़रता, इस पेड़ को देखने के लिए रुक जाता और जो कोई पैदल चलता हुआ आता, आंखें फाड़-फाड़कर देखता रह जाता।

इसी तरह बहुत या कम वक़्त गुज़रा। एक दिन वे तीनों बहनें बगीचे में घूम रही थीं। तभी अचानक एक जवान घुड़सवार उधर आ निकला। उसके सुन्दर घुंघराले बाल थे, वह बलवान और अमीर था। जब उसने रसदार सेब देखे तो रुक गया और लड़कियों से हंसी-मजाक़ करते हुए कहने लगा:

"रूपसियो! मैं उसी से शादी करूंगा जो मुझे सबसे पहले उस पेड़ का सेब लाकर देगी।"

वे तीनों बहनें तेज़ी से सेब के पेड़ की ओर दौड़ीं। हरेक दूसरी से बाज़ी मारने की कोशिश कर रही थी।

लेकिन वे सेब जो कि बहुत नीचे लटक रहे थे और लगता था कि आसानी से तोड़े जा सकते हैं, अब ऊंचे हो गये और उन बहनों के सिरों के ऊपर लटकते दिखाई देने लगे।

बहनों ने सेब झाड़ने की कोशिश की। सेबों की जगह सारे पत्ते नीचे आ गिरे जिससे उनकी आंखें अन्धी हो गयीं। उन्होंने पेड़ पर चढ़ना चाहा, मगर शाखाएं उनकी चोटियों में उलझ गयीं। उनके बाल बिखर गये। उन्होंने हर तरह सेबों तक पहुंचने की कोशिश की, मगर सफल न हो पायीं और हाथों को घायल करके ही रह गयीं।

तब हव्रोशेचका पेड़ के पास गयी। उसके जाते ही शाखाएं झुक गयीं और सेब उसके हाथ में आ गये। उसने उस धनी और सुन्दर युवक को एक सेब दिया। युवक ने उससे शादी कर ली। उस दिन के बाद हव्रोशेचका ने कभी कोई दुख नहीं जाना और वह सदा सुखी जीवन बिताती रही।



मार्या मोरेव्ना

किसी देश में, किसी राज्य में कभी एक शाहज़ादा इवान रहता था। उसकी तीन बहनें थीं – एक थी शाहज़ादी मार्या, दूसरी शाहज़ादी ओल्गा और तीसरी शाहज़ादी आन्ना।

इनके मां-बाप परलोक सिधार चुके थे। मरते समय उन्होंने बेटे को यह आदेश दिया था :

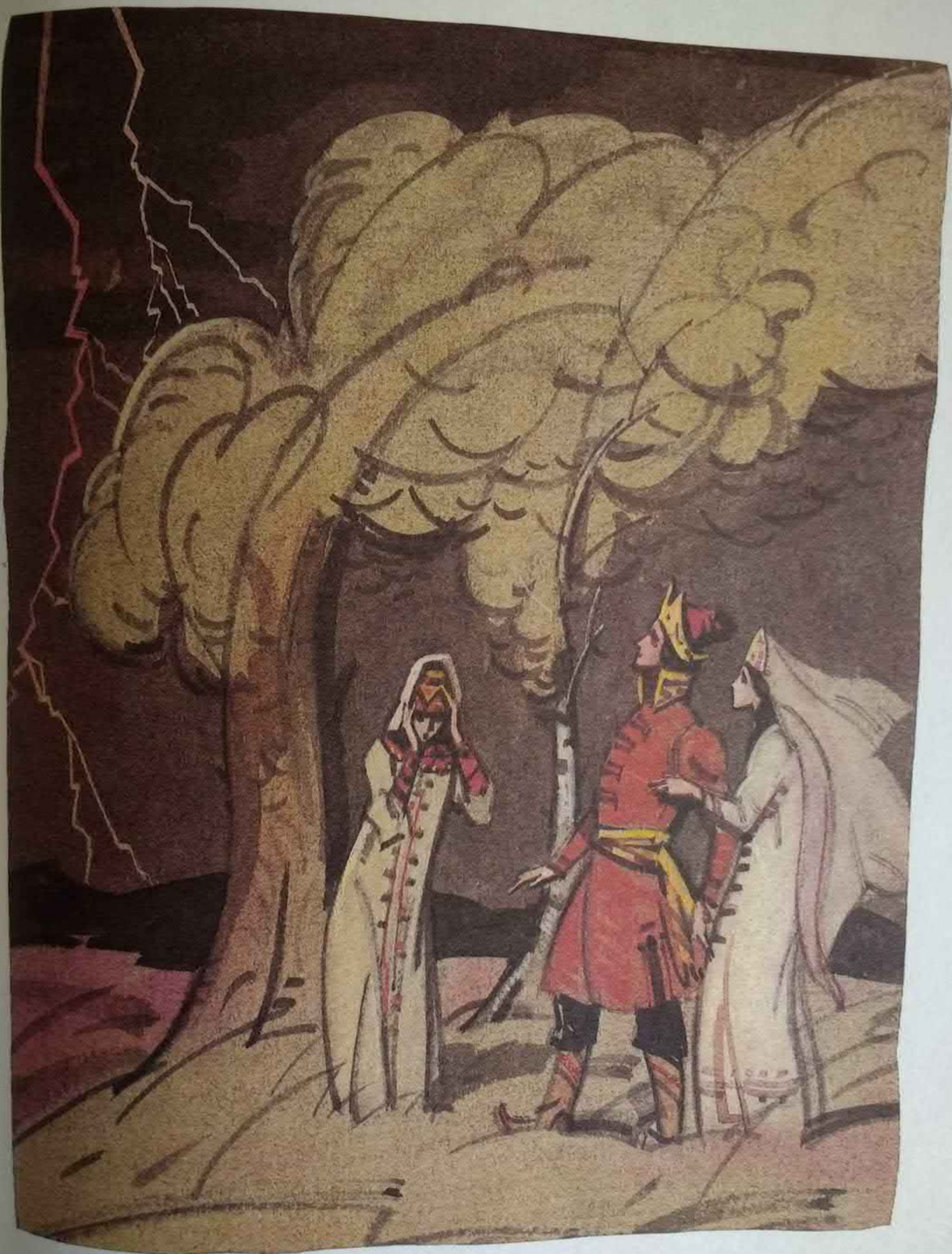
"तुम्हारी बहनों से जो कोई भी सबसे पहले शादी करना चाहे, तुम उन्हीं से उनकी शादी कर देना। देर तक उन्हें अपने यहां नहीं रखना।"

शाहज़ादे ने माता-पिता को दफ़ना दिया और दिल का दुख कम करने के लिए बहनों के साथ हरे-भरे बाग़ में घूमने चला गया।

अचानक आसमान में काला बादल छा गया, भयानक तूफ़ान घिर आया।

"आओ, घर चलें, प्यारी बहनो," शाहज़ादे इवान ने कहा।

वे महल में पहुंचे ही थे कि ज़ोर की बिजली कड़की, छत फट गयी और एक बाज उड़ता हुआ उनके कमरे में आ गया। वह फ़र्श से टकराया, सुन्दर नौजवान बन गया और बोला :



"नमस्ते, शाहज़ादे इवान। पहले तो मैं मेहमान के तौर पर आता था, मगर अब शादी करने आया हूं। तुम्हारी बहन, शाहज़ादी मार्या से शादी करना चाहता हूं।"

"अगर तुम उसे पसन्द हो तो मैं बाधा नहीं डालूंगा – ले जा सकते हो तुम उसे!"

शाहज़ादी मार्या राज़ी हो गयी। बाज़ ने उससे शादी की और अपने राज्य में ले गया।

घण्टों पर घण्टे और दिनों पर दिन बीतते गये – एक साल गुज़र गया और पता भी नहीं चला। शाहज़ादा इवान एक दिन फिर अपनी दोनों बहनों के साथ हरे-भरे बाग़ में घूमने गया। फिर से बादल घिर आया, बिजली कड़कने लगी।

"बहनो, आओ घर चलें," शाहज़ादे ने कहा।

ये महल में पहुंचे ही थे कि बिजली कड़की, छत दहक उठी, उसके दो टुकड़े हो गये और उक़ाब उड़ता हुआ भीतर आया। वह फ़र्श से टकराया और सुन्दर नौजवान बन गया।

"नमस्ते, शाहज़ादे इवान। पहले तो मैं मेहमान के तौर पर आता था, मगर अब शादी करने आया हूं।"

उसने शाहज़ादी ओल्गा से विवाह का प्रस्ताव किया।

शाहज़ादे इवान ने जवाब दिया:

"अगर तुम उसे पसन्द हो तो बेशक वह तुमसे शादी कर ले। मैं उसकी इच्छा का विरोध नहीं करूंगा।"

शाहज़ादी ओल्गा राज़ी हो गयी और उक़ाब की बीवी बन गयी। उक़ाब उसे अपने राज्य में ले गया।

इसी तरह एक साल और बीत गया। एक दिन शाहज़ादे इवान ने अपनी सबसे छोटी बहन से कहा:

"आओ, हरे-भरे बाग़ में घूमने चलें!"

वे थोड़ी देर घूमते रहे और फिर तूफ़ान और बिजली के साथ बादल घिर आया।

"बहन, घर चलते हैं!"

ये दोनों घर आये, अभी बैठे भी नहीं थे कि ज़ोर की बिजली कड़की, छत फटी और कौआ उड़ता हुआ भीतर आया। वह फ़र्श से टकराया और सुन्दर नौजवान बन

"नमस्ते, शाहज़ादे इवान। पहले तो मैं मेहमान के तौर पर आता था, मगर अब शादी करने आया हूं। तुम्हारी बहन, शाहज़ादी मार्या से शादी करना चाहता हूं।"

"अगर तुम उसे पसन्द हो तो मैं बाधा नहीं डालूंगा – ले जा सकते हो तुम उसे!"

शाहज़ादी मार्या राज़ी हो गयी। बाज़ ने उससे शादी की और अपने राज्य में ले गया।

घण्टों पर घण्टे और दिनों पर दिन बीतते गये – एक साल गुज़र गया और पता भी नहीं चला। शाहज़ादा इवान एक दिन फिर अपनी दोनों बहनों के साथ हरे-भरे बाग़ में घूमने गया। फिर से बादल घिर आया, बिजली कड़कने लगी।

"बहनो, आओ घर चलें," शाहज़ादे ने कहा।

ये महल में पहुंचे ही थे कि बिजली कड़की, छत दहक उठी, उसके दो टुकड़े हो गये और उक़ाब उड़ता हुआ भीतर आया। वह फ़र्श से टकराया और सुन्दर नौजवान बन गया।

"नमस्ते, शाहज़ादे इवान। पहले तो मैं मेहमान के तौर पर आता था, मगर अब शादी करने आया हूं।"

उसने शाहज़ादी ओल्गा से विवाह का प्रस्ताव किया।

शाहज़ादे इवान ने जवाब दिया:

"अगर तुम उसे पसन्द हो तो बेशक वह तुमसे शादी कर ले। मैं उसकी इच्छा का विरोध नहीं करूंगा।"

शाहज़ादी ओल्गा राज़ी हो गयी और उक़ाब की बीवी बन गयी। उक़ाब उसे अपने राज्य में ले गया।

इसी तरह एक साल और बीत गया। एक दिन शाहज़ादे इवान ने अपनी सबसे छोटी बहन से कहा:

"आओ, हरे-भरे बाग़ में घूमने चलें!"

वे थोड़ी देर घूमते रहे और फिर तूफ़ान और बिजली के साथ बादल घिर आया।

"बहन, घर चलते हैं!"

ये दोनों घर आये, अभी बैठे भी नहीं थे कि ज़ोर की बिजली कड़की, छत फटी और कौआ उड़ता हुआ भीतर आया। वह फ़र्श से टकराया और सुन्दर नौजवान बन



गया। पहले नौजवान भी सुन्दर थे, मगर यह उनसे भी बढ़-चढ़कर था।

"शाहज़ादे इवान, पहले तो मैं मेहमान के तौर पर आता था, मगर अब शादी करने आया हूं। शाहज़ादी आन्ना की मेरे साथ शादी कर दो।"

"मैं मेरी बहन की इच्छा का विरोध नहीं करूंगा। अगर तुम उसे पसन्द हो तो बन जाये वह तुम्हारी बीवी।"

शाहज़ादी आन्ना ने कौवे से शादी कर ली और वह उसे अपने राज्य में ले गया।

, शाहज़ादा इवान अकेला रह गया। साल भर बहनों के बिना रहा और उसे बेहद ऊब महसूस होने लगी।

"चलकर बहनों को ढूंढ़ता हूं," उसने अपने आपसे कहा।

सो वह सफ़र पर चल दिया, चलता गया, चलता गया और अचानक उसने क्या देखा – पूरी पलटन कटी पड़ी है। शाहज़ादा इवान बोला :

"अगर यहां कोई ज़िन्दा आदमी है तो मुझे यह बताये कि किसने इतनी बड़ी फ़ौज को मार डाला है?"

एक ज़िन्दा आदमी ने जवाब दिया:

"इतनी बड़ी फ़ौज को मार डाला है मार्या मोरेव्ना ने, बहुत ख़ूबसूरत मलिका ने।"

शाहज़ादा इवान आगे चल दिया, उसे सफ़ेद तम्बू तने हुए दिखाई दिये और उनमें से बाहर निकली बहुत ही ख़ूबसूरत मलिका मार्या मोरेव्ना।

"नमस्ते शाहज़ादे, किधर जा रहे हो – अपनी मर्ज़ी से या मजबूरी से?"

शाहज़ादे इवान ने जवाब दिया:

"भले नौजवान दूसरों की मर्ज़ी से कहीं नहीं जाते।"

"अगर कहीं जाने की जल्दी में नहीं हो तो मेरे यहां कुछ दिन मेहमान रहो।"

शाहज़ादा इवान ख़ुशी से राज़ी हो गया, दो दिन तक उसके यहां रहा। मार्या मोरेव्ना को शाहज़ादे से प्यार हो गया और उसने उससे शादी कर ली।

ख़ूबसूरत मलिका मार्या मोरेव्ना शाहज़ादे इवान को अपने राज्य में ले गयी। कुछ समय तक वे दोनों साथ रहे और फिर उसके मन में किसी से लड़ाई करने का ख़्याल आ गया। उसने अपना राज-पाट शाहज़ादे इवान को सौंपा और यह कहा:

"यहां सब जगह जाना, सब कुछ की देख-भाल करना, लेकिन इस गोदाम में नहीं झांकना।"

लेकिन शाहज़ादा अपने दिल पर क़ाबू न रख पाया। मार्या मोरेव्ना जैसे ही गयी, वह गोदाम की तरफ़ लपका, उसने दरवाज़ा खोला और क्या देखा कि वहां बारह ज़ंजीरों से जकड़ा हुआ चिर कंकाल कोश्चेई लटक रहा है।

चिर कंकाल कोश्चेई ने शाहज़ादे इवान की मिन्नत करते हुए कहा:

"मुझ पर रहम करो, मुझे पीने को पानी दो। दस साल से मैं यहां दुख भोग रहा हूं, न तो कुछ खाया है, न पिया है – गला बिल्कुल सूख गया है।"

शाहज़ादे ने उसे पानी से भरी हुई पूरी बालटी दी। उसने सारा पानी पी लिया तथा और मांगा:

"एक बालटी से मेरी प्यास बुझनेवाली नहीं, और पानी दो।"

शाहज़ादे ने पानी से भरी हुई दूसरी बालटी दे दी। चिर कंकाल कोश्चेई ने दूसरी

बालटी पीकर तीसरी मांगी। तीसरी बालटी का पानी पीते ही उसकी पहलेवाली सारी ताक़त वापस आ गयी, उसने ज़ंजीरों को झटका-झकझोरा और वे सभी की सभी एक बार ही टूट गयीं।

"शुक्रिया, शाहज़ादे इवान," चिर कंकाल कोश्चेई ने कहा, "अब तुम मार्या मोरेव्ना को वैसे ही कभी नहीं देख सकोगे जैसे अपने कानों को।"

वह बवंडर की तरह खिड़की में से बाहर उड़ गया, बहुत ही ख़ूबसूरत मार्या मोरेव्ना को उसने रास्ते में जा पकड़ा और अपने यहां ले गया।

शाहज़ादा इवान फूट-फूटकर रोया, उसने सफ़र की तैयारी की और चल पड़ा:

"चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, मैं मार्या मोरेव्ना को ज़रूर खोज लूंगा!"

एक दिन गुज़रा, दूसरा दिन बीता और तीसरे दिन पौ फटने के वक़्त उसने अपने सामने एक शानदार महल देखा। महल के पास शाहबलूत का पेड़ खड़ा था और उस पर बाज़ बैठा था। बाज़ शाहबलूत से उड़ा, ज़मीन से टकराया, सुन्दर नौजवान बन गया और ख़ुशी से चिल्ला उठा:

"ओह, मेरा प्यारा साला आया है!"

शाहज़ादे की बहन मार्या भागी-भागी आयी, बहुत ख़ुश होकर भाई से मिली, उसने उसकी सेहत के बारे में पूछा और अपना हाल-चाल बताया। शाहज़ादा तीन दिन तक उनके यहां मेहमान रहा और फिर बोला:

"आप लोगों के यहां और अधिक दिन तक मेहमान नहीं रह सकता। मैं अपनी बीवी, बहुत ही ख़ूबसूरत मलिका मार्या मोरेव्ना को खोजने जा रहा हूं।"

"उसे ढूंढ़ना आसान नहीं होगा," बाज़ ने उससे कहा।

"और कुछ नहीं तो अपना चांदी का चम्मच यहां छोड़ जाओ, हम उसे देखेंगे और तुम्हें याद करेंगे।"

शाहज़ादे इवान ने चांदी का चम्मच बाज़ के पास छोड़ दिया और आगे चल पड़ा।

वह एक दिन चला, दो दिन चलता रहा और तीसरे दिन पौ फटने के वक़्त उसे पहले महल से भी ज़्यादा सुन्दर महल दिखाई दिया, जिसके पास शाहबलूत का वृक्ष खड़ा था और उस पर उक़ाब बैठा था। उक़ाब पेड़ से उड़ा, ज़मीन से टकराया, सुन्दर नौजवान बन गया और ख़ुशी से चिल्लाया:

"शाहज़ादी ओल्गा, जल्दी से उठो, हमारा प्यारा भाई आ रहा है!"

शाहज़ादी ओल्गा उसी क्षण भागती हुई आई, अपने भाई को गले लगाने और चूमने लगी, उसकी सेहत के बारे में पूछने और अपना हाल-चाल सुनाने लगी। शाहज़ादा इवान इनके यहां तीन दिन तक मेहमान रहा और फिर बोला:

"मैं अब और यहां नहीं रुक सकता। मैं अपनी बीवी, बहुत ही ख़ूबसूरत मलिका मार्या मोरेव्ना को ढूंढ़ने जा रहा हूं।"

उक़ाब ने जवाब दिया:

"तुम्हारे लिए उसे ढूंढ़ना बहुत मुश्किल होगा। तुम अपना चांदी का कांटा यहां छोड़ जाओ, हम उसे देखेंगे और तुम्हें याद करेंगे।"

शाहज़ादे इवान ने ऐसा ही किया, कांटा छोड़ दिया और आगे चल पड़ा।

एक दिन चला, दूसरे दिन चला और तीसरे दिन पौ फटने के वक़्त उसे पहले दो महलों से भी ज़्यादा शानदार महल दिखाई दिया जिसके पास शाहबलूत का वृक्ष खड़ा था और उस पर कौवा बैठा था।

कौवा शाहबलूत से उड़ा, ज़मीन से टकराया, सुन्दर नौजवान बन गया और ख़ुशी से चिल्लाया:

"शाहज़ादी आन्ना, जल्दी से बाहर आओ, हमारा भाई आ रहा है!"

शाहज़ादी आन्ना भागकर बाहर आयी, बहुत ख़ुश होकर भाई से मिली, उसे गले लगाया और चूमा, उसकी सेहत के बारे में पूछा तथा अपना हाल-चाल सुनाया।

शाहज़ादा इवान तीन दिन इनके यहां रहा और फिर बोला:

"अब विदा दें, मैं अपनी बीवी, बहुत ही ख़ूबसूरत मलिका मार्या मोरेव्ना को ढूंढ़ने जा रहा हूं।"

कौवे ने जवाब दिया:

"बहुत मुश्किल होगा तुम्हारे लिए उसे ढूंढ़ना। तुम हमारे पास अपनी चांदी की नासदानी छोड़ जाओ, हम उसे देखेंगे और तुम्हें याद करेंगे।"

शाहज़ादे ने उसे अपनी चांदी की नासदानी दे दी, विदा ली और आगे चल दिया।

वह एक दिन चला, दो दिन चला और तीसरे दिन मार्या मोरेव्ना के पास पहुंच गया।

मार्या मोरेव्ना ने अपने प्रियतम को देखा, उसके गले में बांहें डाल दीं, आंसुओं की झड़ी लगा दी और बोली:

"ओह, शाहज़ादे इवान, क्यों तुमने मेरी बात नहीं मानी, क्यों गोदाम में झांका और क्यों इस चिर कंकाल कोश्चेई को मुक्त कर दिया।"

"मुझे माफ़ कर दो मार्या मोरेव्ना, बीती बात को याद नहीं करो। यही ज़्यादा अच्छा होगा कि जब तक चिर कंकाल कोश्चेई हमें देख नहीं लेता, तुम मेरे साथ चली चलो, वरना वह हमें आ पकड़ेगा।"

दोनों झटपट तैयार हुए और चल दिये। चिर कंकाल कोश्चेई शिकार के लिए गया हुआ था। शाम को वह घर लौट रहा था, उसका बढ़िया घोड़ा रह रहकर ठोकर खा रहा था।

"क्या तुम भूख के मारे ठोकर खा रहे हो या कोई मुसीबत महसूस कर रहे हो?"

घोड़े ने जवाब दिया:

"शाहजादा इवान आया था, मार्या मोरेव्ना को ले गया।"

"हम उन्हें पकड़ सकते हैं?"

"ज़रूर पकड़ सकते हैं। अगर गेहूं बोयें, उसके उगने, काटने तक इन्तज़ार करें, उसे पीसकर आटा बनाये, पांच भट्ठियों में रोटियां सेंकें और उन्हें खायें तो भी हम उन्हें जा पकड़ेंगे।"

चिर कंकाल कोश्चेई ने घोड़े को ख़ूब सरपट दौड़ाया और शाहज़ादे इवान को जा पकड़ा।

"सुनो," वह बोला, "पहली बार तुम्हें तुम्हारी इस उदारता के लिए माफ़ करता हूं कि तुमने मुझे पानी पिलाया था। दूसरी बार भी माफ़ कर दूंगा। लेकिन तीसरी बार दया की आशा नहीं करना, मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।"

चिर कंकाल उससे मार्या मोरेव्ना को छीन ले गया। शाहजादा इवान एक पत्थर पर बैठकर रोने लगा।

वह रोता रहा, रोता रहा और फिर से मार्या मोरेव्ना के पास लौट गया। चिर कंकाल कोश्चेई घर पर नहीं था।

"आओ चलें, मार्या मोरेव्ना।"

"ओह, शाहज़ादे इवान, वह फिर हमें आ पकड़ेगा।"

"कोई बात नहीं, बेशक आ पकड़े। हम एक-दो घण्टे तो साथ बिता लेंगे।"

दोनों झटपट तैयार होकर चल दिये।

चिर कंकाल कोश्चेई घर लौट रहा था और उसका बढ़िया घोड़ा रह-रहकर ठोकर खा रहा था।

"तुम क्या भूख के मारे ठोकर खा रहे हो या कोई मुसीबत महसूस कर रहे हो?"

"शाहज़ादा इवान आया था और मार्या मोरेव्ना को साथ ले गया।"

"हम उन्हें पकड़ सकते हैं या नहीं?"

"ज़रूर पकड़ सकते हैं। अगर जौ बोयें, उनके उगने-काटने, पीसने तक इन्तज़ार करें, उनकी बियर बनायें, पीकर नशे में धुत्त हो जायें और फिर ख़ूब सोयें, तब भी अगर उनका पीछा करें तो जा पकड़ेंगे।"

चिर कंकाल कोश्चेई घोड़े को सरपट दौड़ाता रहा और उसने शाहज़ादे इवान को जा पकड़ा।

"मैंने तो तुमसे कहा था न कि तुम मार्या मोरेव्ना को अपने कानों की तरह ही नहीं देख पाओगे।"

उसने मार्या मोरेव्ना को छीना और अपने साथ वापस ले गया।



शाहज़ादा इवान अकेला रह गया, रोता रहा, रोता रहा और फिर से मार्या मोरेव्ना की तरफ़ चल दिया। इस बार भी चिर कंकाल कोश्चेई घर पर नहीं था।

"आओ चलें, मार्या मोरेव्ना।"

"ओह, शाहज़ादे इवान,



वह हमें आ पकड़ेगा, तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देगा!"

"बेशक टुकड़े-टुकड़े कर दे, लेकिन तुम्हारे बिना मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता!"

दोनों झटपट तैयार होकर चल पड़े। चिर कंकाल कोश्चेई घर लौट रहा था, उसका बढ़िया घोड़ा रह-रहकर ठोकर खा रहा था।"

"तुम क्या भूख के मारे ठोकर खा रहे हो या कोई मुसीबत महसूस कर रहे हो?"

"शाहज़ादा इवान आया था, मार्या मोरेव्ना को अपने साथ ले गया।"

चिर कंकाल ने सरपट घोड़ा दौड़ाया, शाहज़ादे इवान को जा पकड़ा, उसके छोटे-छोटे टुकड़े किये, उन्हें राल पुते पीपे में डाला, उसके ऊपर लोहे का पतरा लपेटकर पीपे को मज़बूत किया, उसे नीले सागर में बहाया और मार्या मोरेव्ना को अपने साथ ले गया।

इसी वक़्त शाहज़ादे इवान के बहनोइयों के यहां चांदी के वे बर्तन काले हो गये जो शाहजादा उनके पास छोड़ गया था।

"हाय, हाय," वे बोले, "लगता है कि कोई मुसीबत आ गयी!"

उक़ाब उड़कर नीले सागर पर गया, वह पीपे को पकड़कर तट पर ले आया।

बाज़ अमृत जल लेने उड़ गया और कौवा मृत जल।

तीनों उड़ते हुए एक ही जगह पर इकट्ठे हुए, उन्होंने पीपे को तोड़ा, शाहज़ादे इवान के टुकड़े निकाले, उन्हें धोकर ढंग से एक-दूसरे के पास रख दिया।

कौवे ने मृत जल छिड़का – शाहज़ादे का शरीर जुड़कर एकसाथ हो गया। बाज़ ने अमृत जल छिड़का – शाहज़ादा इवान सिहरा, उठकर बैठ गया और बोला :

"अरे, कितनी अधिक देर तक सोया रहा हूं मैं!"

"अगर हम न होते तो और भी अधिक देर तक सोये रहते," उसके बहनोइयों ने जवाब दिया। "अब हमारे यहां चलकर मेहमान रहो।"

"नहीं, भाइयो, मैं तो मार्या मोरेव्ना को ढूंढ़ने जाऊंगा।"

उसके पास पहुंचकर उससे यह अनुरोध किया :

"चिर कंकाल कोश्चेई से यह मालूम करो कि उसने इतना बढ़िया घोड़ा कहां से हासिल किया है।"

मार्या मोरेव्ना अनुकूल अवसर ढूंढ़कर कोश्चेई से घोड़े के बारे में पूछने लगी। कोश्चेई ने बताया :

"आग के दरिया के पार नौ-तिया-सत्ताईस देश और दस-तिया-तीस राज्य में चुड़ैल बाबा-यगा रहती है। उसके पास एक ऐसी घोड़ी है जिस पर सवार होकर वह हर दिन सारी दुनिया का चक्कर लगाती है। उसके पास और भी ऐसी ही बढ़िया घोड़ियां हैं। मैंने तीन दिन तक उसके यहां चरवाहे के रूप में काम किया, एक भी घोड़ी गुम नहीं होने दी और बाबा-यगा ने मेरी अच्छी सेवा के लिए मुझे एक बछेरा दे दिया।"

"तुमने आग का दरिया कैसे पार किया?"

"मेरे पास एक रूमाल है जिसे मैं अगर तीन बार दायीं ओर हिलाता हूं तो बहुत ही ऊंचा पुल बन जाता है और आग वहां तक नहीं पहुंच पाती।"

मार्या मोरेव्ना ने यह सब कुछ सुनकर शाहज़ादे इवान को कह सुनाया।

और रूमाल लाकर उसे दे दिया।

शाहज़ादे इवान ने आग का दरिया पार किया और बाबा-यगा की तरफ़ चल दिया। वह बहुत समय तक भूखा-प्यासा ही चलता रहा। रास्ते में उसे अपने बच्चों के साथ एक परिन्दा मिला। शाहज़ादे इवान ने उससे कहा:

"मैं तेरे एक बच्चे को खा जाऊंगा।"

"नहीं खाओ, शाहज़ादे इवान," परिन्दे ने उसकी मिन्नत की, "कुछ समय बाद मैं तुम्हारे काम आऊंगा।"

शाहज़ादा इवान आगे चल दिया। उसे शहद की मक्खियों का छत्ता दिखाई दिया।

"मैं थोड़ा शहद ले लूं," शाहज़ादे ने कहा।

"मेरे शहद को नहीं छुओ, शाहज़ादे इवान," छत्ते की महारानी ने कहा, "कुछ समय बाद मैं तुम्हारे काम आऊंगी।"

शाहज़ादे ने शहद को नहीं छुआ और आगे चल दिया। कुछ दूर जाने पर उसे अपने बच्चे के साथ शेरनी मिली।

"तुम्हारे इस बच्चे को तो मैं खा ही जाऊंगा, क्योंकि भूख के मारे मेरा बुरा हाल हो रहा है।"

"इसे मत खाओ, शाहज़ादे इवान," शेरनी ने प्रार्थना की, "कुछ समय बाद मैं तुम्हारे काम आऊंगी।"

"अच्छी बात है, ऐसा ही सही!"

वह भूखा-प्यासा ही चलता गया। चलता गया, चलता गया – क्या देखता है कि बाबा-यगा का घर सामने है। उसके गिर्द बारह खूंटे थे। ग्यारह खूंटों पर इन्सानी खोपड़ियां थीं, सिर्फ़ एक खूंटा ही ख़ाली था।

"नमस्ते, दादी!"

"नमस्ते, शाहज़ादे इवान! कैसे आना हुआ – अपनी मर्ज़ी से या किसी मजबूरी से?"

"तुम्हारी सेवा करके तुमसे ताक़तवर घोड़ा लेना चाहता हूं, इसलिए आया हूं।"

"अच्छी बात है शाहज़ादे। मेरे यहां साल भर तो नहीं, सिर्फ़ तीन दिन ही सेवा करनी पड़ती है। अगर मेरी घोड़ियों को गुम नहीं होने दोगे तो तुम्हें ताक़तवर घोड़ा दे दूंगी। अगर ऐसा नहीं कर पाओगे तो बुरा न मानना, तुम्हारा सिर बारहवें

खूंटे पर नज़र आयेगा।"

शाहज़ादा इवान इसके लिए राज़ी हो गया। बाबा-यगा ने उसे खिलाया-पिलाया और कहा कि अपने काम में जुट जाये।

शाहज़ादे इवान ने घोड़ियों को जैसे ही बाहर मैदान में निकाला, उन्होंने अपनी पूंछें ऊपर उठायीं और सब की सब अलग-अलग दिशाओं में चरागाहों में भाग गयीं। शाहज़ादा तो उन्हें देख भी नहीं पाया कि वे आंखों से ओझल हो गयीं।

शाहज़ादा रो पड़ा, बहुत दुखी हुआ, एक पत्थर पर बैठकर सो गया।

सूरज डूबनेवाला था कि परिन्दा उड़ता हुआ आया और शाहज़ादे को जगाते हुए बोला:

"उठो, शाहज़ादे इवान, घोड़ियां तो घर आ चुकी हैं।"

शाहज़ादा उठकर घर गया, चुड़ैल बाबा-यगा अपनी घोड़ियों पर बिगड़ती हुई चीख़-चिल्ला रही थी:

"तुम घर क्यों लौटीं?"

"हम कैसे घर न लौटतीं। न जाने कहां से दुनिया भर के परिन्दे उड़ आये और उन्होंने हमारी आंखें ही नहीं फोड़ डालीं।"

"कल तुम चरागाहों में नहीं भागना, बल्कि घने जंगलों में इधर-उधर बिखर जाना।"

शाहज़ादा इवान रात भर सोया रहा और सुबह को बाबा-यगा उससे बोली:

"सुनो शाहज़ादे, अगर मेरी घोड़ियों की देख-भाल नहीं कर सकोगे, अगर इनमें से एक भी गुम हो गयी तो तुम्हारा यह उद्दंड सिर खूंटे पर दिखाई देगा।"

शाहज़ादे ने घोड़ियों को मैदान में बाहर निकाला। वे उसी समय अपनी पूंछें ऊपर उठाकर घने जंगलों में इधर-उधर भाग गयीं। शाहज़ादा फिर से पत्थर पर बैठ गया, रोता रहा, रोता रहा और सो गया। सूरज जंगल के पीछे डूब गया। तभी शेरनी भागी हुई आई:

"उठो, शाहज़ादे इवान, सभी घोड़ियां वापस आ गयी हैं।"

शाहज़ादा इवान उठा और घर चला गया। चुड़ैल बाबा-यगा पहले से भी ज़्यादा गुस्से से अपनी घोड़ियों पर चीख़-चिल्ला रही थी:

"किसलिए तुम घर वापस आ गयीं?"

खूंटे पर नज़र आयेगा।"

शाहज़ादा इवान इसके लिए राज़ी हो गया। बाबा-यगा ने उसे खिलाया-पिलाया और कहा कि अपने काम में जुट जाये।

शाहज़ादे इवान ने घोड़ियों को जैसे ही बाहर मैदान में निकाला, उन्होंने अपनी पूंछें ऊपर उठायीं और सब की सब अलग-अलग दिशाओं में चरागाहों में भाग गयीं। शाहज़ादा तो उन्हें देख भी नहीं पाया कि वे आंखों से ओझल हो गयीं।

शाहज़ादा रो पड़ा, बहुत दुखी हुआ, एक पत्थर पर बैठकर सो गया।

सूरज डूबनेवाला था कि परिन्दा उड़ता हुआ आया और शाहज़ादे को जगाते हुए बोला:

"उठो, शाहज़ादे इवान, घोड़ियां तो घर आ चुकी हैं।"

शाहज़ादा उठकर घर गया, चुड़ैल बाबा-यगा अपनी घोड़ियों पर बिगड़ती हुई चीख़-चिल्ला रही थी:

"तुम घर क्यों लौटीं?"

"हम कैसे घर न लौटतीं। न जाने कहां से दुनिया भर के परिन्दे उड़ आये और उन्होंने हमारी आंखें ही नहीं फोड़ डालीं।"

"कल तुम चरागाहों में नहीं भागना, बल्कि घने जंगलों में इधर-उधर बिखर जाना।"

शाहज़ादा इवान रात भर सोया रहा और सुबह को बाबा-यगा उससे बोली:

"सुनो शाहज़ादे, अगर मेरी घोड़ियों की देख-भाल नहीं कर सकोगे, अगर इनमें से एक भी गुम हो गयी तो तुम्हारा यह उद्दंड सिर खूंटे पर दिखाई देगा।"

शाहज़ादे ने घोड़ियों को मैदान में बाहर निकाला। वे उसी समय अपनी पूंछें ऊपर उठाकर घने जंगलों में इधर-उधर भाग गयीं। शाहज़ादा फिर से पत्थर पर बैठ गया, रोता रहा, रोता रहा और सो गया। सूरज जंगल के पीछे डूब गया। तभी शेरनी भागी हुई आई:

"उठो, शाहज़ादे इवान, सभी घोड़ियां वापस आ गयी हैं।"

शाहज़ादा इवान उठा और घर चला गया। चुड़ैल बाबा-यगा पहले से भी ज़्यादा ग़ुस्से से अपनी घोड़ियों पर चीख़-चिल्ला रही थी:

"किसलिए तुम घर वापस आ गयीं?"

"कैसे हम वापस न आतीं? दुनिया भर के शेर-बघेरे सभी ओर से आ गये और उन्होंने हमारे टुकड़े-टुकड़े ही नहीं कर डाले!"

"कल तुम नीले सागर में जाना।"

शाहज़ादा इवान फिर रात भर सोया रहा और सुबह को बाबा-यगा ने उसे घोड़ियां चराने के लिए जगाकर कहा:

"अगर ऐसा नहीं कर पाओगे तो तुम्हारा यह उद्दंड सिर खूंटे पर दिखाई देगा।"

शाहज़ादे ने घोड़ियों को मैदान में भगा दिया। उन्होंने फ़ौरन अपनी पूंछें ऊपर उठायीं, आंखों से ओझल हो गयीं और नीले सागर में चली गयीं। वे गर्दन तक पानी में खड़ी थीं। शाहज़ादा इवान पत्थर पर बैठकर रोने लगा और सो गया। सूरज जंगल के पीछे छिप गया, तभी शहद की मक्खी उड़ती हुई आयी और बोली:

"उठो शाहज़ादे, सभी घोड़ियां वापस आ गयी हैं। घर लौटने पर तुम बाबा-यगा के सामने नहीं जाना, अस्तबल में जाकर नांदों के पीछे छिप जाना। वहां एक गन्दा-सा बछेरा है, लीद में लथपथ पड़ा है। तुम उसे लेकर आधी रात के सन्नाटे में यहां से खिसक जाना।"

शाहज़ादा इवान उठा, अस्तबल में गया और नांदों के पीछे जा लेटा। चुड़ैल बाबा-यगा शोर मचाती हुई अपनी घोड़ियों पर चिल्ला रही थी:

"किसलिए वापस आ गयीं?"

"कैसे वापस न आतीं? दुनिया भर की अनगिनत शहद की मक्खियां उड़कर आ गयीं और वे सभी ओर से डंक मार-मारकर हमारा बुरा हाल करने लगीं।"

चुड़ैल बाबा-यगा सो गयी और शाहज़ादे इवान ने आधी रात को वह गन्दा-मन्दा-सा बछेरा लिया, उस पर ज़ीन कसा, सवार हुआ और आग के दरिया की तरफ़ उसे सरपट दौड़ा ले चला। उस नदी पर पहुंचकर उसने तीन बार दायीं ओर को रूमल हिलाया और, न जाने कहां से नदी के ऊपर एक ऊंचा और बढ़िया पुल बन गया।

शाहज़ादे ने पुल पार किया और बायीं ओर सिर्फ़ दो बार रूमाल हिलाया – नदी के ऊपर बहुत ही पतला और कमज़ोर-सा पुल रह गया।

चुड़ैल बाबा-यगा सुबह जागी तो उसने गन्दे-मन्दे बछेरे को ग़ायब पाया। वह लगी उसका पीछा करने। पूरे ज़ोर से लोहे की ओखली पर उड़ती हुई थी, वह मूसल



से उसे हांक रही थी और झाड़ू से अपने पीछे बुहारती जा रही थी।

वह आग के दरिया तक पहुंच गयी, नजर दौड़ाई और सोचने लगी:

"पुल अच्छा है!"

वह पुल पर चल दी, बीच तक पहुंची, पुल टूट गया और बाबा-यगा नदी में गिर गयी। बस, नदी में डूबकर ही उसका काम तमाम हो गया।

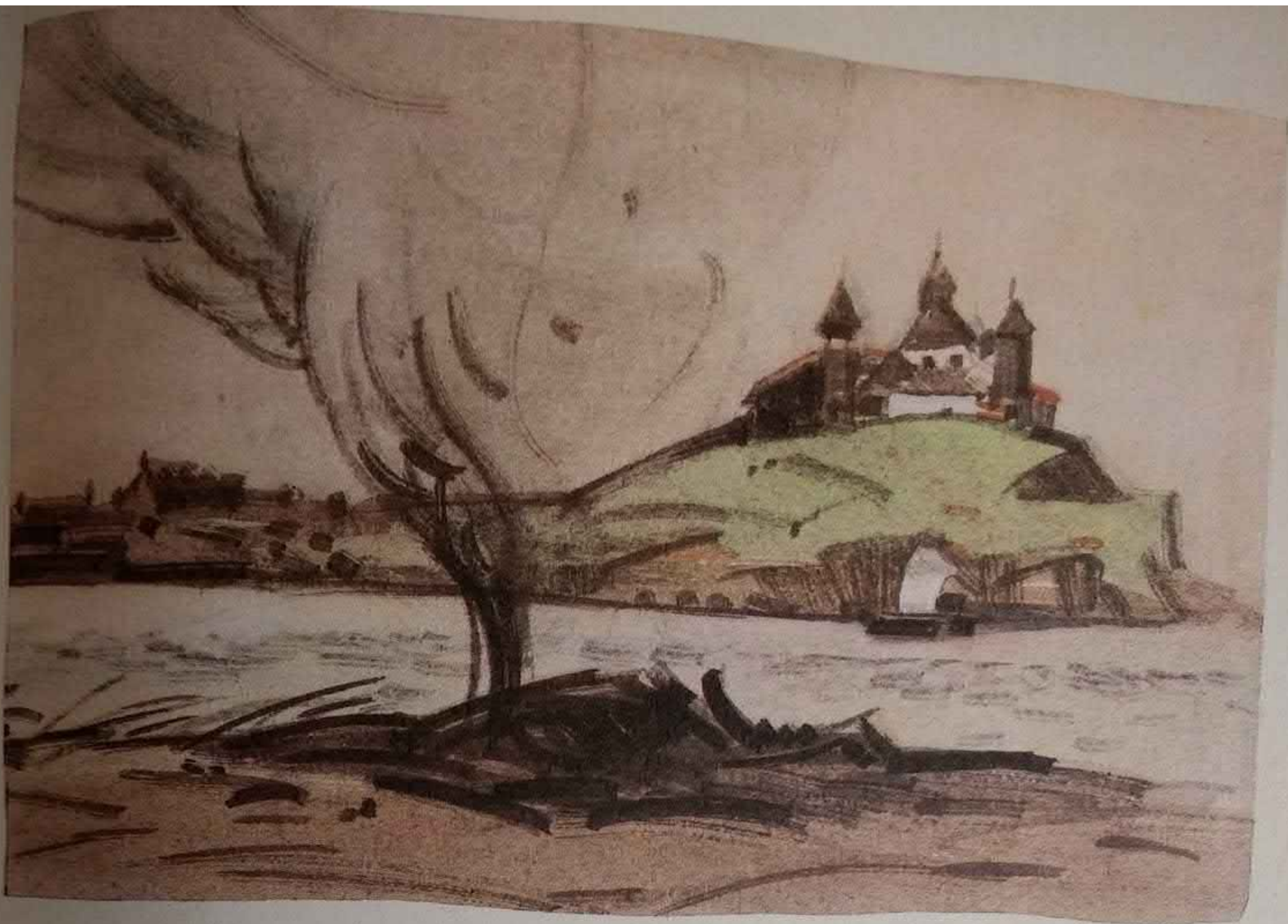
शाहजादे इवान ने हरे-भरे चरागाहों में बछेरे को खूब चराया और वह बहुत बढ़िया घोड़ा बन गया।

शाहजादा मार्या मोरेव्ना के पास गया। वह भागकर उससे मिली, उसने उसके गले में बांहें डाल दीं।

"तुम जिन्दा कैसे बच गये?"

"इस तरह और ऐसे है," उसने बताया, "चलो मेरे साथ।"

"मैं डरती हूं, शाहजादे इवान, अगर चिर कंकाल कोश्चेई तुम्हें आ पकड़ेगा तो फिर से टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा।"



"नहीं, वह ऐसा नहीं कर पायेगा। अब मेरे पास ऐसा बढ़िया घोड़ा है, जो पक्षी की तरह उड़ता है।"

ये दोनों घोड़े पर सवार होकर चल दिये।

चिर कंकाल कोश्चेई घर लौट रहा था और उसका घोड़ा रह-रहकर ठोकर खा रहा था।

"तुम क्या भूख के मारे ठोकर खा रहे हो या फिर कोई मुसीबत महसूस कर रहे हो?"

"शाहज़ादा इवान आया था, मार्या मोरेव्ना को ले गया।"

"हम उन्हें पकड़ सकते हैं या नहीं?"

"कह नहीं सकता। अब शाहज़ादे इवान के पास मुझसे भी बढ़िया तेज़ घोड़ा है।"

"नहीं, मैं यह बर्दाश्त नहीं करूंगा," चिर कंकाल कोश्चेई ने कहा, "मैं उसका पीछा करूंगा।"

बहुत वक़्त तक या कम वक़्त तक उसने पीछा किया यह कहना मुश्किल है, लेकिन आख़िर वह शाहज़ादे इवान तक जा पहुंचा, घोड़े से नीचे कूदा और तेज़ तलवार से उसने उसके टुकड़े कर देने चाहे। इसी वक़्त शाहज़ादे इवान के घोड़े ने अपनी पूरी ताक़त से चिर कंकाल कोश्चेई के सिर पर अपने सुमों से प्रहार किया, उसकी खोपड़ी को तोड़ डाला और शाहज़ादे ने डंडे मार-मारकर उसका काम तमाम कर डाला।

इसके बाद शाहज़ादे ने तुम सारी लकड़ी जमा की, आग जलायी, चिर कंकाल कोश्चेई को उसमें जलाकर उसकी राख हवा में उड़ा दी।

मार्या मोरेव्ना चिर कंकाल कोश्चेई के घोड़े पर सवार हो गयी और शाहज़ादा अपने घोड़े पर। पहले वे कौवे के, फिर उक़ाब और इसके बाद बाज़ के यहां गये। ये जहां कहीं भी गये, सभी जगह उनका ख़ूब स्वागत-सत्कार हुआ।

"ओह, शाहज़ादे इवान, तुमसे मिल पाने की तो हमने आशा ही नहीं की थी। बेशक तुमने व्यर्थ ही इतनी दौड़-धूप नहीं की। मार्या मोरेव्ना जैसी सुन्दरी तो चिराग़ लेकर ढूंढ़ने पर भी दुनिया में कहीं नहीं मिलेगी!"

कुछ दिन ये दोनों मेहमान रहे, इन्होंने ख़ूब दावतों के मज़े लूटे और फिर अपने राज्य को वापस चले गये। घर लौटकर ख़ुशी से रहने-सहने और सुख-चैन की बंसी बजाने लगे।



बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान

बहुत पुरानी बात है कि कहीं एक बूढ़ा और उसकी बीवी रहते थे। बूढ़ा जंगली मुर्ग़ों और जानवरों का शिकार करता और इस तरह उनकी गुज़र-बसर होती। वे बहुत बरसों तक ऐसा करते रहे, मगर कुछ भी दौलत जमा नहीं कर पाये। बुढ़िया मन ही मन कुढ़ती और दुखी होकर कहती :

"हमारी भी क्या बुरी ज़िन्दगी है! न कभी कुछ बढ़िया खाने-पीने को मिला, न पहनने को। फिर बच्चे भी तो नहीं हुए। बुढ़ापे में हमारी कौन सुध लेगा?"

"दुखी मत होओ, बुढ़िया," बूढ़ा उसे दिलासा देता। "जब तक मेरे हाथ-पांव चलते रहेंगे, हम खाने-पीने के लिए काफ़ी जुटा लेंगे। फिर कल की फ़िक्र करना तो बिल्कुल बेकार है।"

वह ऐसा कहकर शिकार के लिए चला जाता।

एक रोज़ वह सुबह से शाम तक जंगलों में घूमता रहा, मगर एक भी शिकार हाथ न लगा। वह खाली हाथ घर नहीं जाना चाहता था, पर करता भी तो क्या? सूरज डूबता जा रहा था यानी घर लौटने का वक़्त हो चुका था।



वह वहां से रवाना हुआ ही था कि उसे पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी और पास की झाड़ी में से एक अद्भुत और बड़ा ही सुन्दर पक्षी उड़ चला।

मगर बूढ़े ने जब तक निशाना साधा, पक्षी कहां का कहां जा पहुंचा।

"क्या बदक़िस्मती है," बूढ़े ने आह भरकर कहा।

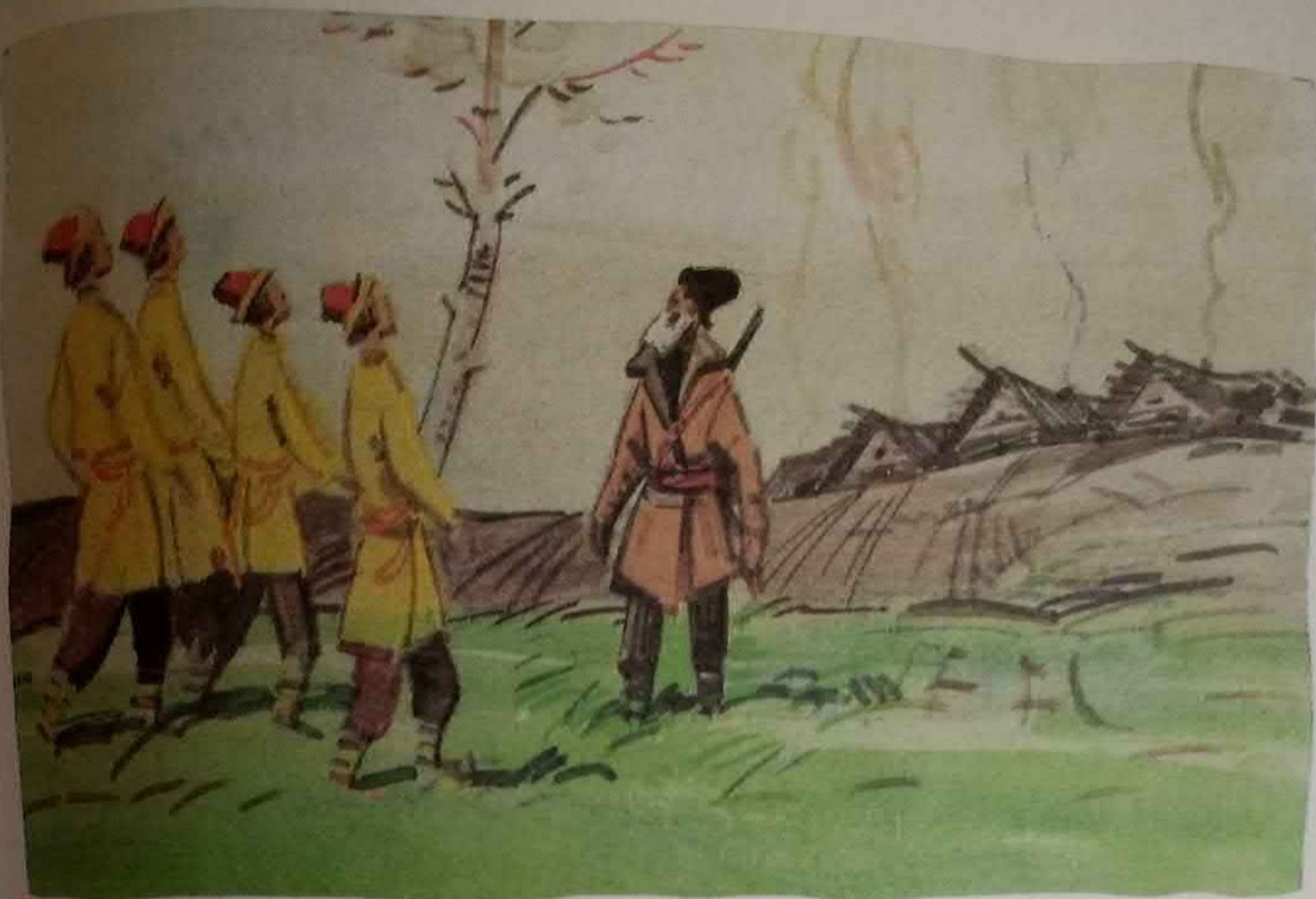
जहां से वह पक्षी उड़ा था, उसने उस झाड़ी में झांककर देखा। वहां एक घोंसले में तैंतीस अण्डे पड़े थे।

"पक्षी नहीं तो उसके अण्डे ही सही," उसने सोचा।

उसने अपना कमरबन्द कसा और वे तैंतीस के तैंतीस अण्डे उसमें छिपा लिये। तब वह घर की ओर चला।

वह चलता गया, चलता गया। चलते-चलते उसका कमरबन्द ढीला हो गया और एक-एक करके सभी अण्डे नीचे गिरने लगे।

एक अण्डा गिरा – उसमें से एक लड़का निकल आया, दूसरा अण्डा गिरा तो



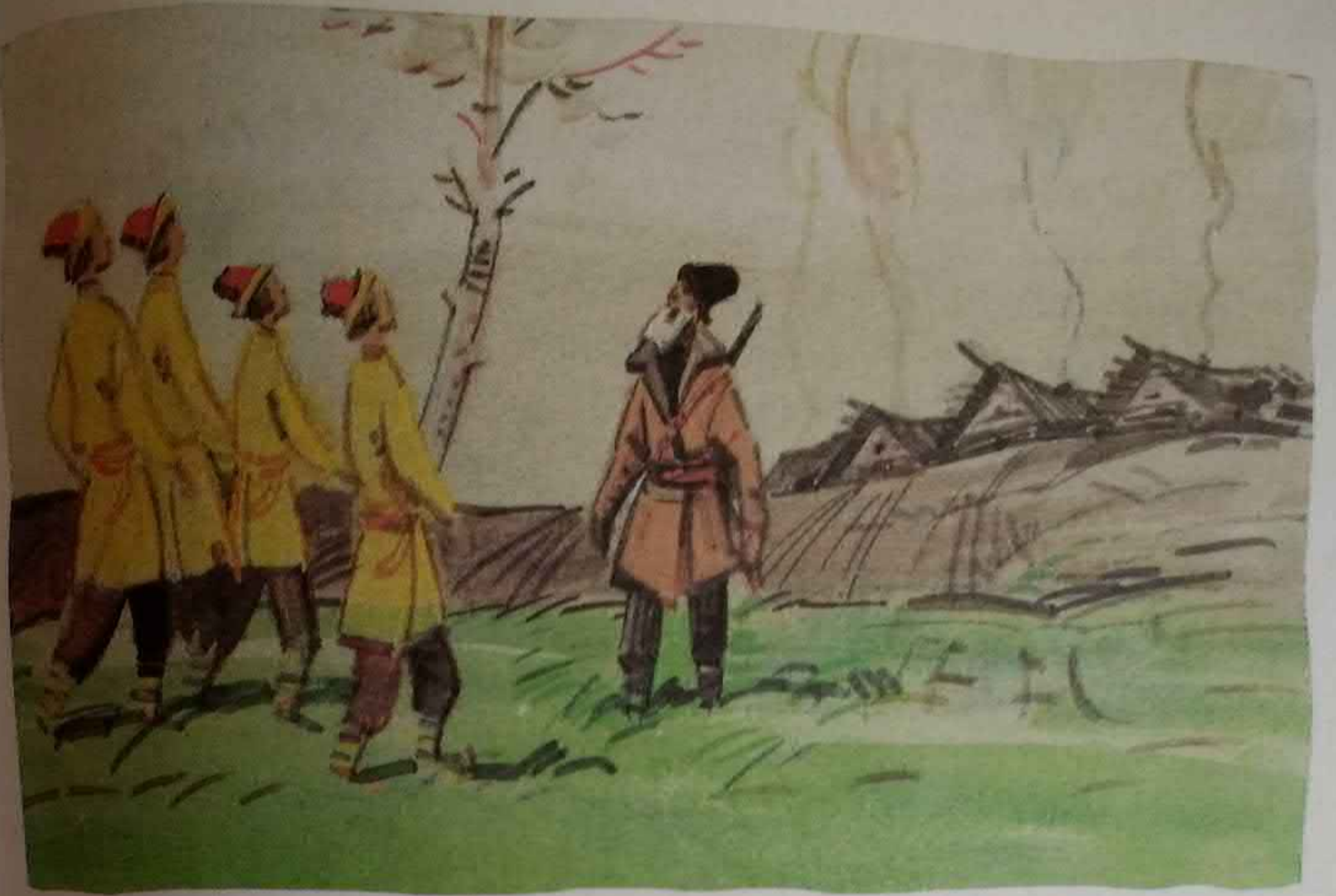
दूसरा लड़का निकल आया। इस तरह बत्तीस अण्डे गिरे और बत्तीस लड़के निकलकर बाहर आ गये।

मगर तभी बूढ़े ने अपना कमरबन्द और अच्छी तरह कस लिया और एक अण्डा – तैंतीसवां अण्डा भीतर ही रह गया। बूढ़े ने घूमकर देखा तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। बत्तीस वीर युवक उसके पीछे-पीछे आ रहे थे। सभी सिर से पैर तक बिल्कुल एक जैसे थे और सभी एक जैसी आवाज़ में बोले :

"क्योंकि आपने हमें पाया है, इसलिए आप हमारे पिता और हम आपके बेटे हैं। अब हमें घर ले चलिये।"

"मेरे और मेरी बीवी के लिए आज का दिन बड़े सौभाग्य का दिन है," बूढ़े ने सोचा। "इतने बरसों में एक भी बच्चा नहीं हुआ और अब इकट्ठे बत्तीस।"

वे घर आये और बूढ़े ने कहा :



दूसरा लड़का निकल आया। इस तरह बत्तीस अण्डे गिरे और बत्तीस लड़के निकलकर बाहर आ गये।

मगर तभी बूढ़े ने अपना कमरबन्द और अच्छी तरह कस लिया और एक अण्डा – तैंतीसवां अण्डा भीतर ही रह गया। बूढ़े ने घूमकर देखा तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। बत्तीस वीर युवक उसके पीछे-पीछे आ रहे थे। सभी सिर से पैर तक बिल्कुल एक जैसे थे और सभी एक जैसी आवाज़ में बोले :

"क्योंकि आपने हमें पाया है, इसलिए आप हमारे पिता और हम आपके बेटे हैं। अब हमें घर ले चलिये।"

"मेरे और मेरी बीवी के लिए आज का दिन बड़े सौभाग्य का दिन है," बूढ़े ने सोचा। "इतने बरसों में एक भी बच्चा नहीं हुआ और अब इकट्ठे बत्तीस।"

वे घर आये और बूढ़े ने कहा :

"भलीमानस, इतने बरसों तक बच्चों के लिए आहें भरती रही हो न? लो, मैं आज तुम्हारे लिए बत्तीस बेटे लाया हूं, बत्तीस वीर युवक। अब मेज़ लगाकर इन्हें खाना खिलाओ।"

बूढ़े ने बुढ़िया को बताया कि उसे वे बेटे कैसे मिले हैं।

बुढ़िया तो जहां थी, वहीं की वहीं खड़ी रह गयी। उसके मुंह से एक भी शब्द न निकल सका। कुछ देर इसी तरह खड़ी रहकर उसने निःश्वास छोड़ा और मेज़ लगाने के लिए इधर-उधर दौड़-धूप करने लगी। तभी बूढ़े ने चोग़ा उतारने के लिए अपना कमरबन्द ढीला किया और तैंतीसवां अण्डा नीचे गिर गया। तैंतीसवां लड़का भी उछलकर सामने आ खड़ा हुआ।

"तुम! तुम कहां से आ गये?"

"मैं छोटा इवान हूं, आपका सबसे छोटा बेटा।"

तब बूढ़े को याद आया कि उसे बत्तीस नहीं, वास्तव में तैंतीस अण्डे मिले थे।

"बहुत अच्छा, छोटे इवान, तो खाने के लिए बैठ जाओ।"

उन तैंतीस छोकरों ने बैठते ही मेज़ से सारा खाना साफ़ कर डाला। फिर भी वे मेज़ से न तो भूखे ही उठे थे और न ही पेट भरकर।

रात गुज़र गयी। अगली सुबह छोटे इवान ने कहा:

"पिता जी, आपको बेटे तो मिल गये, अब आप उन्हें करने के लिए कुछ काम भी दें।"

"मैं तुम्हें किस तरह का काम दूं, मेरे बेटो? हम न तो हल चलाते हैं और न बुवाई करते हैं। हमारे पास तो हल या घोड़े भी नहीं हैं।"

"ख़ैर, नहीं हैं तो न सही, हो ही क्या सकता है," छोटे इवान ने कहा। "हमें काम की खोज में दूसरे लोगों के पास जाना होगा। अब आप लुहार के पास जाकर हमें तैंतीस दरांतियां बनवा दीजिये।"

जब बूढ़ा लुहार के पास तैंतीस दरांतियां बनवाने के लिए गया हुआ था तो छोटे इवान और उसके भाइयों ने तैंतीस दस्ते तथा तैंतीस जेलियां बना डालीं।

पिता के लुहारख़ाने से लौट आने पर छोटे इवान ने वे औज़ार सभी को बांट दिये और कहा:

"आओ भाइयो चलें, चलकर काम ढूंढ़ें। पैसा कमाकर अपनी-अपनी गृहस्थी जमायेंगे तथा बूढ़े मां-बाप का पेट पालेंगे।"

तब भाइयों ने मां-बाप को नमस्कार किया और चल दिये। मंज़िल-दर-मंज़िल कूच करते हुए वे कब तक चले – बहुत देर तक या थोड़ी देर तक – यह कहना मुश्किल है। अन्त में वे एक बड़े शहर में पहुंचे। उस शहर के बाहर उन्हें ज़ार का कारिन्दा मिला। कारिन्दा उनके पास आया और कहने लगा :

"अरे, लड़को, तुम काम से लौट रहे हो या काम की तलाश में जा रहे हो? अगर तुम काम की खोज में हो तो मेरे साथ चलो। मेरे पास तुम्हारे लिए काम है।

"ज़रा सुनें तो तुम्हारा वह काम है क्या?" छोटे इवान ने पूछा।

"काम बहुत मुश्किल नहीं है," कारिन्दे ने जवाब दिया। "तुम्हें ज़ार के संरक्षित चरागाहों से घास काटकर सुखानी होगी। तब उसे पहले गंजियों और फिर गंजों में जमा करना होगा। तुम्हारा अगुआ कौन है?"

किसी ने जवाब न दिया तो छोटे इवान ने आगे बढ़कर कहा :

"हमें अपने साथ ले जाकर काम दिखाओ।"

वह कारिन्दा उन्हें ज़ार के संरक्षित चरागाहों में ले गया।

"इस काम के लिए तीन हफ़्ते काफ़ी होंगे न?" उसने पूछा।

"अगर मौसम अच्छा रहा तो तीन दिन काफ़ी होंगे," छोटे इवान ने जवाब दिया।

ज़ार का कारिन्दा यह सुनकर बहुत खुश हुआ।

"तो काम शुरू करो, लड़को!" उसने कहा, "और खुराक तथा तनख़्वाह की फ़िक्र मत करो, तुम्हें जो कुछ चाहिए सभी कुछ मिलेगा।"

छोटे इवान ने कहा :

"हमें केवल तैंतीस भुने हुए बैलों और शराब की तैंतीस बालटियों की आवश्यकता होगी। हमें एक-एक बड़ी रोटी भी चाहियेगी। इसके अलावा हमें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं होगी।"

ज़ार का कारिन्दा चला गया। भाइयों ने अपनी दरांतियां तेज़ कीं और तेज़ी से काम करने लगे। उनकी रफ़्तार इतनी तेज़ थी कि हवा में एक सीटी-सी बज-बज उठती। काम होता रहा और शाम होते तक सारी घास कट गयी। इतनी देर में ज़ार के रसोईघर से उनके लिए भुने हुए तैंतीस बैल, शराब की तैंतीस बालटियां और तैंतीस बड़ी रोटियां आ गयीं। उनमें से प्रत्येक ने आधा बैल खाया, शराब की आधी-आधी बालटी पी, आधी-आधी रोटी खायी और फिर वे सभी पड़कर सो रहे।

दूसरे दिन, जब सूरज चमका, भाइयों ने घास सुखायी और गंजियों में इकट्ठी की। संध्या होते तक सूखी घास के बड़े-बड़े गंज बन चुके थे। फिर एक बार उनमें से हरेक ने आधी रोटी के साथ आधा बैल खाया और शराब की आधी-आधी बालटी पी। तब छोटे इवान ने अपने भाइयो में से एक को ज़ार के दरबार में भेजा।

"उनसे कहो कि आकर काम देख लें।"

भाई कारिन्दे को साथ लेकर लौट आया और थोड़ी देर बाद ज़ार भी अपने संरक्षित चरागाहों में पहुंचा। ज़ार ने सूखी घास के सभी ढेर गिने और चरागाहों का चक्कर लगाया। उसे घास का एक तिनका भी कहीं दिखाई न दिया।

"हां, तो प्यारे लड़को," ज़ार ने कहा, "तुमने घास अच्छी तरह काटी, सुखायी और ढेरों में इकट्ठी की है। काम समाप्त भी बहुत जल्दी किया है। इसके लिए मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूं, सौ रूबल और शराब का चालीस बालटियोंवाला एक ढोल इनाम देता हूं। मगर अब तुम्हें एक और काम करना होगा। इस सूखी घास की निगरानी करनी होगी। हर साल कोई हमारी घास खा जाता है और हमें आज तक चोर का कुछ भी सुराग़-पता नहीं लगा।"

छोटे इवान ने जवाब दिया:

"हुज़ूर, मेरे भाइयों को घर जाने दें और मैं अकेला ही घास की रक्षा करूंगा।"

ज़ार ने कोई आपत्ति नहीं की। इसलिए बाक़ी भाई ज़ार के महल की ओर चल दिये जहां उन्हें बढ़िया खाने के अलावा पीने को काफ़ी शराब और रुपया भी दिया गया। इसके बाद वे घर को रवाना हो गये।

छोटा इवान ज़ार के संरक्षित चरागाहों में वापस चला गया। ज़ार की सूखी घास की रखवाली करने के लिए वह रातों को जागता रहता, जबकि दिन के समय ज़ार के रसोईघर में खाता-पीता और आराम करता।

अब धीरे-धीरे पतझड़ का मौसम आ गया और रातें लंबी तथा काली हो गयीं। एक शाम इवान ने सूखी घास के एक ढेर में लेटने की जगह बनायी और लेट गया। वह बिल्कुल चौकन्ना था। आधी रात के समय वहां बिल्कुल दिन की सी रोशनी हो गयी। छोटे इवान ने उधर देखा तो सुनहरे अयालवाली एक घोड़ी को वहां पाया। वह सागर में से कूदकर बाहर आयी और सीधी घास के ढेर की तरफ़ लपकी। उसके पांव तले की धरती कांप रही थी, उसके सुनहरे बाल हवा में लहरा रहे थे, उसकी नाक से

शोले और कानों से धुएं के बादल निकल रहे थे।

वह घास के ढेर की तरफ़ आयी और घास में मुंह मारने लगी। चौकीदार इवान, मौक़ा देखकर उसकी पीठ पर चढ़ बैठा। सुनहरे अयालवाली घोड़ी जल्दी से मुड़ी और तेज़ी से ज़ार के चरागाहों से भाग चली। मगर छोटा इवान बायें हाथ से अयाल थामे था और दायें हाथ में चमड़े का एक चाबुक लिये था। उस सुनहरे अयालवाली घोड़ी को दलदल और कीचड़ में से भगाते हुए उसने चाबुक से उसकी ख़ूब ख़बर ली।

घोड़ी ख़ूब ज़ोर लगाकर दलदलों और पंकिल स्थलों में से सरपट दौड़ती रही। आख़िर वह दलदल में धंसकर रुक गयी और बोली:

"छोटे इवान, तुमने मुझे पकड़ने और मुझ पर सवारी करने का बहुत दिलेरी का



काम किया है। अब मुझे मत मारो, मत सताओ। मैं तुम्हारी वफ़ादार दासी बनकर रहूंगी।"

इवान उसे ज़ार के महल में ले गया और एक अस्तबल में उसे बन्द करके ज़ार के रसोईघर में जाकर सो रहा। अगले दिन वह ज़ार के पास गया और बोला:

"हुज़ूर, मैंने मालूम कर लिया है कि आपके चरागाहों की घास कौन खाता है। मैंने चोर को पकड़ भी लिया है। चलिये, चलकर उसे देखिये।"

ज़ार ने सुनहरे अयालवाली घोड़ी देखी तो उसकी ख़ुशी का पारावार न रहा।

"बहुत ख़ूब इवान," उसने कहा, "तुम यों तो सबसे छोटे हो, मगर बुद्धि तुम्हारी बड़ी है। बड़ी वफ़ादारी से की गयी तुम्हारी ख़िदमत के लिए मैं तुम्हें अपना मुख्य सईस बनाता हूं।"

उसी दिन से वह बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान कहलाने लगा।

तो इवान ने ज़ार के अस्तबलों का काम सम्भाल लिया। घोड़ों की देखभाल करते हुए वह रातों को भी न सोता। ज़ार के घोड़े दिन पर दिन अधिकाधिक मोटे-ताज़े होने लगे। उनकी चमड़ी रेशम-सी नरम हो गयी और उनकी गर्दनों तथा पूंछों के बाल सदा अच्छी तरह साफ़ और फूले-फूले रहने लगे। सचमुच ही उन्हें देखकर जी बाग़-बाग़ हो जाता था।

ज़ार उसके काम से इतना ख़ुश हुआ कि वह उसकी प्रशंसा करने के लिए उपयुक्त शब्द भी नहीं ढूंढ़ सका।

"शाबाश, बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान! आज तक मेरे पास कभी कोई ऐसा बढ़िया सईस नहीं आया।"

मगर पुराने सईस उससे ईर्ष्या करते हुए कहने लगे:

"यह देहाती, यह गंवार आदमी हम पर हुक्म चलाये! ज़ार के अस्तबलों के लिए ख़ूब बढ़िया मुख्य सईस चुना गया है!"

उन्होंने उसके ख़िलाफ़ साज़िश करनी शुरू की। मगर बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान अपने काम में लगा रहा और उसने यह अनुभव नहीं किया कि उस पर मुसीबत आनेवाली है।

तभी एक बूढ़ा पियक्कड़ घूमता हुआ ज़ार के अस्तबलों में पहुंचा।

"पिछली रात से नशे के कारण मेरे सिर में दर्द हो रहा है। उसे दूर करने के

लिए थोड़ी शराब दे दो। ऐसा करने पर मैं तुम्हें मुख्य सईस से छुटकारा पाने का सही तरीक़ा बता दूंगा।"

सईसों ने उसे ख़ुशी से शराब का गिलास दे दिया। उसने शराब का गिलास चढ़ाया और कहा:

"हमारा ज़ार अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और सुर भरने-वाला बिल्ला पाने के लिए बहुत बेचैन रहता है। बहुत-से युवक अपनी इच्छा से उनकी खोज में गये और बहुत-से उन अजूबों की तलाश में भेजे गये। मगर कभी कोई लौटकर नहीं आया। अब तुम लोग ज़ार से जाकर कहो कि बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने यह डींग मारी है कि वह ये चीज़ें बड़ी आसानी से ला सकता है। ज़ार उसे भेज देगा और वह बस, एक बार गया तो फिर कभी लौटकर नहीं आयेगा।"

सईसों ने पियक्कड़ को शराब का एक और गिलास भेंट करके धन्यवाद दिया और वे सीधे ज़ार के मुख्य द्वार पर पहुंचे। वहां वे ज़ार के कमरे की खिड़की के नीचे खड़े होकर गप-शप करते रहे। ज़ार ने उन्हें वहां खड़े देखा तो महल से बाहर आकर पूछा:

"तुम क्या बातें कर रहे हो, क्या चाहते हो?"

"हुज़ूर, कुछ ख़ास नहीं, वह बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान है न – उसने यह डींग मारी है कि वह अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और सुर भरनेवाला बिल्ला ला सकता है। हम लोग उसी के बारे में यहां खड़े बहस कर रहे हैं। कुछ का कहना है कि वह इन्हें ला सकता है और दूसरों का कहना है कि वह सिर्फ़ डींग मार रहा है।"

यह सुनकर ज़ार के चेहरे का रंग बदल गया और वह अपने हाथों-पैरों में सिहरन-सी अनुभव करने लगा। "ओह," उसने सोचा, "काश, किसी तरह मुझे ये अजूबे मिल जायें! तब तो सभी ज़ार मुझसे ईर्ष्या किया करेंगे। मैंने भी इन्हें पाने के लिए कितने आदमी भेजे हैं, मगर उनमें से कभी कोई लौटकर नहीं आया।"

उसने उसी वक़्त हुक्म दिया कि मुख्य सईस को बुलाया जाये।

मुख्य सईस के सामने आते ही ज़ार चिल्लाया:

"इवान, अभी इसी वक़्त यहां से रवाना हो जाओ और मुझे अपने आप बजने-वाली गूसली, नाचनेवाला हंस तथा सुर भरनेवाला बिल्ला लाकर दो!"

बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने जवाब दिया:

"मगर, हुज़ूर, मैंने तो कभी इन चीज़ों का नाम तक नहीं सुना! आप मुझे किस जगह जाने के लिए कह रहे हैं?"

ज़ार ने गुस्से से आग-बबूला होकर ज़मीन पर अपना पांव पटका:

"यह बहस किसलिए हो रही है? क्या तुम शाही हुक्म मानने को तैयार नहीं? तुम अभी यहां से चले जाओ! अगर तुम मुझे ये चीज़ें ला दोगे तो मैं तुम्हें बड़ा इनाम दूंगा, वरना तुम्हारा सिर क़लम करवा दिया जायेगा।"

इवान मुंह लटकाये और दुखी होता हुआ ज़ार के दरबार से चला आया। उसने सुनहरे अयालवाली घोड़ी को लगाम पहनानी शुरू की। घोड़ी ने पूछा:

"किसलिए इतने दुखी हो मालिक, क्या कोई बुरी बात हो गयी?"

"मैं दुखी कैसे नहीं हूंगा जबकि ज़ार ने मुझे अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और सुर भरनेवाला बिल्ला लाने का हुक्म दिया है? मैंने तो इनके बारे में किसी से कभी कुछ सुना भी नहीं।"

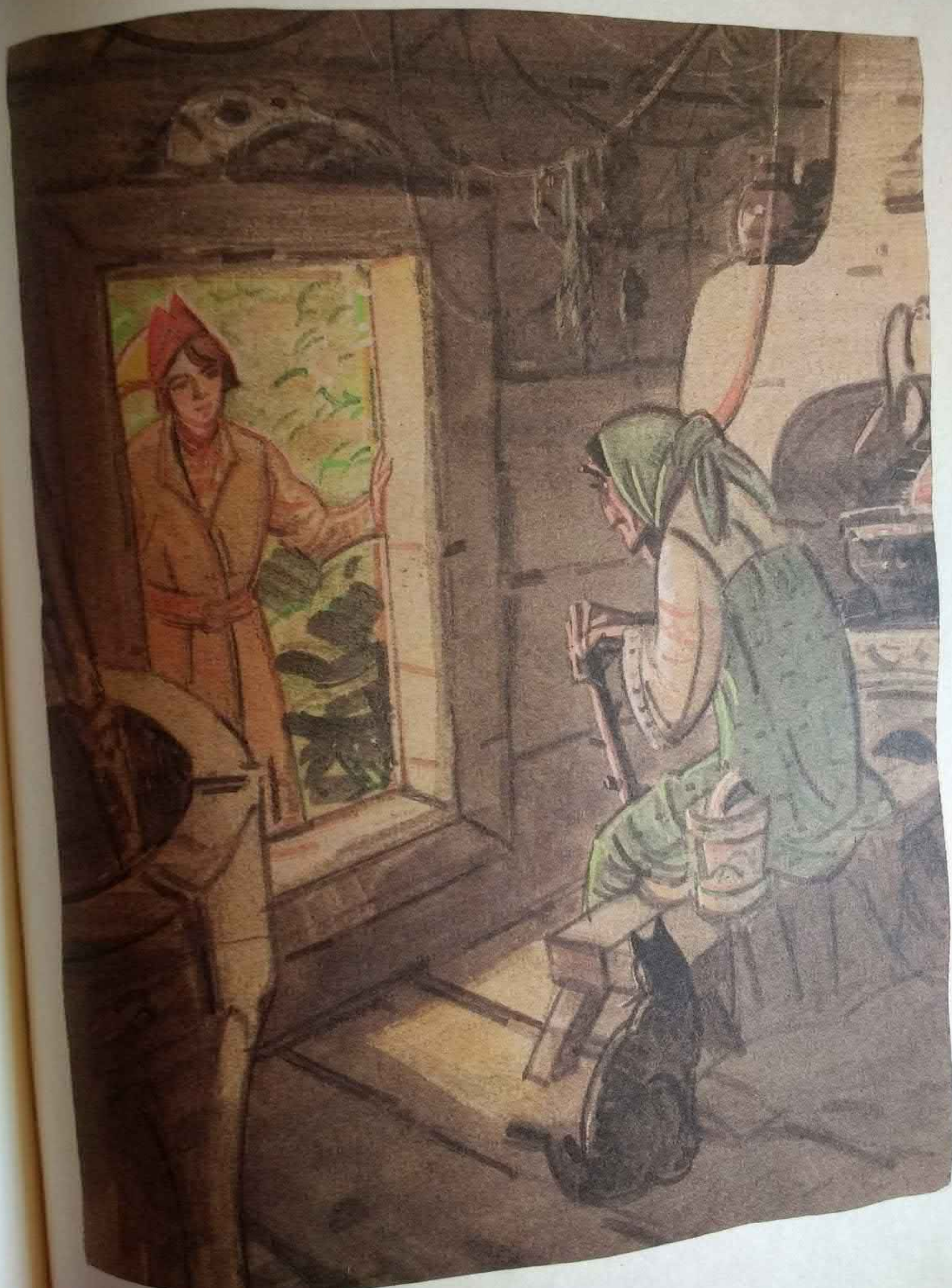
"अरे, यह तो कुछ भी मुश्किल बात नहीं है," सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा। "मेरी पीठ पर सवार हो जाओ, हम बूढ़ी चुड़ैल, बाबा-यगा के पास जाकर यह पूछेंगे कि ये अद्भुत वस्तुएं कैसे पायी जा सकती हैं।"

इस तरह इवान लंबे सफ़र के लिए चल दिया। लोगों ने उसे घोड़ी पर चढ़ते तो अवश्य देखा, मगर कब वह दरवाज़ा पार कर गया, यह किसी ने नहीं देखा। घोड़ी दम भर में कहां की कहां जा पहुंची।

यह कहना मुश्किल है कि वह कब तक सवारी करता रहा, थोड़ी दूर गया या अधिक, पर आख़िरकार वह एक ऐसे घने जंगल में पहुंचा जहां घुप अंधेरा था, रोशनी की झलक तक भी नहीं थी। सुनहरे अयालवाली घोड़ी चलती-चलती कमज़ोर हो गयी थी और ख़ुद इवान भी थक गया था। मगर अन्त में वे जंगल के बीच एक खुले मैदान में पहुंचे। वहां उन्होंने मुर्ग़ी के पंजे और तकली पर खड़ी हुई एक झोंपड़ी देखी। वह पूरब से पश्चिम की तरफ़ घूम रही थी। वहां पहुंचकर छोटे इवान ने कहा:

"झोंपड़ी, झोंपड़ी, अपनी पीठ जंगल की ओर कर ले और मुंह मेरी ओर! मैं नहीं रुकूंगा बरसों तक, ठहरूंगा केवल सुबह तक।"

झोंपड़ी ने अपना मुंह उसकी ओर कर लिया। छोटे इवान ने घोड़ी को एक खम्भे से बांध दिया और सीढ़ियां चढ़कर दरवाज़ा खोला। वहां उसने बाबा-यगा देखी। वह थी बुढ़िया ढड्ढो और उसकी नाक ऐसी थी जैसी पेड़ की गांठ। ओखली और मूसल उसके पास पड़े थे।



बाबा-यगा ने अपने मेहमान को देखा तो चिल्लायी :

"आदम बू! आदम बू! कौन है? कहां से आया है? किधर जायेगा?"

"क्या इसी तरह तुम मेहमानों का स्वागत करती हो, दादी? जब वह भूखा और ठिठुरा हुआ हो तो बातें करके उसका दिमाग़ चाटती हो। अपने वतन, रूस में, मेहमान को पहले खाने-पीने, गर्म होने और सोने दिया जाता है और तब उससे कौन और क्या पूछा जाता है।"

"ओ प्यारे," बाबा-यगा कह उठी, "मुझ बुढ़िया से नाराज़ मत होओ, वीर युवक! फिर हम तो रूस में भी नहीं हैं। मगर तो भी मैं अभी सब कुछ ठीक किये देती हूं।"

वह जल्दी से उठकर काम में लग गयी। उसने मेज़ पर खाने-पीने की चीज़ें लगायीं, मेहमान को ढंग से बिठाया और नहाने की कोठरी में अंगीठी सुलगायी। इवान ने गर्म पानी से स्नान किया। बाबा-यगा ने उसके लिए बिस्तर लगा दिया और वह आराम करने लगा। चुड़ैल खुद उसके सिरहाने बैठकर पूछने लगी :

"मुझे बताओ, वीर युवक, तुम किधर जा रहे हो? क्या तुम यहां अपनी खुशी से आये हो या किसी ने तुम्हें यहां आने के लिए मजबूर किया है?"

"मुझे ज़ार ने भेजा है," मेहमान ने जवाब दिया। "उसने मुझे अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और सुर भरनेवाला बिल्ला लाने का आदेश दिया है। दादी, मैं तुम्हारा बेहद शुक्रगुज़ार हूंगा अगर तुम मुझे यह बता दो कि उन्हें कहां पाया जा सकता है?"

"हां, बेटा, यह तो मैं जानती हूं कि ये चीज़ें कहां मिल सकती हैं, मगर इनका पाना बहुत मुश्किल है। बहुत-से वीर युवक इनकी खोज में जा चुके हैं, मगर कभी कोई लौटकर नहीं आया।"

"अच्छी दादी, होनी तो होकर ही रहती है। पर ख़ैर तो भी तुम इस मुसीबत में मेरी मदद करो और मुझे यह बताओ कि मैं कहां जाऊं?"

"ओह, प्यारे बेटे, मुझे तुम पर बहुत रहम आ रहा है। मदद करने के सिवा कोई चारा नहीं। तुम सुनहरे अयालवाली अपनी घोड़ी मेरे पास छोड़ जाओ, यहां वह सुरक्षित रहेगी और सूत का यह गोला ले लो। कल जब तुम बाहर जाओ तो इसे जमीन पर फेंक देना और जिस तरफ़ यह लुढ़कता जाये, तुम भी उधर ही चलते जाना। यह तुम्हें मेरी मंझली बहन के पास ले जायेगा। उसे यह गोला दिखाना, वह हर तरह से तुम्हारी मदद करेगी और जो कुछ जानती है, तुम्हें बतायेगी। इसके बाद वह तुम्हें

पास भेज देगी।"

अगले दिन उसने मुंह अंधेरे ही अपने मेहमान को जगाया, उसे खिलाया-पिलाया और विदा किया। इवान ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और उससे विदा होकर अपने लंबे सफ़र पर चल दिया।

कहना आसान, मगर करना मुश्किल होता है। गोला लुढ़कता रहा और इवान उसके पीछे-पीछे चलता रहा।

वह एक दिन चला, दूसरे दिन और फिर एक दिन और। इसी तरह चलते-चलते वह एक झोंपड़ी के पास पहुंचा जो चिड़िया के पंजे और तकली पर खड़ी थी। वहां जाकर गोला रुक गया। बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने झोंपड़ी से कहा:

"झोंपड़ी, झोंपड़ी, अपनी पीठ जंगल की ओर और मुंह मेरी तरफ़ कर ले।"

झोंपड़ी घूमी और इवान सीढ़ियों पर चढ़कर ऊपर गया। उसने दरवाज़ा खोला तो उसे चुड़ैल की कर्कश आवाज़ सुनाई दी:

"ओह, आदम बू, आदम बू! कौन है? किधर से आया है? कहां जायेगा?"

तब इवान ने उसे सूत का गोला दिखाया और वह हैरानी से चिल्ला उठी:

"ओ मेरे प्यारे, तब तो तुम अजनबी न होकर, मेरी बहन के भेजे हुए प्रिय मेहमान हो! तुमने तत्काल ही मुझे यह क्यों नहीं बता दिया?"

इसके बाद उसने दौड़-धूप करके जल्दी से मेज़ लगायी। तरह-तरह के लज़ीज़ खाने और शराबें मेज़ पर सजायीं और उसे खाने के लिए आमंत्रित किया।

"जी भरकर खाओ-पिओ," बाबा-यगा ने कहा, "और आराम करने के लिए लेट जाओ। बाद में हम काम की बातचीत करेंगे।"

इस तरह छोटे इवान ने जी भरकर खाया-पिया और आराम करने के लिए लेट गया। मंझली बहन उसके सिरहाने बैठकर हाल-चाल पूछने लगी। इवान ने उसे बताया कि वह कौन है, कहां से आया है और किस उद्देश्य से अपने लंबे सफ़र पर जा रहा है। तब बाबा-यगा ने कहा:

"वह जगह तो बहुत दूर नहीं है, मगर मैं यह नहीं कह सकती कि तुम वहां से ज़िन्दा भी लौट सकोगे। अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और सुर

भरनेवाला बिल्ला – ये सभी चीज़ें मेरे भानजे, भयानक अजगर गोरीनिच के पास हैं। बहुत-से वीर युवक वहां गये, मगर कभी कोई लौटकर नहीं आया। सभी उसके शिकार हो गये। वह हमारी सबसे बड़ी बहन का बेटा है और हमें उसे तुम्हारी मदद करने के लिए कहना होगा, वरना तुम कभी वापस नहीं लौटोगे। मैं जानती हूं कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं कौवे को सन्देशवाहक के रूप में उसके पास भेजूंगी। वह बहन को पहले से सूचित कर देगा। अब तुम सो जाओ और अच्छी तरह से सो लो, क्योंकि मैं तुम्हें कल सुबह ही जगा दूंगी।"

वीर युवक ख़ूब मीठी नींद सोया और अगले दिन तड़के ही जाग उठा। उसने हाथ-मुंह धोया और बाबा-यगा की तैयार की हुई बढ़िया चीज़ें खाईं। तब बाबा-यगा ने उसे लाल ऊन का एक गोला दिया और मार्ग दिखाने के लिए बाहर ले आयी। उन्होंने एक दूसरे से विदा ली। गोला आगे-आगे लुढ़कता जाता था और छोटा इवान उसके पीछे-पीछे चलता जाता था।

वह सुबह से शाम तक चलता रहता और शाम से सुबह तक। जब थक जाता तो गोला उठा लेता और किसी झरने के पास रोटी का टुकड़ा खाने और पानी पीने के लिए बैठ जाता। इसके बाद वह फिर से अपना सफ़र जारी कर देता।

तीसरा दिन ढलते-ढलते ऊन का गोला एक बड़े मकान के पास जाकर रुक गया। यह मकान बारह स्तम्भों और बारह पत्थरों के ऊपर खड़ा था। मकान के चारों तरफ़ ऊंची चारदीवारी थी।

एक कुत्ता भौंका और बाबा-यगा, दोनों चुड़ैलों की सबसे बड़ी बहन दौड़ती हुई ओसारे में आयी। उसने कुत्ते को चुप हो जाने का इशारा किया और इवान से कहा:

"आओ, वीर युवक, मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानती हूं। मेरी बहन का भेजा हुआ सन्देशवाहक, यानी कौवा, उसका सन्देश देकर यहां से लौट चुका है। मैं तुम्हें तुम्हारी मुसीबत-परेशानी से निजात दिलाने की कोशिश करूंगी। अब तुम भीतर आकर खाओ-पिओ और आराम करो।"

वह उसे भीतर ले गयी और ख़ूब खिलाया-पिलाया।

"अब तुम्हें छिप जाना चाहिए – मेरा बेटा अजगर गोरीनिच, बस, आने ही वाला है। जब वह घर लौटता है तो हमेशा उसका मिज़ाज बिगड़ा हुआ होता है और उसे ज़ोरों की भूख लगी होती है। मुझे डर लगता है कि कहीं वह तुम्हें ही न निगल जाये।"

उसने तहखाने का द्वार खोला और कहा :

"वहां चले जाओ और जब तक मैं न बुलाऊं, वहीं बैठे रहना।"

अभी उसने तहख़ाने को बन्द किया ही था कि बहुत भयानक गड़गड़ाहट और ज़ोर का शोर सुनाई दिया। दरवाज़े अपने आप खुल गये और अजगर गोरीनिच इतने ज़ोर से भीतर आया कि दीवारें तक हिल गयीं।

"मुझे यहां आदम बू आ रही है, आदम बू!" वह गरजा।

"अरे नहीं बेटा, यहां आदम बू कैसे हो सकती है? बरसों गुज़रे यहां तो कभी कोई भूरा भेड़िया तक नहीं आया, किसी परिन्दे तक ने पर नहीं मारा। तुम खुद ही सारी दुनिया में घूमकर आये हो और यह बू भी अपने साथ लाये हो।"

इतना कहकर वह मेज़ पर खाना चुनने लगी। उसने तीन साल की उम्र का एक भुना हुआ बैल अलावघर से बाहर निकाला और एक बहुत बड़ी बालटी शराब की लायी। वह शराब की पूरी बालटी एक ही सांस में पी गया और भुना हुआ बैल इस तरह निगल गया जैसे चखकर ही देख रहा हो। इसके बाद वह कुछ खुश दिखाई देने लगा।

"ओ मां, अब मैं किसके साथ मन बहलाऊं? किसके साथ ताश खेलूं?"

"मैं तेरे मनबहलाव और ताश खेलने के लिए किसी को ला तो सकती हूं, मगर डर लगता है कि कहीं तुम उसी पर हाथ साफ़ न कर डालो।"

"मां, उसे बुला लाओ, और कोई चिन्ता मत करो। मैं उसका बाल भी बांका नहीं करूंगा। मैं तो ताश की एक बाज़ी खेलने के लिए, थोड़ा मन बहलाने के लिए मरा जा रहा हूं।"

"अच्छा बेटा, अपने शब्द याद रखना," बाबा-यगा ने उत्तर दिया और तब उसने तहख़ाने का दरवाज़ा खोला।

"बाहर आ जाओ इवान! तुम घर के मालिक का सम्मान करते हुए उसके साथ ताश की एक बाज़ी खेलो।"

वे दोनों मेज़ पर बैठ गये तो अजगर गोरीनिच ने कहा :

"खेल की शर्त यह है कि जीतनेवाला हारनेवाले को खा जाये।"

वे तमाम रात खेलते रहे और बाबा-यगा अपने मेहमान की मदद करती रही। सुबह होते तक इवान ने पहली बाज़ी जीत ली।

तब अजगर गोरीनिच ने उसकी आरज़ू-मिन्नत की :

उसने तहख़ाने का द्वार खोला और कहा:

"वहां चले जाओ और जब तक मैं न बुलाऊं, वहीं बैठे रहना।"

अभी उसने तहख़ाने को बन्द किया ही था कि बहुत भयानक गड़गड़ाहट और ज़ोर का शोर सुनाई दिया। दरवाज़े अपने आप खुल गये और अजगर गोरीनिच इतने ज़ोर से भीतर आया कि दीवारें तक हिल गयीं।

"मुझे यहां आदम बू आ रही है, आदम बू!" वह गरजा।

"अरे नहीं बेटा, यहां आदम बू कैसे हो सकती है? बरसों गुज़रे यहां तो कभी कोई भूरा भेड़िया तक नहीं आया, किसी परिन्दे तक ने पर नही मारा। तुम खुद ही सारी दुनिया में घूमकर आये हो और यह बू भी अपने साथ लाये हो।"

इतना कहकर वह मेज़ पर खाना चुनने लगी। उसने तीन साल की उम्र का एक भुना हुआ बैल अलावघर से बाहर निकाला और एक बहुत बड़ी बालटी शराब की लायी। वह शराब की पूरी बालटी एक ही सांस में पी गया और भुना हुआ बैल इस तरह निगल गया जैसे चखकर ही देख रहा हो। इसके बाद वह कुछ खुश दिखाई देने लगा।

"ओ मां, अब मैं किसके साथ मन बहलाऊं? किसके साथ ताश खेलूं?"

"मैं तेरे मनबहलाव और ताश खेलने के लिए किसी को ला तो सकती हूं, मगर डर लगता है कि कहीं तुम उसी पर हाथ साफ़ न कर डालो।"

"मां, उसे बुला लाओ, और कोई चिन्ता मत करो। मैं उसका बाल भी बांका नहीं करूंगा। मैं तो ताश की एक बाज़ी खेलने के लिए, थोड़ा मन बहलाने के लिए मरा जा रहा हूं।"

"अच्छा बेटा, अपने शब्द याद रखना," बाबा-यगा ने उत्तर दिया और तब उसने तहख़ाने का दरवाज़ा खोला।

"बाहर आ जाओ इवान! तुम घर के मालिक का सम्मान करते हुए उसके साथ ताश की एक बाज़ी खेलो।"

वे दोनों मेज़ पर बैठ गये तो अजगर गोरीनिच ने कहा:

"खेल की शर्त यह है कि जीतनेवाला हारनेवाले को खा जाये।"

वे तमाम रात खेलते रहे और बाबा-यगा अपने मेहमान की मदद करती रही। सुबह होते तक इवान ने पहली बाज़ी जीत ली।

तब अजगर गोरीनिच ने उसकी आरज़ू-मिन्नत की:



"वीर सेवक, आज का दिन हमारे साथ और ठहरो ताकि मैं शाम को लौटकर हारी बाज़ी जीत सकूं।"

तब वह उड़कर वहां से ग़ायब हो गया। उसके जाने के बाद छोटा इवान गहरी नींद सोया और जब सोकर उठा तो बाबा-यगा ने उसे ख़ूब खिलाया-पिलाया।

सूरज डूबने पर अजगर गोरीनिच घर लौटा। उसने भुना हुआ एक बैल खाया तथा शराब की डेढ़ बालटी पी। इसके बाद उसने कहा: "अच्छा, आओ अब बाज़ी खेलें और मैं जीतकर अपने आपको लौटा लूंगा।"

मगर अजगर गोरीनिच रात भर नहीं सोया था, दिन को सारी दुनिया का चक्कर लगाता हुआ थक गया, इसलिए वह जल्द ही ऊंघने लगा। बाबा-यगा

की मदद से इस बार भी इवान ने बाज़ी जीत ली। तब अजगर गोरीनिच ने कहा :

"इस वक़्त तो मुझे ज़रूरी काम से बाहर जाना है। हम तीसरी बाज़ी आज शाम को खेलेंगे।"

इवान ने अच्छी तरह आराम किया और खूब सोया, जबकि अजगर गोरीनिच दो रातों से नहीं सोया था और दुनिया भर में उड़ता फिरता रहा था। वह बिल्कुल थका-मांदा घर लौटा। उसने एक भुना हुआ बैल खाया और शराब की दो बालटियां पीं। इसके बाद उसने मेहमान को बुलाया :

"बैठो, युवक, मैं बाज़ी जीतकर अपने आपको लौटा लूंगा।"

मगर वह बहुत थका हुआ और उनींदा था। इसलिए वीर युवक ने तीसरी बाज़ी भी शीघ्र ही जीत ली।

अजगर गोरीनिच सहम गया और घुटने टेककर दया की भीख मांगने लगा।

"वीर युवक! मुझे खाना नहीं, मेरी जान मत लेना! तुम जो भी चाहोगे, मैं वही तुम्हारी सेवा करूंगा!"

तब उसने अपनी मां के सामने घुटने टेके और उससे भी प्रार्थना की :

"मां, इससे कहो कि मेरी जान बख़्श दे।"

छोटा इवान तो खैर चाहता ही यही था।

"ठीक है, अजगर गोरीनिच, मैंने तीन बाज़ियां जीती हैं, यदि तुम मुझे तीन अजूबे – अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और सुर भरनेवाला बिल्ला दे दो तो मैं तुम्हारी जान बख़्श दूंगा।"

अजगर गोरीनिच खुशी से उछल पड़ा और वह अपने मेहमान तथा अपनी बूढ़ी मां बाबा-यगा को चूमने लगा।

"मुझे यह सौदा मंजूर है। बड़ी खुशी से तुम ये चीजें ले सकते हो!" वह चिल्लाया। "मैं अपने लिए इनसे भी अच्छे अजूबे ला सकता हूं।"

इसके बाद उसने एक बड़ी दावत की। अजगर गोरीनिच ने इवान के साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया और उसे अपना भाई कहा। उसने उसे घर पहुंचा आने के लिए अपनी सेवा उपस्थित की।

"तुम्हें पैदल जाने और अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और सुर भरनेवाला बिल्ला खुद उठाकर ले जाने की क्या ज़रूरत है? मैं तुम्हें जहां भी

चाहो, घड़ी भर में पहुंचा सकता हूं।"

"यह बिल्कुल ठीक है बेटा," बाबा-यगा ने कहा। "अपने मेहमान को मेरी सबसे छोटी बहन, अपनी मौसी के पास ले जाओ। लौटते हुए अपनी मंझली मौसी से मिलना मत भूलना। तुम्हें उससे मिले एक मुद्दत हो गयी है।"

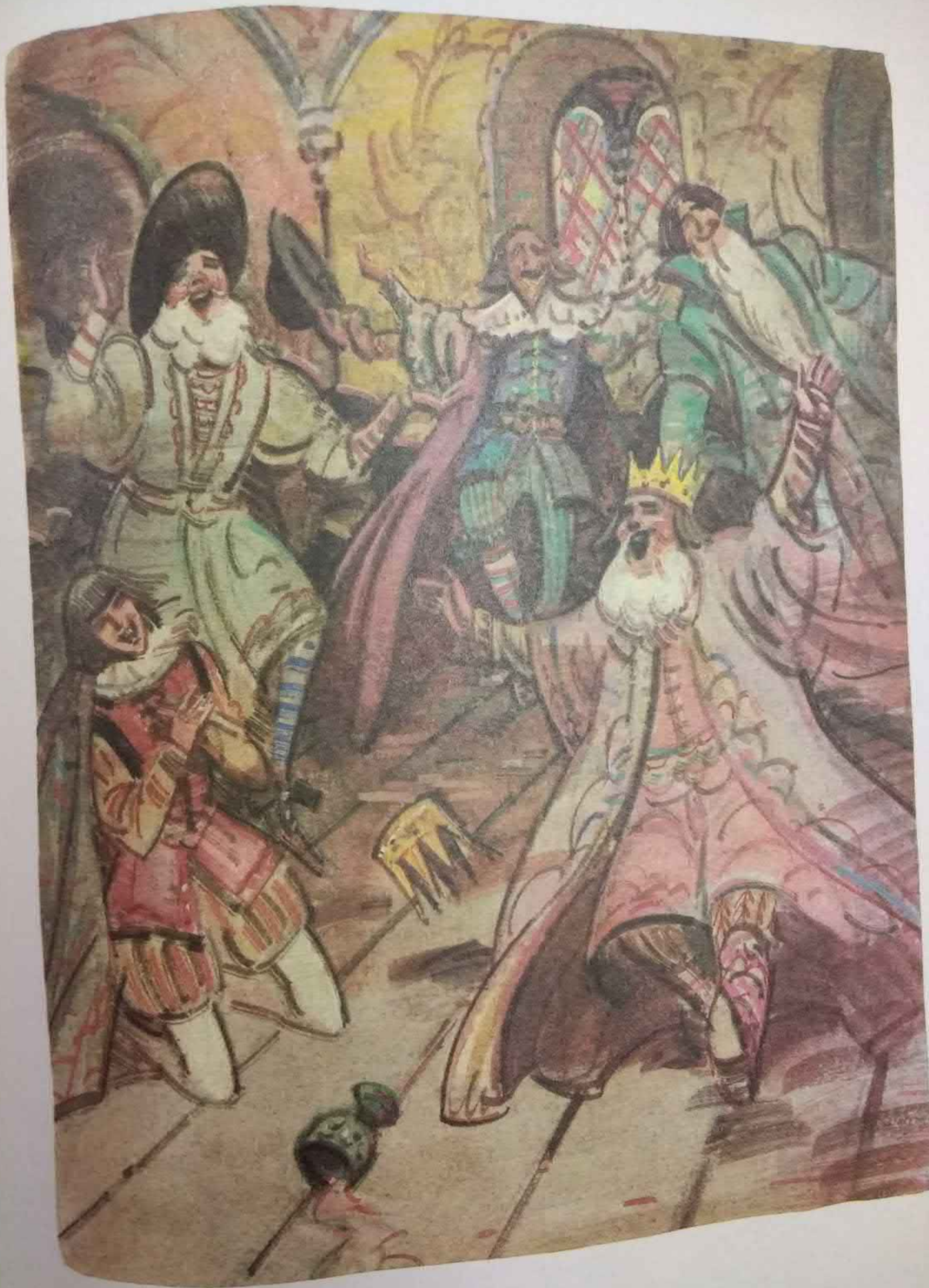
दावत ख़त्म हुई और छोटे इवान ने वे अजूबे अपने साथ ले लिये। तब उसने बाबा-यगा से विदा ली। इसके बाद अजगर गोरीनिच इवान को साथ लेकर नीले आकाश की ओर उड़ गया। एक घंटा भी नहीं बीता कि वे सबसे छोटी बाबा-यगा की झोंपड़ी के सामने जा उतरे। मालकिन दौड़कर बाहर ओसारे में आयी और उन्हें देखकर बेहद ख़ुशी हुई।

इवान ने समय नष्ट नहीं किया और जल्दी से सुनहरे अयालवाली घोड़ी पर ज़ीन कसा। तब उसने बाबा-यगा और उसके भानजे अजगर गोरीनिच से विदा ली और अपने देश की ओर चल दिया। मंज़िल-दा-मंज़िल कूच करते हुए इवान सभी अजूबे सही-सलामत अपने साथ लेकर घर पहुंचा।



जब वह ज़ार के महल में गया तो वहां बहुत-से मेहमान आये हुए थे जिनमें तीन दूसरे ज़ार और उनके बेटे, तीन विदेशी बादशाह और उनके शाहज़ादे शामिल थे। इनके अलावा बहुत-से मन्त्री और सामन्त भी वहां उपस्थित थे।

वीर युवक ने वे अजूबे ज़ार को भेंट किये। ज़ार की ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा।



"बहुत खूब, बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान! इस बार तुमने मेरी बहुत बड़ी खिदमत की है। इसके लिए मैं तुम्हारी तारीफ़ करता हूं और तुम्हें इनाम भी देता हूं। अब तक तुम मेरे मुख्य सईस थे और आज से मैं तुम्हें अपना सलाहकार बनाता हूं।"

ज़ार के सामन्तों और मन्त्रियों ने नाक-भौंह सिकोड़ी और लगे आपस में कानाफूसी करने।

"एक सईस हमारे साथ बैठेगा! हमारी तो नाक कट जायेगी! जाने इस ज़ार के दिमाग़ में क्या सनक समायी हुई है?"

मगर तभी अपने आप बजनेवाली गूसली ने एक धुन शुरू की, बिल्ला गाने लगा और हंस ने अपने नाच की ज़रा-सी झलक दिखायी। इसके बाद तो वह समां बंधा कि कुछ न पूछो! शाही मेहमानों में से कोई भी तो बैठा न रह सका, सभी उठकर नाचने लगे।

समय गुज़रता गया, पर नाच जारी रहा। बादशाहों और ज़ारों के ताज उतरकर इधर-उधर जा गिरे और उनके शाहज़ादे तथा राजकुमार खुशी से मस्त होकर रूसी लोक-नाच नाचते रहे। मन्त्री और सामन्त पसीने से लथपथ होकर हांफ रहे थे, मगर फिर भी नाचते जाते थे, नाचते जाते थे। अन्त में ज़ार ने हाथ हिलाकर प्रार्थना की:

"इसे बन्द करो, बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान, इस तमाशे को बन्द करो! हम सब बुरी तरह थक गये हैं।"

तब उस वीर युवक ने इन तीनों अजूबों को एक थैले में बन्द कर दिया और सब कुछ शान्त हो गया।

सभी मेहमान जहां भी जगह मिली, औंधे हो गये। उन सब के दम फूले हुए थे और वे बुरी तरह हांफ रहे थे:

"क्या ग़ज़ब के अजूबे हैं ये! क्या पहले कभी ऐसी अद्भुत चीज़ें देखी थीं?"

सभी विदेशी मेहमान मन ही मन ज़ार से ईर्ष्या करने लगे। ज़ार अपने मन में इतना खुश था जितना शायद ही कभी कोई हुआ होगा।

"अब सभी ज़ार और बादशाह ईर्ष्या से जल मरेंगे," उसने सोचा। "किसी के पास भी ऐसे अजूबे नहीं है!"

मगर उसके मन्त्री और सामन्त बड़बड़ाते और एक दूसरे से कहते रहे:

"अगर यही सिलसिला जारी रहा तो बहुत शीघ्र ही कोई गंवार-किसान इस राज्य का मुख्याधिकारी हो जायेगा। वह राज्य के सभी ओहदे अपने गंवार साथियों को दे देगा। अगर हमने इस इवान से छुट्टी न पा ली तो वह हम कुलीनों का जीना मुश्किल कर देगा।"

इसलिए अगले दिन मन्त्री और सामन्त इकट्ठे हुए और ज़ार के नये सलाहकार से छुटकारा पाने का उपाय सोचने लगे। वे सोचते रहे, सोचते रहे और आख़िर एक बूढ़े सामन्त ने सलाह दी:

"हमें आवारा पियक्कड़ को बुलाना चाहिए। वह इस मैदान का पुराना खिलाड़ी है।"

आवारा पियक्कड़ आया और उसने प्रणाम करके कहा:

"श्रीमान मन्त्री और सामन्तगण, मैं यह जानता हूं कि आपने मुझे किसलिए याद किया है। अगर आप लोग मुझे शराब की आधी बालटी देने का वचन दें तो मैं आपको ज़ार के नये सलाहकार से छुटकारा पाने का तरीक़ा बता दूंगा।"

"बताओ तरीक़ा," सामन्तों और मन्त्रियों ने कहा, "शराब की आधी बालटी तुम्हारी।"

अब उन्होंने उसे एक जाम भर कर दिया। शराबी ने उसे पीकर कहा:

"हमारे ज़ार को विधुर हुए चालीस बरस हो गये। तब से अब तक उसने शाहज़ादी अल्योना को पाने की बहुत बार कोशिश की है, मगर सदा असफल रहा है। तीन बार तो वह उसके राज्य पर चढ़ाई भी कर चुका है। बेचारे बहुत-से सैनिक भी मारे जा चुके हैं। मगर ताक़त से भी वह उसे नहीं पा सका है। आप लोग ज़ार को यह सुझाव दीजिये कि वह खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना को लाने के लिए बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान को भेजे। एक बार जाकर वह वहां से कभी नहीं लौटेगा।"

मन्त्रियों और सामन्तों की जान में जान आयी और सुबह होने पर वे ज़ार के पास गये।

"बादशाह सलामत, ऐसा शानदार सलाहकार चुनकर आपने बड़ी अक़्लमन्दी का काम किया है। जो अजूबे वह लाया है, उन्हें लाना बड़ी टेढ़ी खीर था। मगर अब वह यह डींग मारता है कि खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना को भी चुराकर ला सकता है।"

ज़ार ने जब खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना का नाम सुना तो तख़्त से उछल पड़ा। उसके लिए बैठे रहना मुश्किल हो गया।



"वाह, वाह! क्या बढ़िया ख़ुशख़बरी लाये हो तुम लोग!" वह चिल्लाया। "पहले से ही मुझे इसका ध्यान क्यों नहीं आया। ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना के लिए तो ज़रूर इवान को ही भेजना चाहिए।"

उसने अपने नये सलाहकार को बुलाया और कहा :

"अभी, इसी वक़्त नौ-तिया-सत्ताईस देश और दस-तिया-तीस राज्य के लिए रवाना हो जाओ और मुझे ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना लाकर दो।"

बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने हैरान होकर कहा :

"मगर हुज़ूर, वह न तो अपने आप बजनेवाली गूसली है, न नाचनेवाला हंस और न सुर भरनेवाला बिल्ला है। उसे तो किसी थैले में भी बन्द नहीं किया जा सकता। बहुत संभव है कि उसे यहां आना पसन्द ही न हो।"

मगर ज़ार ने ज़ोर-ज़ोर से पैर पटके, दाढ़ी हिलायी और हाथ झटककर कहा :

"मुझसे बहस मत करो! मैं कुछ नहीं सुनूंगा! जैसे भी हो, उसे लाओ! अगर तुम ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना को ले आते हो तो मैं तुम्हें एक शहर और उसके इर्द-गिर्द की सभी ज़मीन देकर मन्त्री नियुक्त कर दूंगा। अगर ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग करवा दूंगा।"

ज़ार से जुदा होते समय इवान बड़ा उदास और चिन्ता में डूबा हुआ था। उसने सुनहरे अयालवाली घोड़ी पर ज़ीन कसा तो घोड़ी ने पूछा :

"प्यारे मालिक, तुम इतने उदास और परेशान क्यों हो? क्या कोई मुसीबत सिर पर आ पड़ी है या दुर्भाग्य ने आ घेरा है?"

"कोई बड़ी मुसीबत तो नहीं, पर ख़ुश होने की बात भी नहीं। ज़ार ने मुझे हुक्म दिया है कि उसे ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना लाकर दूं। वह ख़ुद पिछले तीन बरसों से उसे पाने की कोशिश कर रहा है, मगर हर बार निराश होकर ही रह गया

है। उसे जीतने के लिए उसने तीन बार लड़ाइयां भी लड़ीं, मगर उसकी दाल नहीं गली और अब मुझे अकेले ही उसे लाने का हुक्म दिया है।"

"ओह, यह तो कोई बहुत बड़ी बात नहीं," सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा, "मैं तुम्हारी मदद करूंगी और हम जैसे-तैसे यह काम भी पूरा कर लेंगे।"

छोटे इवान ने तैयार होने में बहुत देर न लगायी और तुरन्त ही वहां से चल दिया। उसे घोड़ी पर सवार होते तो लोगों ने देखा, मगर वह कब और कहां चला गया, यह कोई नहीं देख पाया।

वह कब तक इसी तरह सवारी करता रहा, थोड़ी देर या बहुत देर तक, यह कहना मुश्किल है, मगर अन्त में वह दस-तिया-तीस राज्य में पहुंचा। वहां पहुंचकर उसने देखा कि मज़बूत चारदीवारी उसका रास्ता रोककर खड़ी है। मगर सुनहरे अयाल-वाली घोड़ी उस चारदीवारी को आसानी से फांद गयी। इवान अब ज़ार के शाही बगीचे में जा पहुंचा था। तब सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा:

"मैं सोने के सेबोंवाला पेड़ बन जाऊंगी और तुम मेरे पीछे छिप जाना। कल ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना सैर के लिए यहां आयेगी और वह एक सुनहरा सेब तोड़ना चाहेगी। जब वह पास आये तो तुम मुंह ताकते हुए खड़े मत रहना, झटपट उसे पकड़ लेना। मैं पास ही तैयार खड़ी मिलूंगी। तुम ज़रा-सी भी देर मत होने देना। शाहज़ादी के साथ फ़ौरन मेरी पीठ पर सवार हो जाना और बस, हम यहां से चलते बनेंगे। याद रखना कि ज़रा-सी भी चूक हुई कि हम दोनों की जान गयी।"

अगले दिन ख़ूबसूरत शाहज़ादी शाही बगीचे में सैर के लिए आयी। उसने सुनहरे सेबोंवाला पेड़ देखा तो अपनी दाइयों, सेविकाओं और दासियों से कहा:

"ओह, देखो तो कैसा प्यारा पेड़ है! इसके सेब सोने के हैं! जब तक मैं एक सेब तोड़कर लौटूं, तुम सब यहीं खड़ी रहना।"

वह दौड़कर वहां पहुंची तो उसी वक़्त, जाने कहां से, छोटा इवान कूदकर सामने आ गया और उसने ख़ूबसूरत शाहज़ादी को कसकर पकड़ लिया। वह सेब का पेड़ आन की आन में सुनहरे अयालवाली घोड़ी के रूप में बदल गया। घोड़ी ज़ोर से पैर पटककर उसे जल्दी करने का संकेत करने लगी। वह वीर युवक शाहज़ादी के साथ कूदकर काठी पर सवार हो गया और ये आन की आन में ग़ायब हो गये।

औरतें ज़ोर से चीखीं तो पहरेदार दौड़ते हुए भीतर आये। मगर खूबसूरत शाहजादी वहां कहीं नज़र न आयी। जब ज़ार ने यह सुना तो सभी तरफ़ तेज़ घुड़सवार उसकी खोज में भेजे। मगर वे सब अगले ही दिन निराश होकर लौट आये। उन्होंने अपने घोड़े ताबड़तोड़ दौड़ाये, मगर शाहजादी और उसे भगा ले जानेवाले की झलक तक न पा सके।

इसी बीच छोटा इवान अपनी घोड़ी को सरपट दौड़ाता हुआ बहुत-से देश, झीलें और नदियां लांघ चुका था।

शुरू में तो खूबसूरत शाहजादी अल्योना ने अपने को छुड़ाने की कोशिश की, मगर उसके बाद उसने यह कोशिश छोड़कर रोना शुरू कर दिया। वह थोड़ा रोती, फिर वीर युवक की ओर देखती, फिर थोड़ा रोती और तब फिर युवक को निहारती। दूसरे दिन उसने उससे बातचीत करनी शुरू की:

"अजनबी, तुम कौन हो और कहां से आये हो? तुम्हारी मातृभूमि कौनसी है? तुम्हारे सगे-सम्बन्धी कौन हैं और तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम इवान है। लोग मुझे बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान कहते हैं। मैं फ़लां-फ़लां ज़ार के राज्य का रहनेवाला हूं और मेरे मां-बाप किसान हैं।"

"तब मुझे यह बताओ, बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान, कि तुम मुझे अपने लिए भगाकर लाये हो या किसी दूसरे के लिए?"

"ज़ार के लिए। उसी ने मुझे ऐसा करने का आदेश दिया था," इवान ने कहा।

खूबसूरत शाहजादी अल्योना ने अपने हाथ मले और चिल्लायी:

"मैं उस बूढ़े उल्लू से जीते जी कभी शादी नहीं करूंगी! वह तीन बरस तक मुझे पाने की कोशिश करता रहा है, मगर नहीं पा सका है। उसने हमारे राज्य पर तीन बार चढ़ाई की, अपनी बहुत-सी फ़ौज कटवाई, मगर मुझे हासिल नहीं कर सका। अब भी वह मुझे नहीं पा सकेगा!"

वीर युवक ये शब्द सुनकर बेहद खुश हुआ। मगर मुंह से कुछ न बोला। वह मन ही मन सोचे बिना न रह सका: "अगर ऐसी बीवी मुझे मिल जाये तो कैसा रहे!"

धीरे-धीरे उसे अपने देश की सीमा दिखाई देने लगी। बूढ़े ज़ार ने ये सभी दिन खिड़की में बैठकर इवान के इन्तज़ार में गुज़ारे थे। जैसे ही वह वीर युवक नगर के पास पहुंचा कि ज़ार अपने महल के दरवाज़े पर खड़ा होकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा।





इवान के वहां पहुंचते ही ज़ार ने ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना को सहारा देकर घोड़ी से नीचे उतारा और उसके गोरे हाथों को अपने हाथों में लेकर कहा:

"कई बरसों से मैं तुम्हारे पास अपने दूत भेजता रहा हूं और तुम्हें पाने के लिए खुद भी आता रहा हूं, मगर तुम हमेशा ही इन्कार करती रही हो। इस बार तो तुम्हें मुझसे शादी करनी ही होगी।"

ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना ज़रा मुस्करायी:

"बादशाह सलामत, तुम मुझे कुछ देर आराम करके सफ़र की थकान मिटाने दो और तब हम शादी की चर्चा करेंगे।"

अब क्या था – ज़ार ने जल्दी मचानी शुरू की। दाइयों, दासियों और नौकरानियों को बुलाकर पूछा:

"क्या हमारी प्रिय मेंहमान के लिए कमरे सज चुके हैं?"

"जी हुज़ूर, बहुत पहले से ही।"

"अच्छा तो सुनो, अब ये तुम्हारी रानी होंगी। इसलिए इनके सभी आदेश मानना और इस बात का ख्याल रखना कि इन्हें किसी भी चीज़ की तकलीफ़ न होने पाये।"

दाइयां, दासियां और नौकरानियां शाहज़ादी को उसके कमरों में ले गयीं। ज़ार ने बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान से कहा:

"बहुत ख़ूब इवान! इस सेवा के बदले में मैं तुम्हें अपना प्रधान-मन्त्री बनाता हूं और तीन नगर तथा उसके इर्द-गिर्द की भूमि इनाम में देता हूं।"

एक दिन गुज़रा और फिर दूसरा। ज़ार बेहद बेताब हो उठा। वह शादी करने के लिए तड़प रहा था। इसलिए उसने ख़ूबसूरत शाहज़ाही अल्योना से जाकर पूछा:

"दावत के लिए मेहमानों को किस दिन बुलाया जाये? गिरजे में हम किस दिन जायेंगे?"

मगर शाहज़ादी ने जवाब दिया: "शादी कैसे हो सकती है जब मेरे पास मेरी शादी की अंगूठी और शाही-गाड़ी ही नहीं है?"

"ओह, यह बात है," ज़ार ने कहा, "तो मेरे पास घोड़ा-गाड़ियों और अंगूठियों की कमी थोड़े ही है। बढ़िया से बढ़िया और चुनी हुई अंगूठियां और गाड़ियां हैं। मगर यदि तुम्हें उनमें से कोई भी पसन्द न आये तो हम समुद्र पार से तुम्हारी मनपसन्द की

चीज़ें मंगवा सकते हैं।"

"नहीं, बादशाह सलामत, मैं अपनी शाही-गाड़ी के अलावा दूसरी किसी गाड़ी में गिरजाघर नहीं जाऊंगी और अपनी अंगूठी के सिवा कोई दूसरी अंगूठी पहनकर शादी नहीं करवाऊंगी।"

तब ज़ार ने पूछा:

"तुम्हारी शादी की अंगूठी तथा शाही-गाड़ी कहां हैं?"

"मेरी अंगूठी मेरे सफ़री डिब्बे में है, मेरा सफ़री डिब्बा मेरी गाड़ी में है और मेरी गाड़ी बुयान द्वीप के समीप समुद्र की तह में है। इनके आ जाने के पहले शादी की बात न करना ही बेहतर होगा।"

ज़ार ने अपना ताज उतारकर सिर खुजलाया।

"मगर समुद्र की तह से तुम्हारी गाड़ी कैसे हासिल की जाये?"

"इससे मेरा सरोकार नहीं, जो भी चाहो करो।"

और वह झटपट अपने कमरे में चली गयी।

ज़ार सोचने के लिए अकेला बैठा रह गया। वह सोचता रहा, सोचता रहा और अन्त में उसे बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान का ध्यान आया।

"एक वही है जो मुझे अंगूठी और गाड़ी लाकर दे सकता है!"

ज़ार ने उसी वक़्त इवान को बुलवाया और उससे कहा:

"मेरे वफ़ादार सेवक, बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान, जो मैं कहता हूं उसे सुनो। तुम्हारे सिवा मुझे अपने आप बजनेवाली गूसली, नाचनेवाला हंस और सुर भरनेवाला बिल्ला कोई भी नहीं लाकर दे सकता था। ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना को लाना भी किसी दूसरे के बस का काम नहीं था। मेरा तीसरा काम भी तुम्हीं कर सकते हो – मुझे अल्योना की शादी की अंगूठी और शाही-गाड़ी लाकर दो। अंगूठी उसके सफ़री डिब्बे में रखी है और सफ़री डिब्बा गाड़ी में रखा है तथा गाड़ी बुयान द्वीप के पास समुद्र की तह में पड़ी है। अगर तुम मुझे गाड़ी और अंगूठी ला दोगे तो मैं तुम्हें अपने राज्य के एक तिहाई हिस्से का मालिक बना दूंगा।"

बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने कहा:

"मगर हुज़ूर, मैं कोई ह्वेल-मछली तो हूं नहीं! अंगूठी और गाड़ी के लिए मैं समुद्र की तह में भला किस तरह पहुंच सकता हूं?"

ज़ार नाराज़ हो गया और पैर पटककर चिल्लाया:

"यह बकबक बन्द करो! मैं यह सब कुछ सुनने को तैयार नहीं हूं! मेरा काम

हुक्म देना है और तुम्हारा हुक्म बजा लाना। चीज़ें ले आओगे तो इनाम पाओगे, वरना सिर उड़ा दिया जायेगा।"

सो वह वीर युवक अस्तबल में पहुंचा। उसने सुनहरे अयालवाली घोड़ी पर ज़ीन कसा तो उसने पूछा:

"क्या कहीं दूर के सफ़र की तैयारी है, मालिक?"

"यह तो मैं ख़ुद नहीं जानता, मगर जो भी हो, मुझे जाना तो होगा ही। ज़ार ने मुझे शाहज़ादी की शाही-गाड़ी तथा अंगूठी लाने का हुक्म दिया है। अंगूठी उसके सफ़री डिब्बे में रखी है, डिब्बा गाड़ी में और गाड़ी बुयान द्वीप के पास समुद्र की तह में। हमें ये चीजें लानी ही होंगी।"

सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा:

"यह काम पहलेवाले सभी कामों से मुश्किल है। यह जगह तो दूर नहीं, पर जान का ख़तरा ज़रूर है। मैं यह जानती हूं कि गाड़ी कहां है, मगर उसे पाना आसान नहीं। मैं समुद्र की तह में जाऊंगी और गाड़ी में जुतकर उसे बाहर खींच लाने की कोशिश करूंगी। अगर समुद्री घोड़ों के क़ाबू न आ गयी तो बच निकलूंगी, पर यदि उनके हत्थे चढ़ गयी तो वे मुझे चबा जायेंगे और तब न तुम मुझे ही कभी देख पाओगे और न शाही-गाड़ी को ही।"

इवान सोचने लगा। वह सोचता रहा, सोचता रहा और आख़िर उसे एक तरकीब सूझी।

वह ज़ार के पास गया।

"हुज़ूर," उसने कहा, "मुझे बैल की बारह खालें, राल सने पांच मन रस्से, पांच मन राल और एक कड़ाहे की ज़रूरत है।"

"जिस चीज़ की भी और जितनी भी ज़रूरत हो ले लो," ज़ार ने कहा। "केवल जल्दी करो।"

इस तरह युवक ने बैल की खालें, रस्से और राल से भरे कड़ाहे एक गाड़ी में लादे, घोड़ी को उसमें जोता और वहां से चल दिया।

चलते-चलते वे समुद्र-तट पर, ज़ार के संरक्षित चरागाहों के पास पहुंचे। यहां पहुंचकर उसने अपनी घोड़ी पर खालें लपेटीं और उन्हें रस्सों से बांध दिया।

"अगर समुद्री घोड़े तुम्हें देखकर तुम पर झपटेंगे भी तो बहुत आसानी से खा नहीं पायेंगे।"

उसने वे बारह की बारह खालें लपेटकर उन्हें पांच मन रस्सों से अच्छी तरह कस दिया। इसके बाद उसने पांच मन राल गर्म की और ऊपर से उसका लेप कर दिया।

"अब मुझे समुद्री घोड़ों से डरने की ज़रूरत नहीं," सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा। "यहां चरागाहों में बैठकर तीन दिन तक मेरा इन्तज़ार करो। अपनी इस गूसली को बजाते रहना और सोना नहीं।"

तब वह समुद्र के कूदी और पानी के नीचे ग़ायब हो गयी।

बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान अकेला ही समुद्र-तट पर बैठा रह गया। एक दिन गुज़रा और फिर दूसरा। वह जागता रहा तथा अपनी गूसली बजाता हुआ समुद्र की ओर देखता रहा। मगर तीसरे दिन उसे बेहद नींद आयी और वह ऊंघने लगा। गूसली भी जागते रहने के लिए उसकी मदद न कर सकी। जब तक हो सका, उसने नींद को दूर भगाया, मगर अन्त में हार गया।

वह बहुत देर तक सोया या थोड़ी देर तक सोया, यह कहना मुश्किल है। मगर तब उसने घोड़ी के सुमों की टाप सुनी। उसने सिर उठाकर देखा – और क्या देखा? उसकी घोड़ी कूदकर तट पर पहुंच गयी है, शाही-गाड़ी भी उसके साथ है। सुनहरे अयालवाले छः समुद्री घोड़े उसके साथ दायें-बायें चिमटे हुए थे।

छोटा इवान उससे मिलने के लिए लपका। सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा :



उसने वे बारह की बारह खालें लपेटकर उन्हें पांच मन रस्सों से अच्छी तरह कस दिया। इसके बाद उसने पांच मन राल गर्म की और ऊपर से उसका लेप कर दिया।

"अब मुझे समुद्री घोड़ों से डरने की ज़रूरत नहीं," सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा। "यहां चरागाहों में बैठकर तीन दिन तक मेरा इन्तज़ार करो। अपनी इस गूसली को बजाते रहना और सोना नहीं।"

तब वह समुद्र के कूदी और पानी के नीचे ग़ायब हो गयी।

बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान अकेला ही समुद्र-तट पर बैठा रह गया। एक दिन गुज़रा और फिर दूसरा। वह जागता रहा तथा अपनी गूसली बजाता हुआ समुद्र की ओर देखता रहा। मगर तीसरे दिन उसे बेहद नींद आयी और वह ऊंघने लगा। गूसली भी जागते रहने के लिए उसकी मदद न कर सकी। जब तक हो सका, उसने नींद को दूर भगाया, मगर अन्त में हार गया।

वह बहुत देर तक सोया या थोड़ी देर तक सोया, यह कहना मुश्किल है। मगर तब उसने घोड़ी के सुमों की टाप सुनी। उसने सिर उठाकर देखा – और क्या देखा? उसकी घोड़ी कूदकर तट पर पहुंच गयी है, शाही-गाड़ी भी उसके साथ है। सुनहरे अयालवाले छः समुद्री घोड़े उसके साथ दायें-बायें चिमटे हुए थे।

छोटा इवान उससे मिलने के लिए लपका। सुनहरे अयालवाली घोड़ी ने कहा :



"अगर तुमने मुझे बैलों की खालों से ढांपकर उन्हें रस्सों से कसकर ऊपर से राल का लेप न किया होता तो मुझे कभी न देख पाते। समुद्री घोड़े एकसाथ मुझ पर झपटे। नौ खालें तो इन्होंने टुकड़े-टुकड़े कर दीं और दो अन्य भी लगभग समाप्त हो गयी थीं। और इन छः घोड़ों के दांत इन रस्सों और राल में इस बुरी तरह गड़ गये कि वे इन्हें अलग न कर पाये। पर ख़ैर, यह कुछ बुरा नहीं हुआ। ये घोड़े भी तुम्हारे काम आयेंगे।"

वीर युवक ने उन समुद्री घोड़ों के पैर रस्सी से बांधकर अपना चाबुक निकाला और उन्हें अक़्ल सिखाने लगा। वह उन्हें मारता जाता था और साथ-साथ कहता जाता था :

"तुम मुझे अपना मालिक मानोगे या नहीं? मेरे आदेश का पालन करोगे या नहीं? अगर तुम नहीं मानोगे तो मैं तुम्हारी खाल उधेड़कर तुम्हारे धड़ भेड़ियों के सामने फेंक दूंगा।"

तब समुद्री घोड़ों ने घुटने टेककर दया की भीख मांगनी शुरू की :

"वीर युवक, अब हमें और मत मारो, अधिक घायल मत करो, हम तुम्हारा हर हुक्म बजायेंगे और वफ़ादारी से तुम्हारी ख़िदमत करेंगे। जब कभी तुम पर कोई मुसीबत आयेगी तो हम तुम्हारी मदद करेंगे।"

तब इवान ने उन्हें पीटना बन्द कर दिया। उन सात घोड़ों को गाड़ी में जोतकर वह जल्दी से ज़ार के मुख्य द्वार पर पहुंचा। इवान सुनहरे अयालवाली घोड़ी और समुद्री घोड़ों को अस्तबल में छोड़कर ज़ार के पास गया।

"बादशाह सलामत, शाही-गाड़ी हाज़िर है। वह तमाम दहेज समेत आपके आंगन में खड़ी है।"

ज़ार तो इवान का शुक्रिया अदा करना भी भूल गया। वह फ़ौरन गाड़ी की तरफ़ दौड़ा। वहां जाकर उसने डिब्बा उठाया और उसे ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना के पास ले गया।

"देखो, ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना, मैंने तुम्हारी सभी इच्छाएं और मांगें पूरी कर दी हैं। यह रहा तुम्हारा डिब्बा और अंगूठी तथा शाही-गाड़ी बाहर खड़ी तुम्हारा इन्तज़ार कर रही है। अब कहो, शादी की रस्म किस दिन अदा हो और मेहमानों को किस दिन बुलाया जाये?"

मगर ख़ूबसूरत शाहज़ादी अल्योना ने जवाब दिया :

"शादी मैं ज़रूर करूंगी और हम बहुत जल्द ही शादी की रस्म पूरी कर सकते

हैं। मगर मैं नहीं चाहती कि शादी के दिन तुम इतने बूढ़े और खूसट दिखाई दो। लोग क्या कहेंगे? वे अवश्य ही हम पर हंसेंगे: 'ज़रा इस बूढ़े खूसट को तो देखो, जवान लड़की से शादी कर रहा है!' क्या यह इतना भी नहीं जानता कि बूढ़े की जवान पत्नी को सभी ललचायी नज़र से देखते हैं। तुम जानते हो कि किसी की ज़बान तो बन्द नहीं की जा सकती – जितने मुंह उतनी बातें। अगर हमारी शादी के पहले तुम जवान हो जाओ तो बहुत अच्छा रहे।"

ज़ार ने जवाब दिया:

"मैं खुशी से जवान होना पसन्द करूंगा, मगर तुम्हें इसका तरीक़ा बताना होगा। जवान होने से बेहतर क्या हो सकता है, मगर हमारे राज्य में तो कभी कोई ऐसे जवान हुआ नहीं।"

तब खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना ने उसे बताया:

"तुम तांबे के तीन बड़े-बड़े कड़ाहों का प्रबन्ध कराओ। उनमें से एक को दूध से और बाक़ी दो को चश्मे के पानी से भरवा दो। दूध और पानी के एक कड़ाहे को खूब गर्म करवाना चाहिए। जब वे उबलने लगें तो तुम पहले दूध के कड़ाहे में कूदो, बाद में गर्म पानी के कड़ाहे में और इसके बाद ठण्डे पानी के कड़ाहे में। जब तुम अपने सारे शरीर को इन तीनों कड़ाहों में डुबोकर बाहर निकलोगे तो बीस साल के युवक की भांति जवान और सुन्दर दिखाई दोगे।"

"मगर क्या मैं झुलस नहीं जाऊंगा?" ज़ार ने पूछा।

"हमारे राज्य में तो बूढ़े बिल्कुल हैं ही नहीं। हर कोई ऐसे करता है और हमने तो कभी किसी को झुलसते नहीं देखा।"

सो ज़ार ने खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना के कहने के मुताबिक सभी चीज़ें तैयार करवा लीं। मगर जब दूध और पानी के कड़ाहे उबलने लगे तो वह अपना इरादा पक्का न रख सका और डगमगा गया। वह कड़ाहों के गिर्द चक्कर लगाता रहा और तब अचानक ही उसने अपना माथा थपथपाया:

"मैं सोच क्या रहा हूं? पहले बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान को इनमें नहाने दूं और तब मैं अपने बारे में देखूंगा। अगर उसे कुछ न हुआ तो मैं भी डुबकी लगा लूंगा। अगर वह झुलस गया तो कोई रोनेवाला भी नहीं होगा। उसके सभी घोड़े मेरे हो जायेंगे और अपने वचन के अनुसार मुझे राज्य का बंटवारा भी नहीं करना होगा।"

इसलिए उसने बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान को बुलवाया।

"हुज़ूर, अब आप क्या चाहते हैं? आपको यह न भूलना चाहिए कि मैं अभी सफ़र से लौटा हूं और मुझे आराम की ज़रूरत है।"

"मैं तुम्हें बहुत देर तक रुकने को नहीं कहूंगा – ज़रा इन कड़ाहों में डुबकी लगा लो और फिर जाकर आराम करो।"

इवान ने कड़ाहों में झांककर देखा। दूध और पानी से भरे कड़ाहे तो उबल रहे थे और पानी से भरा केवल तीसरा कड़ाहा शान्त और ठण्डा था।

"क्या आप मुझे ज़िन्दा उबालने की सोच रहे हैं, हुज़ूर?" उसने कहा। "वफ़ादारी से की गयी मेरी सेवाओं का क्या यही इनाम है?"

"ओह नहीं, इवान! देखो न, अगर कोई इनमें नहाता है तो जवान और खूबसूरत हो जाता है।"

"मगर हुज़ूर, मैं तो अभी बूढ़ा नहीं हूं और मुझे अधिक जवान होने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

ज़ार गुस्से में आ गया।

"अरे तुम भी कैसे झक्की हो! हमेशा बहस करते रहते हो! अगर तुम अपनी मर्ज़ी से नहीं कूदोगे तो मैं या तो तुम्हें ज़बरदस्ती इनमें फेंकवा दूंगा या कोड़े लगवाऊंगा।"

मगर तभी खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना अपने कमरों से दौड़ती हुई बाहर आयी और अच्छा मौक़ा पाकर वीर युवक के कान में यह फुसफुसा गयी:

"डुबकी लगने से पहले सुनहरे अयालवाली अपनी घोड़ी और समुद्री घोड़ों को ख़बर कर दो। इसके बाद तुम निश्चिन्त होकर इनमें नहा सकते हो।"

अल्योना ने तब ज़ार से कहा:

"मैं यह देखने आयी थी कि क्या मेरे कहने के मुताबिक़ हर चीज तैयार हो गयी है या नहीं?"

वह यह कहकर कड़ाहों के पास गयी और उसने उनमें झांककर देखा।

"जैसे मैंने कहा था, सब कुछ वैसे ही किया गया है," उसने कहा। "बादशाह सलामत, अब तुम इसमें नहा सकते हो। मैं जाकर शादी के लिए तैयार होती हूं।"

इतना कहकर वह अपनी अटारी की ओर दौड़ गयी। बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने ज़ार की तरफ़ देखकर कहा:

"ख़ैर, मैं तुमको एक और बार, सो भी अन्तिम बार ख़ुश करूंगा। ज़िन्दगी

में कोई भी दो बार तो मरता नहीं, मगर एक मौत से कोई भी बचता नहीं। सिर्फ़ इतनी मेहरबानी करें कि मुझे अपनी सुनहरे अयालवाली घोड़ी से मिले आने दें। हो सकता है कि उससे यह मेरी आखिरी मुलाक़ात हो। हम दोनों ने एकसाथ बहुत-सा सफ़र किया है।"

"जाओ, मगर वहां बहुत देर नहीं लगाना।"

बड़ी बुद्धिवाला छोटा इवान अस्तबल में गया और वहां उसने अपनी घोड़ी तथा समुद्री घोड़ों को सब कुछ बताया।

"जब तुम तीन बार हमारा हिनहिनाना सुनो," उन्होंने कहा, "तब तुम डुबकी लगाना और मन में किसी बात का डर मत लाना।"

तब इवान ज़ार के पास वापस आया।

"मैं अब बिल्कुल तैयार हूं, हुज़ूर," उसने कहा। "मैं इसी क्षण डुबकी लगाऊं-गा।"

उसने घोड़ों का हिनहिनाना सुना – एक, दो, तीन और छपक – वह वीर युवक गर्म दूध के कड़ाहे में कूद गया। तब वह बाहर निकलकर गर्म पानी के कड़ाहे में कूदा और अन्त में ठण्डे पानी में। वह तीसरे कड़ाहे से पौ फटते समय के आकाश-सा सुन्दर बनकर बाहर निकला। उस जैसा सुन्दर युवक पहले कभी पैदा ही नहीं हुआ था।

ज़ार ने उसे देखा तो उसकी हिचकिचाहट भी जाती रही। वह मुश्किल से चबूतरे पर चढ़ा और दूध के कड़ाहे में कूद गया और उसी में झुलस गया।

खूबसूरत शाहज़ादी अल्योना झटपट अटारी से नीचे आयी। शाहज़ादी ने इवान का गोरा हाथ अपने हाथों में ले लिया और उसकी उंगली में शादी की अंगूठी पहना दी। तब वह मन्द-मन्द मुस्कराती हुई बोली:

"तुम ज़ार के हुक्म से मुझे उठा लाये थे, मगर अब वह ज़िन्दा नहीं है। इसलिए तुम जैसा चाहो, वैसा कर सकते हो: अगर चाहो तो मुझे वापस छोड़ आ सकते हो या फिर अपनी पत्नी बना सकते हो।"

बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने उसके गोरे हाथों को अपने हाथों में ले लिया और दुलहन कहकर उसकी उंगली में अपनी अंगूठी पहना दी।

तब उसने अपने मां-बाप और भाइयों को शादी की दावत में शामिल होने के लिए बुलाया।

थोड़ी ही देर में उसके भाई, प्यारे-प्यारे बत्तीस युवक तथा उसके मां-बाप महल में आ पहुंचे।

शादी हुई और उसके बाद दावत। बड़ी बुद्धिवाले छोटे इवान ने अपनी बीवी – खूबसूरत शाहजादी अल्योना – के साथ हंसी-खुशी की जिन्दगी बसर करनी शुरू की।



काम के माहिर – सात सेम्योन

किसी वक़्त की बात है कि कहीं काम के बड़े माहिर सात सेम्योन रहते थे।

एक दिन वे ज़मीन जोतने और बीज बोने के लिए खेत में निकले। इसी समय ज़ार अपने सेनापतियों के साथ वहां से गुज़र रहा था। उसने खेत में नज़र डाली, सात काम करनेवालों को देखा और हैरान हुआ।

"यह क्या क़िस्सा है?" उसने कहा। "एक खेत में सात हलवाहे, सातों ही एक जैसे क़द के हैं और सभी के एक जैसे चेहरे-मोहरे हैं। पता कीजिये कि ये काम करनेवाले कौन हैं।"

ज़ार के नौकर-चाकर भागे गये और सात सेम्योन – सात काम करनेवालों को ज़ार के पास बुला लाये।

"तो बताइये, कौन हैं आप लोग और क्या काम करते हैं?" ज़ार ने जानना चाहा।

नौजवानों ने जवाब दिया:

"हम – सात भाई हैं, सात सेम्योन – सात काम करनेवाले। हम अपने बापदादा की ज़मीन जोतते-बोते हैं और हर कोई अपने किसी फ़न में माहिर है।"

"तो बताओ कि कौन, किस फ़न में माहिर है?" ज़ार ने पूछा।

सबसे बड़े सेम्योन ने जवाब दिया:

"मैं ज़मीन से आसमान तक लोहे का खम्भा बना सकता हूं।"

दूसरा सेम्योन बोला:

"मैं इस खम्भे पर चढ़ सकता हूं, चारों तरफ़ नज़र दौड़ा सकता हूं और यह देख सकता हूं कि कहां क्या हो रहा है।"



"मैं हूं सेम्योन-नाविक," तीसरे ने बताया, "इधर-उधर कुल्हाड़ा चलाया, जहाज़ बनाया और सागर की सतह के ऊपर भी तैर सकता हूं तथा सतह के नीचे भी।"

"मैं हूं सेम्योन-तीरंदाज़," चौथा बोला। "उड़ती हुई मक्खी को तीर से बींध देता हूं।"

"मैं हूं नजूमी-ज्योतिषी," पांचवें ने अपनी कला की चर्चा की। "एक-एक तारे को ऐसे गिन सकता हूं कि एक भी मेरी नज़र से नहीं चूक पाता।"

"मैं हूं सेम्योन-हलवाहा। एक दिन में ही ज़मीन जोतता-बोता और फ़सल बटोरता हूं।"

"और तुम क्या करते हो?" ज़ार ने सबसे छोटे सेम्योन से पूछा।

"ज़ार-पिता, मैं गाता-नाचता हूं, मुरली बजाता हूं।"

इसी वक़्त ज़ार के सेनापति ने कहा:

"ओह ज़ार-पिता! काम करनेवालों की तो हमें ज़रूरत है। लेकिन इस नचवैये-बजवैये को यहां से दूर भगा दो। ऐसों की हमें ज़रूरत नहीं। ये तो बेकार रोटी खाते हैं और क्वास पेय के गिलास चढ़ाते हैं।"

"हां, ऐसा ही करना चाहिए," ज़ार ने कहा।

मगर सबसे छोटे इवान ने ज़ार के सामने सिर झुकाकर कहा:

"ज़ार-पिता, मुझे अपना फ़न दिखाने, सींगी पर धुन बजाने दो।"

"अच्छी बात है," ज़ार ने कहा, "आखिरी बार बजा लो अपनी सींगी और फिर निकल जाओ मेरे राज्य से।"

तो सबसे छोटे सैम्योन ने छाल की सींगी ली और उस पर रूसी नाच की धुन बजाने लगा। बस क्या था लोग लगे ख़ूब नाचने, बड़ी चुस्ती-फुर्ती से पांव हिलाने-डुलाने! ज़ार नाच रहा था, सामन्त-दरबारी नाच रहे थे, सन्तरी-पहरेदार नाच रहे



थे। अस्तबलों में घोड़े नाचने लगे और बाड़ों में गउएं खूब मस्त होकर नाचने लगीं। मुर्गे-मुर्गियां भी नाच रहे थे। सबसे ज़्यादा जोश से तो सेनापति नाच रहा था। वह पसीने से तर-ब-तर हो रहा था, अपनी दाढ़ी को खूब हिला रहा था और उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। आखिर ज़ार ने चिल्लाकर कहा:

"बन्द करो यह धुन बजाना, अब और नाचा नहीं जाता, ताक़त नहीं रही।"

सबसे छोटा सेम्योन बोला:

"भले लोगो, आप सब आराम करें। लेकिन, तुम सेनापति, अपनी कड़वी ज़बान, लोगों के प्रति बुरी भावना रखने के लिए अभी और नाचो।"

बाक़ी सभी लोग तो शान्त हो गये, सिर्फ़ सेनापति नाचता रहा। वह इतना नाचा, इतना नाचा कि इसकी टांगें जवाब दे गयीं और गिर पड़ा। वह ज़मीन पर ऐसे पड़ा था जैसे बालू पर मछली।

इसके बाद सबसे छोटे सेम्योन ने छाल की सींगी फेंक दी।

"तो यह है मेरा हुनर!" उसने कहा।

ज़ार हंस रहा था, मगर सेनापति अपने दिल में कोई बुराई सोच रहा था। ज़ार बोला:

"तो सबसे बड़े सेम्योन, तुम अपना हुनर दिखाओ!"

सबसे बड़े सेम्योन ने कोई २४० किलोग्राम का हथौड़ा लिया और ज़मीन से नीले आसमान तक खम्भा बना दिया। उससे छोटा सेम्योन इस खम्भे पर चढ़ गया और सभी ओर नज़र दौड़ाने लगा। ज़ार ने पुकारकर पूछा:

"बताओ, क्या देख रहे हो?"

"देख रहा हूं कि सागर में जहाज़ तैर रहे हैं, देख रहा हूं कि खेतों में फ़सलें पक रही हैं।"

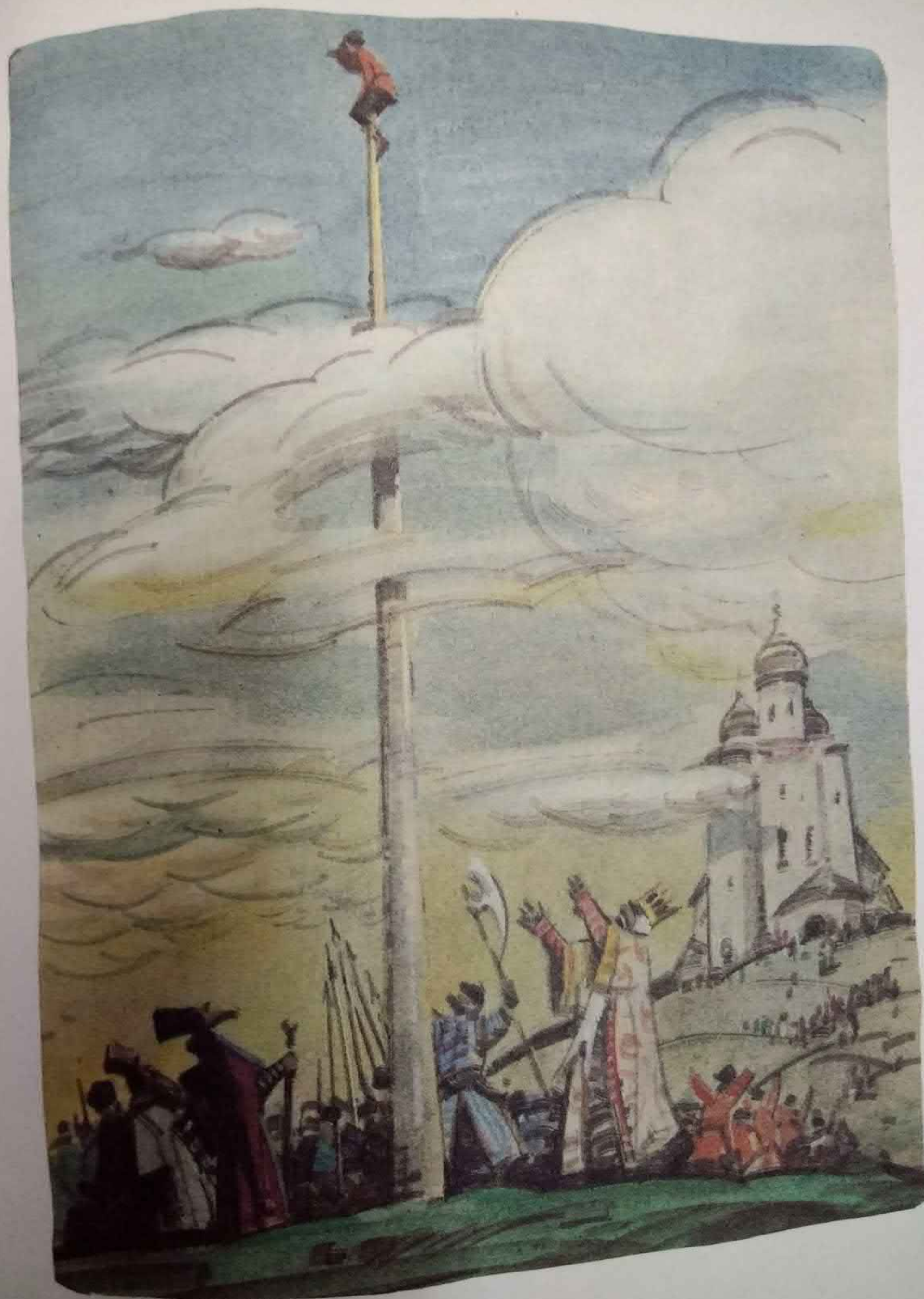
"और क्या देख रहे हो?"

"देख रहा हूं सागर-महासागर महान, उसमें है द्वीप बुयान जहां सोने के महल की खिड़की के पास बैठी हुई रूपवती येलेना रेशमी क़ालीन बुन रही है।"

"वह कैसी है?" ज़ार ने पूछा।

"इतनी सुन्दर कि न क़िस्से में बयान हो और न क़लम से लिखा जाये। उसकी चोटी के नीचे चांद चमकता है और हर बाल में मोती जगमगाता है।"

ज़ार ने चाहा कि रूपवती येलेना को किसी तरह अपनी बीवी बना ले और



उसने सगाई करने के लिए किसी को उसके पास भेजना चाहा। मगर दुष्ट सेनापति ने ज़ार को यह सीख दी :

"ज़ार-पिता, सातों सेम्योनों को रूपवती येलेना को लाने के लिए भेज दो। ये सभी बड़े हुनरमन्द हैं। अगर ये रूपवती येलेना को लेकर न आयें तो इन सभी को सख़्त सज़ा देना, इनके सिर कटवा डालने का हुक्म देना।"

"अच्छी बात है, भेज देता हूं!" ज़ार ने जवाब दिया।

और ज़ार ने सातों सेम्योनों को रूपवती येलेना को लाने का हुक्म दे दिया।

"नहीं तो," उसने कहा, "तुम लोगों के सिर कटवा दूंगा!"

हो ही क्या सकता था? सेम्योन-नाविक ने तेज़ कुल्हाड़ा लिया, लकड़ी को काटा-वाटा, जहाज़ बनाया, उसे रस्सियों-पालों से लैस किया और पानी में उतार दिया। उसने जहाज़ पर तरह-तरह का सामान और क़ीमती तोहफ़े लाद दिये। ज़ार ने दुष्ट सेनापति को इन भाइयों के साथ जाने, इन पर नज़र रखने का आदेश दिया। सेनापति के चेहरे का रंग उड़ गया, मगर चारा ही क्या था! अगर दूसरों के लिए गढ़ा न खोदता तो उसमें ख़ुद भी न गिरता।

तो ये जहाज़ पर सवार हो गये – पाल हवा में फड़फड़ाने लगे, लहरें ऊंची-ऊंची उठने लगीं और जहाज़ लांघने लगा सागर-महासागर महान जहां था, द्वीप बुयान।

जहाज़ बहुत देर चला या थोड़ी देर – यह कहना मुश्किल है, आख़िर पहुंच गया जहां था पराया देश। वे रूपवती येलेना के पास पहुंचे, क़ीमती तोहफ़े नज़र किये और ज़ार से शादी करने को राज़ी करने लगे।

रूपवती येलेना तोहफ़े लेती थी, उन्हें ग़ौर से देखती थी। लेकिन दुष्ट सेनापति उसके कान में फुसफुसाता जाता था :

"रूपवती येलेना, शादी के लिए तैयार नहीं होना, ज़ार बूढ़ा-खूसट है! उसके राज्य में भेड़िये हूंकते हैं, भालू घूमते हैं।"

रूपवती येलेना आग-बबूला हो गयी और उसने सगाई-शादी का सुझाव लेकर आनेवालों को अपनी आंखों से दूर हो जाने को कहा। हो ही क्या सकता था?

"सुनो, भाइयो," सबसे छोटे सेम्योन ने कहा। "तुम जहाज़ पर जाओ, पाल ऊपर उठाओ, रास्ते की तैयारी करो, अनाज जमा कर लो और राजकुमारी को लाने का काम मैं अपने जिम्मे लेता हूं।



सेम्योन-हलवाहे ने एक घण्टे में समुद्री बालू को जोत डाला, उसमें कूटू बोया, फ़सल काटी और रास्ते भर के लिए रोटी पकाकर तैयार कर ली। जहाज़ पर सभी तरह की तैयारी करके छः सेम्योन अपने सबसे छोटे भाई की राह देखने लगे।

और सबसे छोटा सेम्योन महल की तरफ़ चला गया। रूपवती येलेना खिड़की के पास बैठी थी, रेशमी क़ालीन बुन रही थी। सबसे छोटा सेम्योन खिड़की के नीचे बेंच पर बैठ गया और यह कहने लगा :

"बहुत अच्छा है आपका यह सागर-महासागर महान, जहां है द्वीप बुयान, लेकिन रूस तो सैकड़ों गुना सुन्दर है! हमारे यहां हरे चरागाह हैं, नीली नदियां हैं! हमारे यहां असीम मैदान हैं, झीलों के तटों पर सफ़ेद तनोंवाले भोज हैं, चरागाहों में आसमानी रंग के फूल हैं! हमारे यहां शाम की लाली सुबह की लाली से मिलती है, आकाश में चांद तारों से खिलवाड़ करता है। हमारे यहां ओसकण हैं शहद भरे

और नद-नाले रुपहले। चरवाहा सुबह को हरे-भरे चरागाह में जाता है, छाल की सीगी बजाता है और न चाहते हुए भी आदमी उसके पीछे-पीछे चलता जाता है ..."

सबसे छोटे सेम्योन ने इसी वक़्त छाल की सींगी बजानी शुरू कर दी। रूपवती येलेना सोने की दहलीज़ पर निकल आयी। सेम्योन सींगी बजाता हुआ बाग़ में से चला जा रहा था और रूपवती येलेना भी उसके पीछे-पीछे आ रही थी। सेम्योन ने बाग़ लांघा और वह भी बाग़ से बाहर चली गयी। सेम्योन ने चरागाह पार किया और रूपवती येलेना भी चरागाह से आगे निकल गयी। सेम्योन बालू पर चल रहा था और वह भी बालू पर चल रही थी। सेम्योन जहाज़ पर चला गया और रूपवती येलेना भी जहाज़ पर चली गयी।

इसी वक़्त सेम्योन के भाइयों ने झटपट जहाज़ की सीढ़ी ऊपर उठा ली, जहाज़ को मोड़ा और नीले सागर में बढ़ चले।

सेम्योन ने सींगी बजानी बन्द कर दी। रूपवती येलेना अब चौंकी, उसने सभी ओर दृष्टि दौड़ाई, हर तरफ़ था सागर-महासागर महान और बहुत दूर था द्वीप बुयान। रूपवती येलेना सनोबर के फ़र्श से टकरायी, आसमानी रंग का सितारा बनकर आकाश में उड़ गयी और दूसरे सितारों के बीच खो गयी। सेम्योन-ज्योतिषी झटपट सामने आया, उसने आकाश में चमकनेवाले सभी सितारे गिन लिये और एक नया सितारा ढूंढ़ निकाला। सेम्योन-तीरंदाज़ ने इस सितारे पर सोने का तीर छोड़ा। यह सितारा सनोबर के फ़र्श पर आ गिरा और फिर से रूपवती येलेना बन गया।

सबसे छोटे सेम्योन ने कहा:

"राजकुमारी, हमसे दूर नहीं भागो, तुम हमसे कहीं भी छिप नहीं पाओगी। अगर हमारे साथ जाना तुम्हें इतना ही बुरा लगता है तो यही ज़्यादा अच्छा होगा कि हम तुम्हें तुम्हारे घर वापस पहुंचा दें। इसके लिए ज़ार बेशक हमारे सिर काट डाले।" रूपवती येलेना को सबसे छोटे सेम्योन पर रहम आ गया।

"सेम्योन-बजवैये, मैं अपने लिए तुम्हारा सिर नहीं कटने दूंगी। इसके बजाय तो मैं बूढ़े ज़ार के पास जाने को तैयार हूं।"

तो जहाज़ चलता जाता था, चलता जाता था। सबसे छोटा सेम्योन हर वक़्त राजकुमारी के पास ही बना रहता था और रूपवती येलेना की हर वक़्त उस पर नज़र टिकी रहती थी।

दिल का बुरा सेनापति हर चीज ताड़ता था और मन ही मन कोई बुराई सोचता था। ये लोग अपने देश के लगभग निकट पहुंच गये थे, तट दिखाई देने लगे थे। सेनापति ने सेम्योन-बन्धुओं को डेक पर बुलाया और उन्हें मीठी शराब का प्याला पीने को दिया।

"आओ भाइयो, अपने वतन पहुंच जाने के लिए पियें!"

सेम्योन-बन्धुओं ने मीठी शराब पी ली और सभी के सभी डेक पर जहां-तहां मुर्दे जैसी गहरी नींद सो गये। न तो बादल की गरज, न बिजली की कड़क और न मां के प्यार भरे आंसू ही अब उन्हें जगा सकते थे – इस शराब में गहरी नींद की दवाई घुली हुई थी।

सिर्फ़ रूपवती येलेना और छोटे सेम्योन ने ही यह शराब नहीं पी थी।

तो ये अपने देश पहुंच गये। बड़े भाई मुर्दों जैसी नींद सो रहे थे। छोटा सेम्योन रूपवती येलेना को ज़ार के पास ले जाने के लिए तैयार कर रहा था। दोनों रोते-सिसकते थे, अलग होना नहीं चाहते थे। लेकिन करते भी क्या? या तो वचन न दो या फिर उसे पूरा करो।

दुष्ट सेनापति पहले ही ज़ार के पास पहुंच गया और उसके क़दमों पर गिरकर बोला:

"ज़ार-पिता, सबसे छोटा सेम्योन तुम्हारे ख़िलाफ़ दिल में दुश्मनी छिपाये है, तुम्हें मार डालना और राजकुमारी को ख़ुद ले लेना चाहता है। उसे मौत की सज़ा का हुक्म दे दो।"

सबसे छोटा सेम्योन ज्योंही राजकुमारी को लिये हुए ज़ार के पास गया, ज़ार ने राजकुारी को बड़े आदर से अट्टालिका में भेज दिया और सेम्योन को जेल में बन्द करने का हुक्म दिया। सबसे छोटा सेम्योन चिल्लाया:

"मेरे भाइयो, मेरे छः सेम्योन-बन्धुओ, अपने सबसे छोटे भाई की मदद करो!"

सेम्योन-बन्धु बहुत ही गहरी नींद में सो रहे थे।

सबसे छोटे सेम्योन को जेल में डाल दिया गया, लोहे की ज़ंजीरों से जकड़ दिया गया।

सुबह होने पर सबसे छोटे सेम्योन को मौत के घाट उतारने के लिए जेल से बाहर लाया गया। राजकुमारी फूट-फूटकर रो रही थी, आंसुओं के मोती गिरा रही थी। दुष्ट सेनापति खीसें निपोर रहा था।

सबसे छोटे सेम्योन ने ज़ार से कहा :

"निर्दयी ज़ार, पुरानी रीति के मुताबिक़ तुम मरने से पहले मेरी इच्छा तो पूरी कर दो – मुझे आख़िरी बार सींगी बजा लेने दो।"

कमीने सेनापति ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा :

"ज़ार-पिता, इसे ऐसा नहीं करने दो, ऐसा नहीं करने दो!"

लेकिन ज़ार ने जवाब दिया :

"दादों-परदादों की यह रीति तो मैं नहीं तोड़ूंगा। जल्दी से बजाओ सेम्योन अपनी सींगी, मेरे जल्लादों की तलवारों की धार मन्द पड़ गयी है।"

सबसे छोटा सेम्योन छाल की सींगी बजाने लगा।

पर्वतों-घाटियों को लांघता हुआ सींगी का स्वर जहाज़ तक जा पहुंचा। बड़े भाइयों ने भी सुना। वे जागे, चौंके और बोले :

"मतलब यह है कि हमारे सबसे छोटे भाई पर कोई बड़ी मुसीबत आ गयी है!"

सभी भाई भागते हुए ज़ार के महल में जा पहुंचे। जल्लादों ने तेज तलवार हाथों में ली ही थीं, वे सेम्योन की गर्दन काटने ही वाले थे कि अचानक कहीं से बड़े भाई प्रकट हो गये – सेम्योन-बढ़ई, सेम्योन-ज्योतिषी, सेम्योन-हलवाहा, सेम्योन-नाविक, सेम्योन-तीरंदाज़, सेम्योन-लुहार।

सब ने बूढ़े ज़ार को अपनी ताक़त दिखाते और धमकाते हुए कहा :

"हमारे सबसे छोटे भाई को आज़ाद कर दो और रूपवती येलेना भी उसे दे दो।"

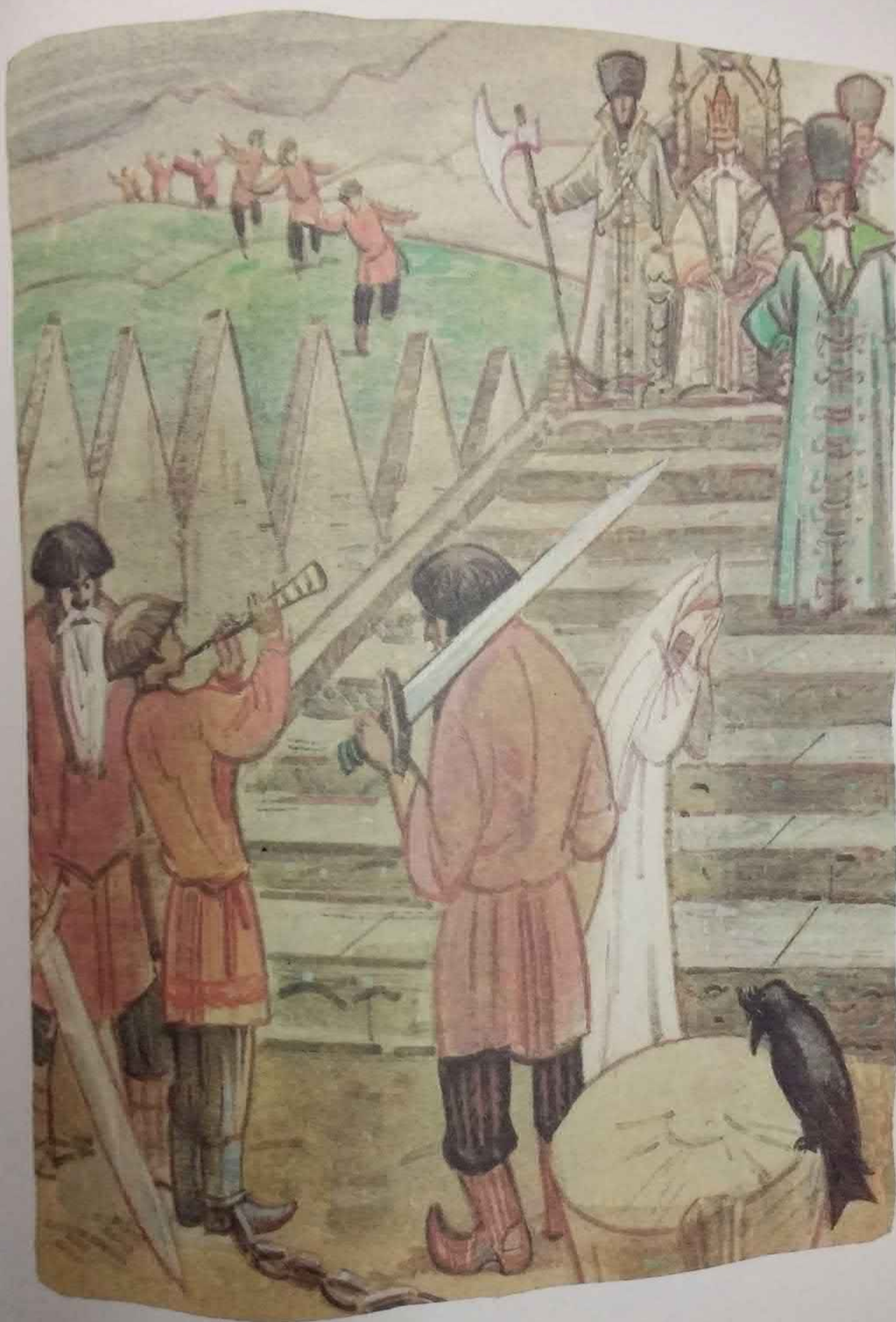
ज़ार डर गया और बोला :

"ले जाइये अपने छोटे भाई और इस राजकुमारी को भी। वह तो मुझे यों भी अच्छी नहीं लगती। फ़ौरन ले जाइये इसे यहां से।"

तो बस, यहां वह दावत हुई कि क्या कहने। ख़ूब पीना-पिलाना, खाना-पीना और गाना-बजाना हुआ। इसके बाद सबसे छोटे सेम्योन ने अपनी सींगी ली और नाच की धुन बजाने लगा।

अब ज़ार नाच रहा था, राजकुमारी नाच रही थी, सामन्त नाच रहे थे, उनकी बीवियां नाच रही थीं। अस्तबलों में घोड़े नाचने लगे, बाड़ों में गउएं नाचनी लगीं। मुर्ग़े-मुर्ग़ियां भी नाच रहे थे।

और सबसे ज़्यादा जोश से तो नाच रहा था सेनापति। वह इतना नाचा, इतना



नाचा कि थककर गिर गया और दुनिया से चल बसा।

शादी का जशन ख़ूब मनाया और फिर सबने अपने को काम में जुटाया। सेम्योन-बढ़ई घर बनाता था, सेम्योन-हलवाहा अनाज उगाता था, सेम्योन-नाविक सागरों में जहाज़ चलाता था, सेम्योन-ज्योतिषी तारों का हिसाब लगाता था, सेम्योन-तीरंदाज़ रूस की सीमाओं को शत्रुओं से बचाता था... मां रूस की धरती पर सभी के लिए काफ़ी काम हैं।

और सबसे छोटा सेम्योन गाने गाता है, सींगी बजाता है, सबका मन बहलाता है और इस तरह सबके काम में हाथ बंटाता है।

